NOT FOR SALE

महालक्ष्मी साधना सिद्धि विशेषांक

अक्टूबर : 98

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

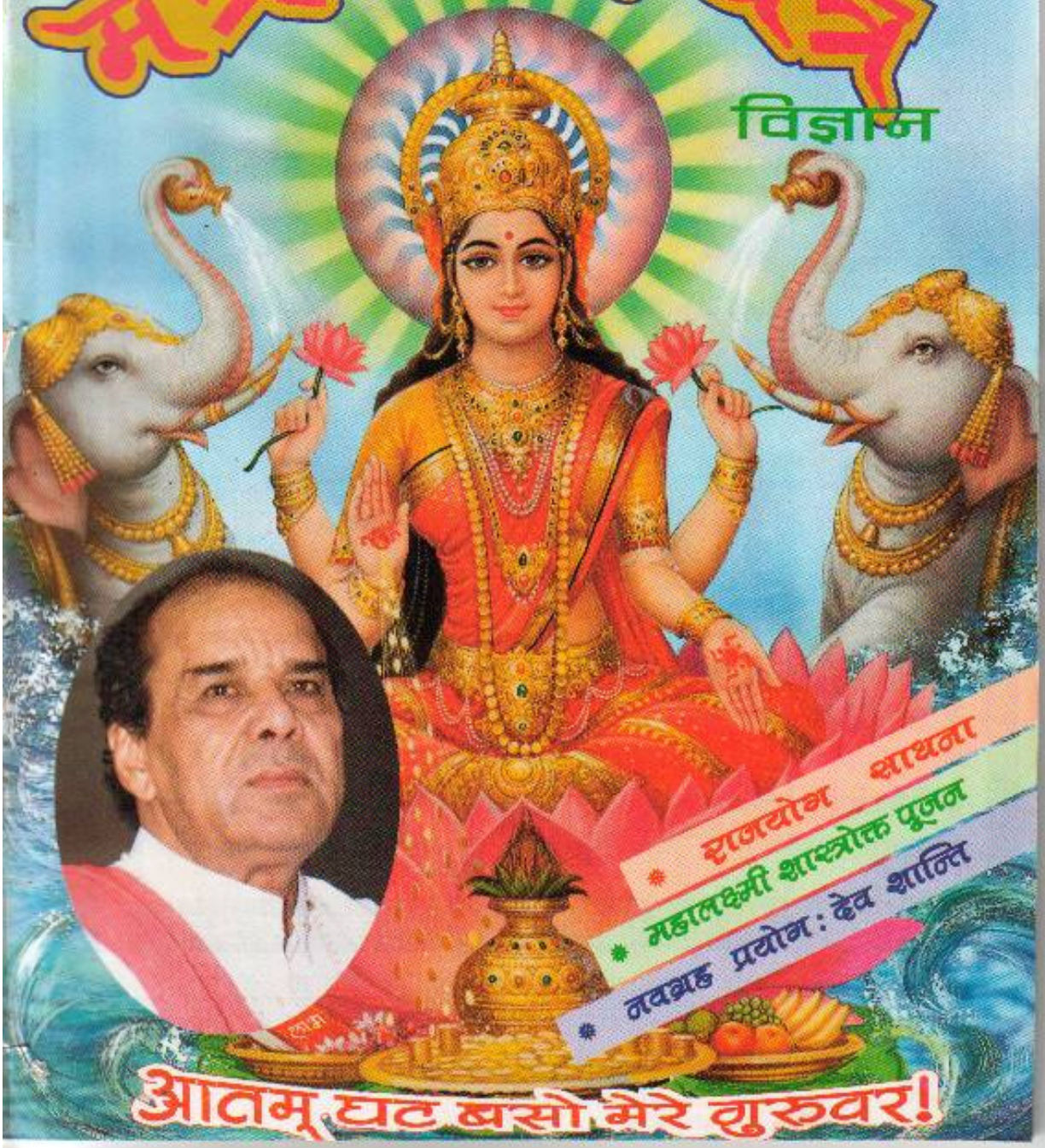

* राजयोग साधना
* महालक्ष्मी शास्त्रोक्त पूजन
* नवग्रह प्रयोग : देव शान्ति

आतम् घट बसो मेरे गुरुवर!

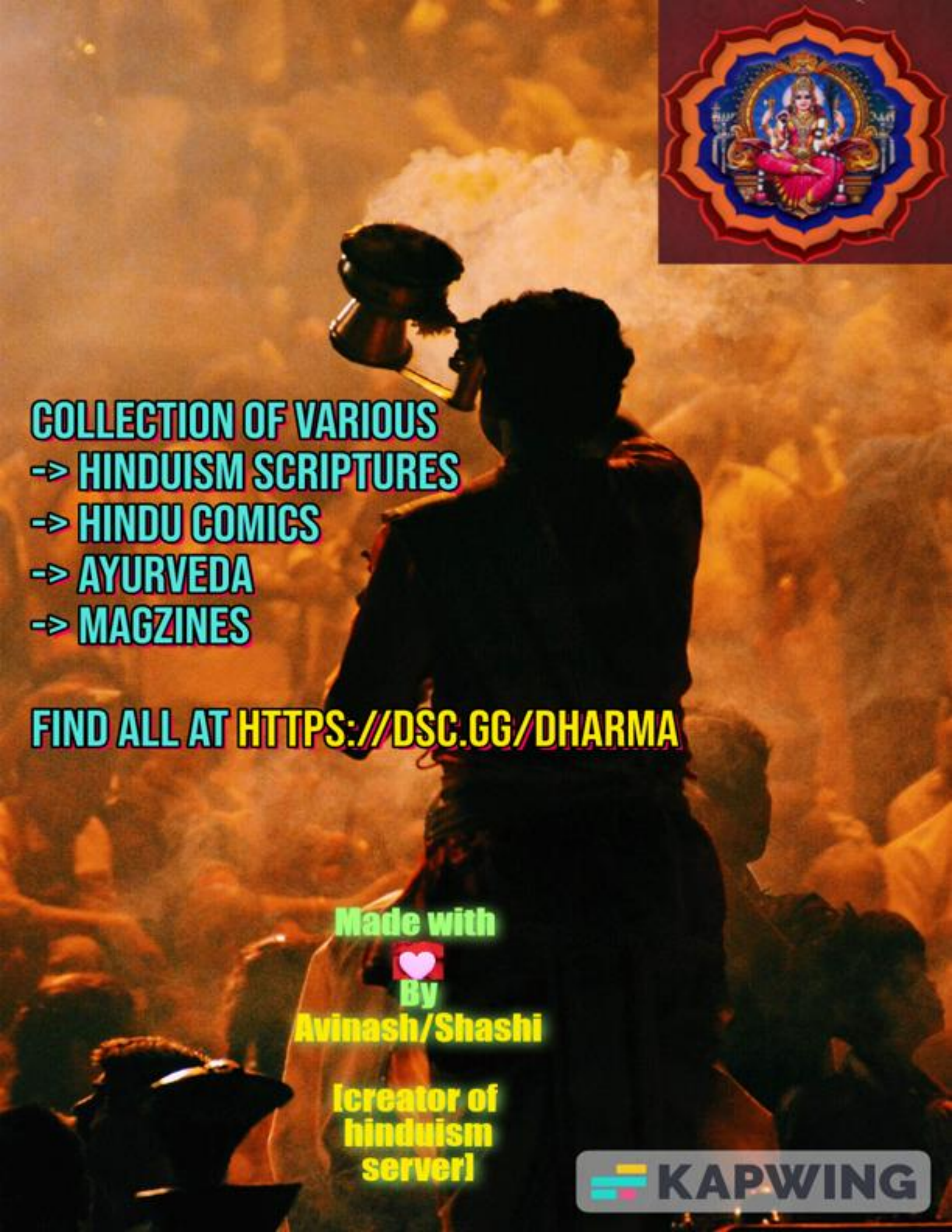
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

सद्गुरुदेव

हर श्वास गुरु के हाथ 3
आत्म घट बसो मेरे गुरुवर 18
गुरु वाणी 42
Guru in my Heart 53
Slake your thirst 55

स्तम्भ

साधक साक्षी हैं 46
पाठकों के पत्र 65
नक्षत्रों की वाणी 66
मैं समय हूं 72
वराहमिहीर 75
इस मास दिल्ली में 81
एक दृष्टि में 84

वर्ष 18 अंक 10
अक्टूबर 1998 पृष्ठ 84

साधना

ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना 12
पुष्पधन्वा प्रयोग 48
राजयोग साधना 39
स्वास्थ्य सरिता 61
गुरु आत्म स्थापन साधना 21
महालक्ष्मी साधना 15
Jyeshtha-laxmi Sadhana 56
Mahalaxmi Sadhana 57
My Invisible Friend 58

पूजन

शास्त्रोक्त महालक्ष्मी पूजन 9

विशेष

हर साधु संन्यासी ... 23
अग्नि परीक्षा 27
शिष्य धर्म 77
जब मेरी दरिद्रता दूर हुई 78

उपन्यासिका

हंसा जाए अकेला 35

दीक्षा

काल ज्ञान दीक्षा 31
Pierce the Time Warp 60

तथ्य

जब विश्वामित्र ने लक्ष्मी ... 25
ब्रह्मज्ञानी नचिकेता 70
अंसुअन जल सींच सींच 44

विवेचना

नक्षत्रों के अधिदेवता 68

चिकित्सा

अर्श रोग : मणि चिकित्सा 63

रिपोर्ताज

अविरल यात्रा जारी है 82

आह्वान

दीपावली 73

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक एवं संयोजक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

सम्पादक मण्डल
डॉ० श्यामल कुमार बनर्जी, श्री राम चैतन्य शास्त्री, श्री वसन्त पाटिल, श्री अनिल जोशी, श्री प्रवीण जोशी, श्री अरविन्द सिंह, श्री गुरु सेवक, श्री रोजन जेम्स, श्री एम. आर. वशिष्ठ

वित्तीय सलाहकार
श्री अरविन्द श्रीमाली

वर्किंग सेक्शन
श्रीमती कनकपाण्डेय
सुश्री विजयलक्ष्मी
श्री प्रसून गौड़
श्री विनोद सहाय

प्रकाशक एवं स्वामित्व
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली
द्वारा
विभा पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
D-160 B, सेक्टर-VII
नोएडा से मुद्रित तथा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर
से प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक शुल्क : 195/-
डाक व्यय : 30/-

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज०) फोन : 0291-432209, टेली फैक्स : 0291-432010
WWW address – http://mantratantrayantravigyan.indianet.org
E-mail address - mtyv21@hotmail.com

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही ये शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

वात्सल्य मूर्तिमतुल प्रथित प्रभावां,
नारायणस्य दयितां जगतां पराम्बाम्।
पद्मानना सरसिजायत पत्र नेत्रां;
पद्माश्रियं भगवतीं श्रियमाश्रयामः॥

जो अत्यंत वात्सल्यमयी हैं, जिनका अतुलित प्रभाव विश्व-विदित है, जो नारायण भगवान की प्रिया हैं। जगदम्बा हैं, जिनके कमल के समान नेत्र हैं, हम उन पद्म श्री भगवती महालक्ष्मी को भावपूर्ण नमन अर्पित करते हैं।

परमारथ ही कीजै

कड़ाके की धूप! उस वर्ष गर्मी कुछ अधिक ही पड़ी थी। बाहर से आया एक यात्री गांव से गुजर रहा था। प्यास से वह आकुल था, लेकिन गांव भर में उसे पानी पीने के लिए एक भी कुआं या तालाब नजर न आया। आगे जाने पर यात्री ने देखा, कि एक पेड़ के नीचे प्याऊ थी। निकट जाने पर यात्री ने देखा, कि एक व्यक्ति वहीं बैठा था, शरीर पर वस्त्र के नाम पर एक धोती भर ही थी। उसने यात्री को जल पिलाया और पेड़ के छाया में दो पल सुस्ता कर तब आगे जाने के लिए कहा।

यात्री ने पूछा – "तुम क्या काम करते हो?"

उसने उत्तर दिया – "हे श्रेष्ठ! मैं तो एक जनपद घासी हूं, सुबह शाम-घास काटता हूं और उसे बेचकर जो पैसा मिल जाता है, उसी से गुजर-बसर करता हूं। उसी कमाई में थोड़ी बहुत बचत करके जो जमा-पूंजी इकट्ठा की थी, उससे यह प्याऊ बनाया है।" वह कहता जा रहा था – "मुझे यह देखकर बहुत तकलीफ होती थी, कि गर्मी में लोग प्यास से बेहाल हो पानी ढूंढते थे और पानी पीने के लिए कोई साधन नहीं था। अतः मैंने और मेरे परिवार ने एक समय भोजन पर रहकर कुछ धन एकत्र किया और यह प्याऊ बनाया, अब मुझे बहुत शान्ति महसूस होती है।

घासी की भोली और निस्वार्थ बातें सुनकर यात्री द्रवित हो गया। उसने सोचा, कि जब यह निर्धन घासी जिसके पास सम्पत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं है, वह एक समय भूखे रहकर भी आने-जाने वालों की सुविधा के लिए सोचता है, लोक कल्याण के लिए सोचता है, फिर उसकी अपेक्षा मेरे पास तो काफी सम्पत्ति है, धन है; फिर मैं क्यों नहीं घासी जैसा सोचता हूं।

यात्री ने एक ठोस निर्णय लिया, कि अब मैं अपना जीवन, धन, सम्पत्ति परमारथ में ही लगाऊंगा।

यही यात्री आगे चलकर 'भानुभक्त' के नाम से नेपाल देश में बहुत प्रसिद्ध विद्वान हुआ। *ज्ञान चेतना जाग्रत होने के लिए एक क्षणांश ही पर्याप्त है, जहां बात सीधे हृदय में बैठ गई, वहीं जीवन परिवर्तित हो जाता है।*

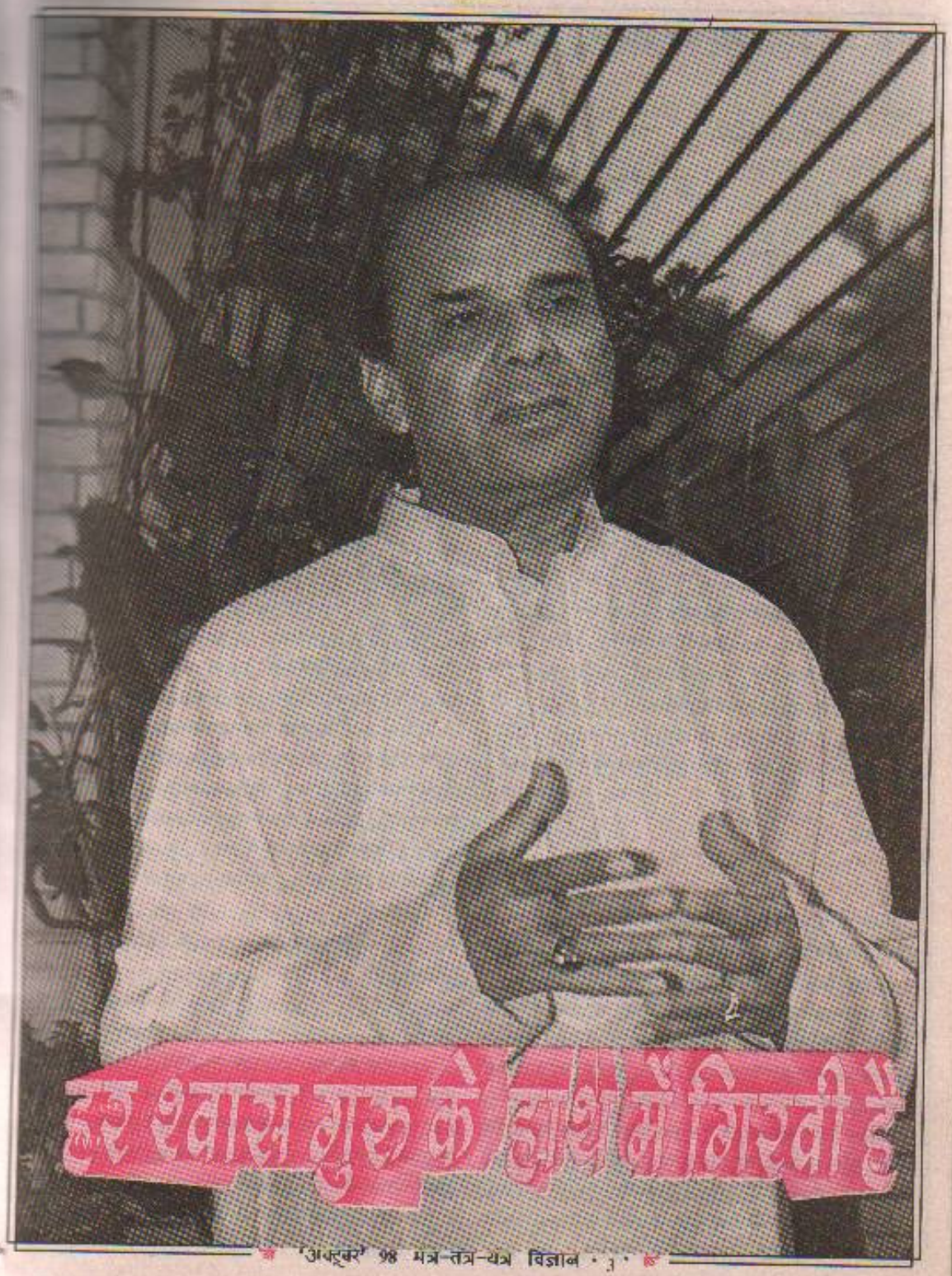
हर श्वास गुरु के हाथ में गिरवी है

गुरु साक्षात् प्राण स्वरूप ही होते हैं, जो इस चराचर में अनादि काल से उपस्थित हैं और उपस्थित रहेंगे।

किन्तु श्वास-प्रश्वास की डोर भी तब तक अधूरी है, जब तक कि उस श्वास-प्रश्वास में एक उच्छ्वास नहीं है।

एकतीर्थ उच्छ्वास ही तो परस्पर सम्बन्धों का मूल होता है।

भारतीय शास्त्रों में वायु को केवल कुछ गैसों का संघटन ही नहीं कहा गया है, अपितु उसे साक्षात् 'प्राण' की संज्ञा दी गई है, जो न केवल इस धरा पर अपितु समस्त ब्रह्माण्ड में विस्तारित है और ऐसे 'प्राण' से तादात्म्य स्थापित करना ही परम ध्येय बताया गया है। राजयोग की सम्पूर्ण धारणा ही इस तथ्य से निकली है और प्राणायाम की क्रिया भी इसका ही एक व्यावहारिक पक्ष मात्र है। प्राणायाम अपने आप में सम्पूर्ण क्रिया नहीं है, स्वामी विवेकानन्द ने भी अपनी पुस्तक '**राजयोग**' में स्पष्ट कहा है, कि प्राणायाम का तात्पर्य केवल श्वासों-प्रश्वासों का एक नियंत्रण भर नहीं है। सम्भव है, कि स्वामी विवेकानन्द कुछ वर्ष और जीवित रहते तो इस बात को और अधिक प्रखरता से स्पष्ट करते, किन्तु कदाचित् वे पता नहीं कैसे दूर जान थे, कि इस प्रकार के व्यक्ति कुछ वर्षों के लिए ही इस धरा पर आते हैं और सूत्र रूप में अपना ज्ञान देकर विदा हो जाते हैं। शायद महापुरुष ऐसा ही करते हैं। वे सूत्र रूप में ही अपना ज्ञान देकर काल गुरुत्व में विलीन हो जाते हैं और ऐसा वे इस कारणवश करते हैं, क्योंकि उनके समक्ष ज्ञान की चेतना को विस्तारित करने के लिए एक विस्तृत फलक होता है, व्याख्या के लिए उनके पास अवकाश ही नहीं होता।

. . . किन्तु स्वामी विवेकानन्द जाते जाते भी हमारे लिए यह चेतना इस वाक्य के रूप में इस प्रकार से छोड़ गए, जिससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, कि वे साधनाओं के क्रम से गुजरते हुए भी साधनाओं से परे जाने की कोई धारणा प्रस्तुत करने को आतुर थे। मैं नहीं जानता, कि वे इस सूत्र की व्याख्या अपनी विशिष्ट और मर्मस्पर्शी शैली में किस प्रकार करते किन्तु इस बात का आभास होता है, कि नियमों-संयमों से भी परे जो एक सत्ता होती है, जिसे अखण्ड आनन्द की सत्ता कहा जा सकता है, वे उसी में स्वयं को समाहित कर देने का संदेश छोड़ गए। किन्तु अखण्ड आनन्द की रक्षा एक अमूर्त स्थिति होती है और उसकी कल्पना सहज नहीं की जा सकती तथा जो उस स्थिति तक पहुंच गए वे इतने विभोर हो गए, कि फिर उनको उस महास्थिति से च्युत होकर तथा वापस आकर उसे बताने की स्पृहा ही नहीं रह गई . . . और यहीं फिर सद्गुरु की महिमा स्वयमेव प्रकाशित हो उठती है।

यही सिद्ध साधक व सद्गुरु में प्रमुख भेद है, कि जहां साधक आनन्द को प्राप्त करने के बाद उसे फिर व्याख्यित नहीं करना चाहता या वस्तुतः कर ही नहीं पाता, वहीं सद्गुरु युग की स्थिति के अनुरूप अपने सहज आनन्द को त्याग कर के, व्याख्यित करने के लिए विशिष्ट स्वरूप में समक्ष आते हैं। वह स्वरूप उनका महात्मा बुद्ध का भी हो सकता है, भगवतपाद् आद्यशंकराचार्य का भी हो सकता है अथवा वर्तमान युग में किसी गृहस्थ का भी हो सकता है। यह तो व्यक्ति की चेतना है, कि वह किस प्रकार से आवरणों को चीर कर 'गुरु' का साक्षात् कर ले। ऐसा नहीं कहा जा सकता, कि ऐसे महा व्यक्तित्व तो माया का आवरण डालते रहते हैं। एक विराट लक्ष्य के प्रति समर्पित ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्वों के पास माया का विस्तार करने की भावभूमि होती ही नहीं। हां व्यक्ति के ही मन के द्वन्द्व, अन्तर्द्वन्द्व उसके समक्ष माया बनकर उपस्थित हो जाएं, तो वह एक अलग बात है।

इसी कारणवश शास्त्रों में सद्गुरु को न केवल पथ प्रदर्शक अपितु साक्षात् ईश्वर की ही संज्ञा दी गई है। वे स्वयं अपने परम ब्रह्मानन्द का उपयोग तो लोकहित में करते ही हैं साथ ही स्वयं इस प्रकार के आनन्द को अपने व्यक्तित्व में घनीभूत करके आनन्द की अमूर्त धारणा को एक मूर्त स्वरूप प्रदान करने की क्रिया भी करते हैं। यह सहज क्रिया नहीं होती अपितु उस दीपक की भांति होती

है, जो स्वयं तिल-तिल जलकर प्रकाश का विस्तार करता है। ऐसे व्यक्तित्व स्वयं प्रायः मितभाषिता रखते हुए भी अपने आचरण से वह सब कुछ स्पष्ट करते जाते हैं, जो कि व्यक्ति को ज्ञात करना होता है।

अतः इसी कारणवश यदि कोई गुरु को पहचानने की बात करें, तो वहां तात्पर्य उसे चर्म चक्षुओं से पहचानने का नहीं होता वरन् अपने आत्म चक्षुओं से पहचानने का ही होता है। जो व्यक्ति अपने पूर्वजन्म के किन्हीं संस्कारों से पुष्ट होते हैं, वे सहज ही ऐसे व्यक्तित्व के सम्पर्क में आते ही पहचान लेते हैं अन्यथा शेष को सद्गुरु अपनी दीक्षा के माध्यम से ऐसी क्षमता प्रदान करते हैं। फिर भी **सद्गुरु को लौकिक अर्थों में पहचाना ही नहीं जा सकता, क्योंकि वे लौकिक स्वरूप में समाज के अन्य व्यक्ति से भी अधिक सामाजिक स्वरूप में रहते हैं, क्योंकि उन्हें समाज के एक विशालअंग से संव्यवहार कर उसमें परिवर्तन लाने का कार्य करना है।**

यद्यपि गुरु-शिष्य का सम्बन्ध बाह्य जगत का सम्बन्ध होता ही नहीं, वह तो पूर्ण रूपेण अन्तर्जगत की विषय वस्तु होती है। गुरुदेव क्रमशः अपनी ही क्रियाओं से न केवल शिष्य को अपने समक्ष उपस्थित होने को बाध्य करते हैं अपितु इसी मध्य में वे उसके चित्त में प्रकाश बनकर स्थापित होते जाते हैं। *सद्गुरु का दैहिक स्वरूप भी धन्य होता है, हमारी श्रद्धा और पूजन का केन्द्र होता है, किन्तु सद्गुरु अपना परिचय मात्र यहीं तक सीमित करने को आतुर नहीं होते, अपितु इससे भी आगे जीवात्मा तक अपनी गति को ले जाते हैं और जीवात्मा तो केवल निर्मल प्रकाश स्वरूप ही होती है। जो शिष्य सद्गुरु का इस रूप में परिचय प्राप्त कर लेता है वह मुखर हो जाता है, क्योंकि फिर वह निरंतर अपने गुरु को अपने अंदर ही अनुभव करने लगता है और उसकी एक-एक क्रिया स्वयमेव गुरु को समर्पित होती चली जाती है* और फिर गुरु उसके समीप हों या नहीं उसे एकाकीपन का बोध शेष नहीं रह जाता। श्वासों की कोई डोर दोनों को एक अटूट बंधन में बांध जो देती है।

जब गुरु किसी की श्वास-प्रश्वास में ही स्थापित हो जाए तभी शिष्य की धन्यता होती है, इसके पूर्व के अन्य सभी क्रिया कलाप तो मानों इस स्तर तक आने का पूर्वाभ्यास मात्र ही होते हैं। इसके अतिरिक्त जीव अपने को गुरु तत्व से जोड़ भी किस तरह से सकता है?

[illegible]

किन्तु श्वास-प्रश्वास की डोर भी तब तक आधूरी है जब तक कि उस श्वास-प्रश्वास में एक उच्छ्वास नहीं है। उच्छ्वास, एक दीर्घ निःश्वास ही तो परस्पर सम्बन्धों का मूल होता है। **उच्छ्वास उसी व्यक्ति के प्रति तो उद्भूत हो सकती है, जो रोम-रोम में समाहित हो चुका हो, जो नेत्रों में बिम्ब बनकर तैरने लग गया हो और यही 'प्रेम' की स्थिति कही गई है। यह प्रेम शिष्य को सब कुछ प्राप्त हो जाने के बाद भी एक विरहाग्नि के रूप में प्रज्वलित होती रहती है, जो उसे यह कहती है कि अब यह श्वास-प्रश्वास का बंधन भी समाप्त हो और मैं अंतिम रूप से उस परम तत्व में जाकर समाहित हो जाऊं, जो एक पल मुझे कभी गुरु रूप में दृष्टिगोचर हुआ था।**

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अध्यात्म के क्षेत्र में जाकर भावनाओं की समाप्ति नहीं करनी होती, अपितु सभी भावनाओं को एकत्र कर उन्हें अपने इष्ट को समर्पित कर देना होता है, जिससे कि पूर्णत्व की दशा उपलब्ध हो जाती है।

और गुरु ऐसी प्रत्येक उच्छ्वास का हिसाब अपने पास रखते ही हैं। हृदय से उपजी एक-एक उच्छ्वासें सहस्रों पुरश्चरणों का कार्य करती जाती हैं बशर्ते उच्छ्वास सहज हो, आत्मीय हो, प्राणों को मथ कर निकली हो। भक्तिपूर्ण आर्द्रा का, विरह-वेदना का इस मार्ग में कोई अर्थ नहीं और प्रदर्शन तो सर्वथा निन्दनीय वस्तु मानी गई है। उच्छ्वास तो उस धान की फसल की भांति होती है, जो पकने पर अपनी सोंधी गंध चारों ओर फैलाना प्रारम्भ कर देती है और कृषक उसे पहचान कर तथा काटकर अपने खलिहान में सुरक्षित कर लेता है।

गुरु तो एक ऐसा सर्व-सम्पन्न व्यक्तित्व होता है, जिसे शिष्य रूपी दरिद्र दे भी क्या सकता है? वह तो केवल अपने उच्छ्वास को गुरु के पास गिरवी रखकर आनन्द रूपी धन प्राप्त कर सकता है और ब्याज के रूप में गुरु केवल प्रेम ही चाहता है। शिष्य की इतनी भी सामर्थ्य नहीं होती, कि वह अपनी 'गिरवी' को छुड़ा भी सके। उसी से कालांतर में वह गिरवी गुरु की पूंजी बन जाती है। गुरु ऐसी ही 'पूंजी' के आतुर होते हैं, वे अपने भण्डार में केवल प्रेम पूंजी ही रखते हैं।

जो शिष्य आनन्द रूपी धन प्राप्त कर लेता है फिर वही गुरु को पहचानने का भी सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। उच्छ्वास की स्थिति आ जाने पर ही विषय विकार समाप्त हो पाते हैं और चित्त निर्मलता की ओर बढ़ता है। उच्छ्वास की स्थिति आ जाने पर ही चित्त शान्त होता है और शिष्य के अंदर जो आपाधापी चल रही होती है, वह समाप्त होने लगती है और तब शिष्य को इतनी भी आवश्यकता नहीं रह जाती, कि वह अपने होठों से गुरु से कोई निवेदन करे। जो स्वयं उच्छ्वास के माध्यम से प्राण स्वरूप बनता हुआ अग्रसर हो, उसे सर्वत्र उसी 'प्राण तत्व' का ही बोध तो होगा, जो साक्षात् गुरु का ही वास्तविक एवं विराट् स्वरूप है। ऐसे शिष्य के लिए ही फिर भौतिक दूरी कोई अर्थ नहीं रखती और यही स्थिति कण-कण में भगवान को पहचानने की भी होती है। ऐसा ही शिष्य सही अर्थों में ऊर्ध्व गति प्राप्त करता हुआ जीवनमुक्त होने की क्रिया आरंभ कर देता है और ऐसे ही शिष्यों से यह धरा धन्य होती है।

जो स्वयं उच्छ्वास के माध्यम से प्राण स्वरूप बनता हुआ अग्रसर हो, उसे सर्वत्र उसी 'प्राण तत्व' का ही बोध तो होगा, जो साक्षात् गुरु का ही वास्तविक एवं विराट् स्वरूप है। ऐसे शिष्य के लिए ही फिर भौतिक दूरी कोई अर्थ नहीं रखती और यही स्थिति कण-कण में भगवान को पहचानने की भी होती है। ऐसा ही शिष्य सही अर्थों में ऊर्ध्व गति प्राप्त करता हुआ जीवनमुक्त होने की क्रिया आरंभ कर देता है और ऐसे ही शिष्यों से यह धरा धन्य होती है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने स्पष्ट कहा, कि—

"तुम्हारे हृदय का कमल मेरी ही ऊष्मा से विकसित होता है, तुम्हारे श्वास-प्रश्वासों में मेरी ही सुगंध विस्तारित होती है, तुम्हारी धमनियों में मेरा ही रक्त दौड़ रहा है। अंतर केवल इतना है, कि तुम्हारा हृदय धड़कना भूल गया है, किन्तु चिंता की कोई बात नहीं। तुम जब मेरे पास आओगे तब मैं उसे पुनः धड़कने की कला सिखा दूंगा।"

इससे अधिक प्रभाव पूर्ण शब्दों में किस प्रकार कहा जा सकता है या कि कौन गुरु इस प्रकार से अपने शिष्यों को आवाहित करेगा ? वर्तमान युग परिस्थिति में समाज के दूषित वातावरण के कारण हमारे चर्म चक्षुओं में इतनी क्षमता नहीं है, कि हम गुरु को उसके बाह्य स्वरूप से पहचान सकें और न ही हमें आत्म चक्षुओं की शक्ति प्राप्त है, न तो उसमें वह क्षमता है, कि हम गुरु को पहचान सकें, किन्तु गुरु के शब्द ही गुरु की पहचान करा जाते हैं। जिस प्रकार से प्राण को साक्षात् ब्रह्म ही कहा गया है उसी प्रकार से शब्द भी ब्रह्म स्वरूप ही होते हैं। जीवन की आपाधापी तो कभी स्वतः अवकाश देगी नहीं, कि हम गुरु के शब्दों को सुनकर आत्मसात् कर सकें,

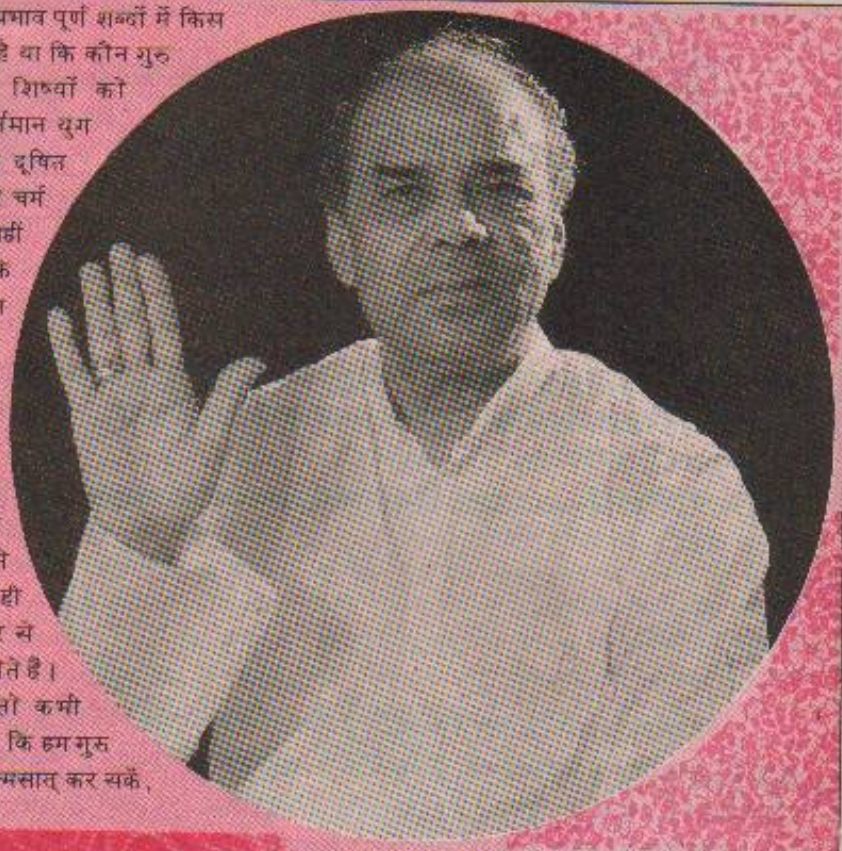

"तुम्हारे हृदय का कमल मेरी ही ऊष्मा से विकसित होता है, तुम्हारे श्वास-प्रश्वासों में मेरी ही सुगंध विस्तारित होती है, तुम्हारी धमनियों में मेरा ही रक्त दौड़ रहा है। अंतर केवल इतना है, कि तुम्हारा हृदय धड़कना भूल गया है, किन्तु चिंता की कोई बात नहीं! तुम जब मेरे पास आओगे तब मैं उसे पुनः धड़कने की कला सिखा दूंगा।"

–गुरुदेव

उसके लिए सप्रयास अवकाश निकालना होगा और गुरु के शब्दों का श्रवण करना ही होगा चाहे वे ध्वनित रूप में हों या साक्षात् गुरु चरणों में बैठकर सुने जाएं। समाज को तो बाद में वेदना होती है, कि हम समय पर ऐसे व्यक्तित्व को पहचान न सके, किन्तु गुरु वेदना के साथ यह प्रसन्नता लेकर जाते हैं, कि सारे समाज ने नहीं तो उनमें से कुछ शिष्यों ने तो मेरी बात को समझा और वे ही आगे ज्ञान चेतना का माध्यम बनेंगे। लेकिन ये शिष्य लक्ष-लक्ष होते तो गुरु को वेदना नहीं अपितु पूर्ण प्रसन्नता होती।

सद्गुरु तो आते ही हैं, कहीं भी अचानक आ सकते हैं, परन्तु तैयार तो निश्चित रूप से शिष्य को ही रहना पड़ेगा अन्यथा उनका आना व्यर्थ हो जाएगा।

संत कबीर ने कितनी सरल और सटीक बात कह दी है, कि –

मानसरोवर आए के हंसा मत जाओ रे बिचारा
ऐसी सरवर में जमिर सनरिया तो जपत हुवा प्रकासा

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

वार्षिक सदस्यता शुल्क –
195/- ; डाक खर्च अतिरिक्त 30/
Annual Subscription 195/-
+ 30/- postage

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की वार्षिक सदस्यता

Special 8 page English supplement each month

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

आरोग्य माला

जिसको धारण करने मात्र से ही शरीर में व्याप्त व्याधियां तथा रोगों का समूल नाश होना प्रारंभ हो जाता है। आज प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी छोटी–बड़ी बीमारी से ग्रस्त है, उन सभी के लिए यह माला एक वरदान है। माला के प्रभाव से मन एवं शरीर में एक उमंग, एक ऊर्जा का स्रोत फूट पड़ता है।

नित्य प्रातः स्नान करने के पश्चात् इस माला को पूजा स्थान में सामने रखकर धूप, दीप, कुंकुम, अक्षत चढ़ाकर गले में धारण कर लें। रात्रि को सोते समय माला उतार कर पूजा स्थान में रख दें। ढाई माह पश्चात् माला को जल में प्रवाहित कर दें।

Subscribe to the spiritual magazine in hindi, Mantra-Tantra-Yantra Vigyan and lay your hands on wonderful solutions to all problems in life. And more than this get a Mantra-energised AAROGYA MALA (a special rosary) which shall free you of all diseases and tensions within 75 days after you put it around your neck. After 2½ months the rosary has to be thrown into a river.

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेजदें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send the relevant post card to us at :–

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – 342001, (राज.)

फोन – 0291-432209, टेली फैक्स : 0291-432010

MANTRA-TANTRA-YANTRA VIGYAN, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur - 342 001, (Raj.) Phone: 0291-432209, Fax : 0291-432010

शास्त्रोक्त महालक्ष्मी पूजन

अष्ट लक्ष्मी का सम्पूर्ण पूजन जिसे दीपावली के दिन सम्पन्न करना अपने लिए ही सौभाग्य के द्वार खोलने जैसा है . . .

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दीपावली का आगमन हो रहा है, पहले की अपेक्षा अब समाज में एक बहुत बड़े परिवर्तन का क्रम प्रारम्भ हो चुका है। पहले जो व्यक्ति दीपावली पर्व को आमोद-प्रमोद में ही व्यतीत कर देता था, वहाँ अब वह इस पर्व विशेष के आध्यात्मिक महत्व को, वास्तविक महत्व को भी समझने लगा है, फलतः लोग साधनाओं के माध्यम से दिव्य शक्तियों के द्वारा स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने लगे हैं।

परम पूज्य सद्गुरुदेव ने अपने जीवन के पल-प्रतिपल को जिस उद्देश्य से इस धरा के लिए न्यौछावर किया है, उसका सुफल आज हम सभी शिष्य -शिष्याओं को प्राप्त हो रहा है। सद्गुरुदेव अब पूर्ण रूपेण ब्रह्माण्ड में अवस्थित होकर अपने द्वारा लगाए गए बीजों को पौधा बनते हुए तथा पौधों को सशक्त वट वृक्ष बनने की क्रिया की ओर अग्रसर होते हुए देखने के लिए उत्सुक हैं।

अब हमारा यह दायित्व है, कि पूज्य सद्गुरुदेव की इस अभीप्सा को पूर्ण करने के लिए प्रयासरत हों, पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी, श्री कैलाश चन्द्र जी एवं श्री अरविन्द श्रीमाली जी के निर्देशन में।

इन लोगों ने अपने दायित्व का निर्वाह करना प्रारम्भ कर दिया है, तभी तो इस बार दीपावली पर्व पर हम सभी लोगों के लिए इस भव्य पूजन क्रम को सार्वजनीन किया गया है।

यह **'अष्टलक्ष्मी'** का वह दिव्य पूजन क्रम है, जिसके अनुसार किया गया पूजन शीघ्र फलप्रद होता ही है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह पूजन क्रम निर्धारित सिद्ध मुहूर्त में सम्पन्न करना ही है।

यह पूजन क्रम वह प्रत्येक व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, जिसके पास **'अष्ट लक्ष्मी साधना'** से सम्बन्धित साधना पैकेट हो या नहीं हो। जिनके पास साधना पैकेट नहीं है, वे उस सामग्री से सम्बन्धित मंत्र बोलते हुए एक सुपारी पर मौली (रक्षा सूत्र) बांध कर स्थापित करें।

पूजन सामग्री — अबीर, गुलाल, मौली, जनेऊ, कुंकुम, अक्षत, नारियल, पुष्प, पुष्प माला, प्रसाद, पंचामृत, फल, लौंग, इलायची, सुपारी, गंगाजल, प्रसाद तथा साधना पैकेट (**अष्ट लक्ष्मी यंत्र, विधात्री, सुमेधा, कल्पान्तिका, वैजयन्ती, गोमती चक्र, सिद्धि चक्र, क्षीरोदभवा, तथा ऋज।**)

पूजन क्रम —

पूजन आरम्भ करने से पूर्व स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र पहनें, गुरु पीताम्बर ओढ़ें, पूजा कक्ष में पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके पीले अथवा सफेद आसन पर बैठें। सामने चौकी (बाजोट) पर श्वेत या लाल वस्त्र बिछा लें। एक थाली लेकर उसमें कुंकुम से दो स्वस्तिक बना लें, उसपर गणपति और अष्ट लक्ष्मी यंत्र या लक्ष्मी चित्र को भी स्थापित कर दें।

पवित्रीकरण

पंचपात्र में जल रखें, फिर शुद्धि के लिए शरीर पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र से पवित्रीकरण करें —

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

आचमन

आचमनी से तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुए जल पी लें —

ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः।

फिर हाथ धो लीजिए।

संकल्प

दायें हाथ में जल लें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें —

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽन्हि द्वितीय परार्द्धे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कार्तिकमासे अमावस्या तिथौ सोमवासरे अमुकगोत्रो (गोत्र बोलें) अमुकशर्माऽहं (नाम बोलें) स्थिरलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं श्री महालक्ष्मी प्राप्त्यर्थं सर्वारिष्ट निवृत्ति पूर्वक व्यापारे लाभार्थं च महा लक्ष्मी पूजनं करिष्ये। (जल भूमि पर छोड़ें)

गणपति पूजन

शुद्ध घी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाकर अपनी दाहिनी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

ओर स्थापित करें। बायीं ओर तेल का अखण्ड दीपक जलाएं जो रात भर जलता रहे, पहले गणपति पूजन करें। किसी दूसरे पात्र में गणपति को स्थापित कर शुद्ध जल से स्नान कराएं, फिर पंचामृत से स्नान कराकर गंगाजल से स्नान करा दें और पोछ लें। फिर पहली वाली थाली जिसमें स्वस्तिक बना है उसमें स्थापित करें।

'ॐ गणेशाय नमः' इस मंत्र को पढ़ते हुए कुंकुम या केशर से गणपति को तिलक करें अक्षत व पुष्प चढ़ावें। धूप-दीप दिखाकर नैवेद्य अर्पित करें। इसके बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

गजाननं भूत गणाधिसेवितं,
कपित्थजम्बू फल चारु भक्षणं।
उमा सुतं शोक विनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

गुरु पूजन

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरु देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

'स्नानं, वस्त्रं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि नमः'

दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करें –

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

कलश स्थापन

इसके बाद अपनी दायीं ओर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर कलश को जल से भर कर स्वस्तिक के ऊपर स्थापित कर दें। उसमें गंगा जल डालकर सभी तीर्थों का आह्वान करें –

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।

अक्षत तथा कुंकुम कलश के अन्दर डालें, एक सुपारी डालें **'ॐ वरुणाय नमः'** मंत्र पढ़कर कलश के ऊपर मौली बांधें, कलश के चारों ओर एक-एक तिलक लगाएं और निम्न मंत्र पढ़ें –

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः, दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः, पश्चिमे सामवेदाय नमः, उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

इसके बाद पांच आम के पत्ते कलश में डालकर नारियल को कलश के ऊपर स्थापित करें तथा निम्न क्रम बोलें –

प्रसन्नोभव। वरदोभव। अनेन पूजनेन भगवान् वरुण देवता प्रियतां न मम।

लक्ष्मी ध्यान

दोनों हाथ जोड़ कर लक्ष्मी का ध्यान करें –

वन्दे लक्ष्मीं परं शिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां,
तेजो रूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीं।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानां;
आद्यां शक्तिं सकल जननीं विष्णुवामाङ्क संस्थाम्॥

जो परमोत्कृष्ट, कल्याणमयी, शुद्ध स्वर्ण जैसी आभावाली, तेज स्वरूपा, सुनहले वस्त्र धारण करने वाली, समस्त आभूषणों से सुशोभित अंगों वाली, हाथों में बिजौरा नीबू, स्वर्णघट और स्वर्ण कमल धारण करने वाली, समस्त जीवों की माता तथा भगवान विष्णु के वामाङ्ग में स्थित रहने वाली हैं, उन आद्या शक्ति भगवती महालक्ष्मी को मैं वन्दना करता हूं।

जिनके पास **अष्ट लक्ष्मी यंत्र** है वे यंत्र को तथा जिनके पास नहीं है वे लक्ष्मी चित्र को पहले शुद्ध जल से स्नान कराते हुए निम्न मंत्र पढ़ें –

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदा जलैः;
स्नापितोऽसि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्व मे।

फिर पंचामृत से (दूध, दही, घी, शहद, चीनी मिलाकर) यंत्र को स्नान कराएं। इसके बाद शुद्ध जल से स्नान करा कर पोछ दें, तथा पहली थाली में स्वस्तिक के ऊपर स्थापित करें। यंत्र पर चंदन, अक्षत, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्पमाला, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करें –

चंदनं समर्पयामि नमः। अक्षतान् समर्पयामि नमः। वस्त्रं समर्पयामि नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः। पुष्पमालां समर्पयामि नमः। धूपं आघ्रापयामि नमः। दीपं दर्शयामि नमः। नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

आचमनी से जल लेकर पांच बार आचमन करावें।

'दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि नमः' दक्षिणा चढ़ावें। दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर यंत्र पर पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।

अष्ट लक्ष्मी स्थापन

धन लक्ष्मी के प्रतीक रूप **'विधात्री'** या सुपारी को यंत्र की दायीं ओर स्थापित करें। उस पर कुंकुम चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

धन लक्ष्मी रूपेण विधातृं स्थापयामि नमः।

यश लक्ष्मी के प्रतीक रूप **'सुमेधा'** या सुपारी को यंत्र की दायीं ओर स्थापित करें। उस पर अक्षत चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

यश लक्ष्मी रूपेण सुमेधा स्थापयामि नमः।

आयु लक्ष्मी के प्रतीक रूप **'कल्पान्तिका'** या सुपारी को यंत्र की दायीं ओर स्थापित करें। उस पर पुष्प चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

आयु लक्ष्मी रूपेण कल्पान्तिकां स्थापयामि नमः।

वाहन लक्ष्मी के लिए **'वैजयन्ती'** या सुपारी को यंत्र की दायीं ओर स्थापित करें, उसपर चन्दन चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

वाहन लक्ष्मी रूपेण वैजयन्तीं स्थापयामि नमः।

स्थिर लक्ष्मी के लिए **'गोमती चक्र'** या सुपारी को यंत्र की बायीं ओर स्थापित कर, कुंकुम चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

स्थिर लक्ष्मी रूपेण जोमती चक्रं स्थापयामि नमः ।

गृह लक्ष्मी हेतु 'सिद्धि चक्र' या सुपारी को यंत्र के बायीं ओर स्थापित करें। उस पर अक्षत चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

गृहलक्ष्मी रूपेण सिद्धि चक्रं स्थापयामि नमः ।

संतान लक्ष्मी के प्रतीक रूप 'क्षीरोदभवा' या सुपारी को यंत्र के बायीं ओर स्थापित करें। उस पर पुष्प चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

संतान लक्ष्मी रूपेण क्षीरोद्भवां स्थापयामि नमः ।

भवन लक्ष्मी के प्रतीक रूप 'ऋज' या सुपारी को यंत्र के बायीं ओर स्थापित करें। उस पर चन्दन चढ़ाते हुए तीन बार निम्न मंत्र बोलें –

भवन लक्ष्मी रूपेण ऋजं स्थापयामि नमः ।

अष्ट लक्ष्मी के स्थापन के बाद बिना माला के निम्न मंत्र का आधे घण्टे मंत्र जप करें –

॥ ऐं ह्रीं श्रीं अष्टलक्ष्म्यै ह्रीं सिद्धयै नमः ॥

Ayeim Hreem Shreem Ashta-lakshmyei Hreem Siddhayei Namah

मंत्र जप के बाद भगवती लक्ष्मी की आरती करें और पंचामृत, फल, नारियल प्रसादादि सभी को वितरित करें।

पूरी रात्रि सभी सामग्री को पूजा स्थान में रहने दें। दीपक भी पूरी रात जलता रहे। दूसरे दिन प्रातः पूजन करके सभी सामग्री को नदी में या समुद्र में विसर्जित कर दें। '**अष्टलक्ष्मी यंत्र**' को सवा माह तक घर में स्थापित रखें, फिर उसे भी नदी में विसर्जित करें तथा दीपावली के बाद भी सवा माह तक प्रति दिन उपरोक्त मंत्र का अष्ट महालक्ष्मी यंत्र के सम्मुख दस मिनट मंत्र जप करते रहें।

महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता मइया जय लक्ष्मी माता,
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता। ॐ जय...
उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता,
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता। ॐ जय...
दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पत्ति दाता,
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी भव निधि की त्राता। ॐ जय...
तुम पाताल निवासिनि तुम ही शुभ दाता,
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी भव निधि की त्राता। ॐ जय...
जिस घर में तुम रहती तहं सब सद्गुण आता,
सब सम्भव हो जाता मन नहिं घबराता। ॐ जय...
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरो दधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता। ॐ जय...
महालक्ष्मी जी की आरति जो कोई नर गाता,
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता। ॐ जय...

धन त्रयोदशी

दीपावली के दो दिन पूर्व धन त्रयोदशी (**17.10.98**) का साधनात्मक दृष्टि से विशेष महत्व होता है। साधकों के लाभार्थ कुछ लघु परन्तु प्रभावकारी प्रयोग दिए जा रहे हैं। इन प्रयोगों में किसी विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं है, अतः कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इन्हें सम्पन्न करता है, तो उस पर लक्ष्मी एवं सरस्वती की कृपा बनी रहती है।

बही खाता पूजन – नई बही खाता लेकर कुंकुम से स्वस्तिक चिन्ह बनावें, उसके चारों दिशाओं में '**श्री सरस्वत्यै नमः**' लिखें। इसके बाद निम्न मंत्र से सरस्वती का आह्वान करें –

सरस्वती महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा । आवाहयाम्यहं देवि! सर्व कामार्थ सिद्धये ॥

फिर **ॐ भूर्भुवः सरस्वत्यै नमः** कहते हुए अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य समर्पित करें।

लेखनी पूजन –नई लेखनी लेकर उसे किसी पात्र में रखें। फिर '**ॐ चित्र लेखन्यै नमः**' कहकर पूजन करें और प्रार्थना करें –

लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना । लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम् ॥

तुला पूजन –तुला को किसी थाली में रखिये, जल छिड़क कर कुंकुम से तिलक करें। अक्षत, धूप, दीप, पुष्प से पूजन करें तथा प्रार्थना करें।

त्वं तुले सर्व देवानां प्रमाणमिह कीर्तिता । उतस्त्वां पूजयिष्यामि धर्मार्थ सुख हेतवे ॥

फिर '**तुला अधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः**' मंत्र बोलकर नमस्कार करें।

तिजोरी पूजन –निम्न मंत्र बोलते हुए कुंकुम से तिजोरी पर स्वस्तिक बनाएं –

स्वर्ण भारं कुबेरं च गदापाण्यश्व वाहनम् । चित्रणी पद्मायहितं निधीश्वरमहं भजे ॥

यंत्र पूजन –धन त्रयोदशी के दिन पूजा स्थान में स्थापित अन्य सभी यंत्रों का भी संक्षिप्त पूजन करना श्रेष्ठ माना गया है।

धनत्रयोदशी पर पूजन के लिए सिद्ध मुहूर्त

दिनांक १७.१०.९८ को बही पूजन, कुबेर पूजन (तिजोरी पूजन), लेखनी पूजन, तुला पूजन के लिए निम्न सिद्ध मुहूर्त हैं –

८:३९ प्रातः से ९:२९ प्रातः तक; १२:२४ दोपहर से ४:४७ सायं तक तथा ६:१४ सायं से ७:४५ सायं तक।

दीपावली पूजन के लिए सिद्ध मुहूर्त

साधक दिनांक १९.१०.९८ की रात्रि को निम्न दो मुहूर्तों में किसी भी मुहूर्त में लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ कर सकते हैं –

स्थिर लग्न, लाभ अमृत युक्त सायंकालीन मुहूर्त –
७:३६ सायं से ९:३१ रात्रि तक।

स्थिर लग्न, लाभ युक्त सायंकालीन मुहूर्त –
२:०४ रात्रि से ४:२० ब्रह्ममुहूर्त तक।

ज्येष्ठा लक्ष्मी

तांत्रोक्त स्वरूप : मांत्रोक्त साधना

एक विदेशी दार्शनिक के विषय में प्रसिद्ध है, कि उन्होंने अपने भोजन कक्ष में ही पुस्तकालय की भी स्थापना कर रखी थी। एक बार उनके एक मित्र ने उनसे इसका कारण जानना चाहा तो उनका सहज उत्तर था, कि चूंकि सारे विवाद भोजन की मेज पर ही प्रारंभ होते हैं अतः मैंने संदर्भ देने के लिए आवश्यक पुस्तकों को भी यहीं स्थापित करना उचित समझा।

यद्यपि सहज रूप में देखा जाए, तो उस विद्वान की बात में एक वाक्-चातुर्य और सूझ-बूझ ही परिलक्षित होती है, किन्तु उनकी बातों में जो गूढ़ तथ्य छिपा था वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक प्रकार से उन्होंने जीवन का सबसे कटु सत्य हास्य में कह दिया था, कि जब व्यक्ति का पेट भरा हो तभी उसे दर्शन की सूझ आती है और समाज में अधिकांश व्यक्ति ऐसा ही करते हैं।

उपरोक्त बात को यदि इस प्रकार व्यंग से न कहा जाए तब भी इस बात को कोई नहीं नकार सकता, कि **जब तक व्यक्ति का भौतिक जीवन अधूरा है तब तक उसके लिए आध्यात्मिक जीवन की राह नहीं खुलती है। अपूर्ण व्यक्ति का वरण लक्ष्मी नहीं कर सकती तथा केवल सामान्य व्यक्ति के लिए ही नहीं अपितु ज्ञानी व्यक्ति के लिए भी लक्ष्मी का महत्व होता ही है।**

यदि यह कहा जाए, कि ज्ञानी व्यक्ति के लिए लक्ष्मी का महत्व और भी अधिक होता है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि एक ज्ञानी पुरुष ही लक्ष्मी को सहारा बनाकर उसका समाज के हित में प्रयोग कर सकता है। मूर्ख, दंभी व्यक्ति लक्ष्मी का सायुज्य प्राप्त कर उसे प्रदर्शन और आडम्बर का माध्यम बना सकता है . . . यदि यह समझा जाए, कि उसके द्वारा समाज का कोई हित होगा, तो उसमें सत्यता का अंश इतना अधिक न्यून है जितना कि सागर में मिठास का होना।

मैंने अपने सामाजिक अनुभवों से यह महसूस किया है, कि वस्तुतः जो समाज में विद्वजन हैं, गुणीजन हैं या एक स्थूल रूप से परिभाषित करें, तो **जो बुद्धिजीवी वर्ग के लोग हैं वे न केवल लक्ष्मी साधनाओं के प्रति अपितु प्रत्येक साधना के प्रति एक उपेक्षा का भाव रखते हैं। उनके पास यद्यपि आलोचना के लिए कोई ठोस तर्क नहीं होता, फिर भी वे इन्हें (साधनाओं को) तर्क की कसौटी पर कसकर देखना चाहते हैं तथा मन में यही कामना रखते हैं, कि काश! मुझे कोई मार्ग मिल जाता और मैं समाज में विद्वता के साथ श्रेष्ठ और धनस्वी भी हो सकता।** उनके विचारों को अधकचरे ज्ञान से भरी पुस्तकें एवं अधकचरे 'विद्वान' प्रभावित कर देते हैं, अतः उनकी रुचि भी विरक्त हो जाती है।

वस्तुतः यह एक संक्रमण का काल है और ऐसे संक्रमण के काल बराबर आते रहे हैं और आते ही रहेंगे। इनसे न तो भयभीत होने की आवश्यकता है न ही इनकी चिंता करने की, आवश्यकता है तो केवल इस बात की, कि वह क्या है जो इस युग के अनुरूप है और हम स्वयं को उसके अनुकूल कैसे बना सकते हैं। एक प्रकार से अपना प्रस्तुतिकरण ही इस युग की सर्वाधिक महती आवश्यकता है।

ऊपर मैंने जो बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधित्व की बात कही उसके पीछे भी यही चिंतन है, कि **बुद्धिजीवी वर्ग यदि उत्साहपूर्वक सक्रियता से इस क्षेत्र में आता है, तो वह इस प्रकार से न केवल स्वयं के पारिवारिक जीवन को श्रेष्ठ बना सकेगा, अपितु वह ज्ञान की सम्पूर्ण गरिमा को समझकर भविष्य में उसका प्रस्तुतिकरण संसार में गरिमामय ढंग से कर सकेगा।** मेरा यह कहने का तात्पर्य कदापि नहीं है, कि साधना के क्षेत्र में केवल बुद्धिजीवी वर्ग ही प्रवेश

साधन का आधार पूर्ण श्रद्धा और विश्वास ही होता है, इसमें तर्क नहीं समर्पण चाहिए।

का अधिकारी है, अपितु केवल यह स्पष्ट करने का प्रयास है, कि वे लोग आगे आएं जो साधना जगत के उतार-चढ़ाव को समझकर उसका प्रवाह बनाए रख सकें। हमारा तो सम्पूर्ण इतिहास ही साक्षी रहा है, कि किस प्रकार से विश्वामित्र, वशिष्ठ, कणाद, गौतम श्रेष्ठ ऋषि होते हुए भी लक्ष्मी उनके पास सदैव रहती थी।

यह हमारा सौभाग्य है, कि ऐसे समस्त प्रयासों में सद्गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के अनुभव, प्रवचन, साधनात्मक ज्ञान, साधनात्मक प्रयोग जो कि ऑडियो, वीडियो कैसेट तथा ग्रन्थों के रूप में भी हमारा मार्गदर्शन करने को सहज उपलब्ध हैं। वे हमें साधनाओं की उन गहराइयों को समझाने में सहर्ष प्रस्तुत हुए, जो कि किसी साधनात्मक ग्रंथ से नहीं प्राप्त हो सकती हैं। साधना के ग्रंथ तो केवल उस कर्मकांड को ही स्पष्ट कर सकते हैं जो शास्त्रोचित है। जबकि एक ही साधना को लेकर साधकों में दस प्रकार की अड़चने आ सकती हैं। यहीं पर गुरु साधना के मूल तत्व को स्पष्ट करते हैं, इसीलिए वे सर्वपूज्य होते हैं।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने देशकाल व परिस्थिति को ध्यान में रखकर ही सर्वप्रथम एक ऐसी साधना का रहस्य पत्रिका के पन्नों में उजागर करने की अनुमति दी, जो कि यद्यपि गोपनीय रही है। वे सदैव कहते थे, कि साधना किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती और आवश्यकता के अनुरूप उनका रहस्योद्घाटन करना तो सद्गुरु का धर्म होता है। प्रस्तुत साधना मूलतः लक्ष्मी साधना ही है किन्तु लक्ष्मी के एक ऐसे विशिष्ट स्वरूप की साधना है, जिसे **'ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना'** की संज्ञा दी गई है।

भगवती लक्ष्मी के अनेक स्वरूप हैं और वे जीवन के अनेक पक्षों में कहीं ऐश्वर्य लक्ष्मी, तो कहीं वसुधा लक्ष्मी, तो कहीं आयुष्य लक्ष्मी इत्यादि स्वरूपों में व्यक्ति के सामने मूर्त-अमूर्त रूपों में अपना 'दर्शन' कराती ही रहती हैं, किन्तु **लक्ष्मी का वह स्वरूप क्या है जो व्यक्ति को न केवल भौतिक रूप से परिपूर्ण करे, अपितु उसे आत्मिक और आंतरिक रूप से भी एक ऐसी संतुष्टि . . . और संतुष्टि से भी अधिक गरिमामय परिपूर्णता का बोध दे, इसका उत्तर 'ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना' ही है।** ज्येष्ठा लक्ष्मी के रहस्य को लेकर विद्वानों ने अनेक ग्रंथों की रचना की है, किन्तु जब उसके सार्वजनिक प्रस्तुतिकरण की बात है तो इस चर्चा से भी अधिक महत्वपूर्ण यह हो जाता है, कि **लक्ष्मी के विविध स्वरूपों में से केवल ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना का ही महत्व क्यों?**

इसका यदि सबसे अनुकूल उत्तर कहा जाए तो यह है, कि ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना अपने सम्पूर्ण स्वरूप में तांत्रोक्त पद्धति का प्रभाव रखते हुए भी, वस्तुतः एक मांगलिक साधना ही है अर्थात इस साधना को गृहस्थ उसी सहजता से सम्पन्न कर सकते हैं, जिस प्रकार से एक संन्यासी अपने प्रचंड योगबल से लक्ष्मी को अपने समक्ष प्रत्यक्ष करते ही हैं। इसके उपरान्त भी कोई आवश्यक नहीं कि एक गृहस्थ व्यक्ति भी उन्हीं कठोरताओं का पालन करे, जो कि एक संन्यासी को पालन करनी पड़ती हैं। यह साक्षात् वरदान नहीं तो और क्या है ? इसी कारण गुरु को शिवस्वरूप कहा गया है।

प्रस्तुत साधना मूलतः एक सतत की जाने वाली साधना है, किन्तु यदि साधक समय के अभाव के कारण या किन्हीं अन्य कारणों से इसे **सतत् रूप में करने में स्वयं को असमर्थ अनुभव करे, तो उसे यह साधना अनुष्ठान के रूप में सम्पन्न कर लेनी ही चाहिए। सतत् रूप में जहां इस साधना के मंत्र की प्रतिदिन तीन माला करनी आवश्यक होती है,** वहीं अनुष्ठान के रूप में पांच दिन तक प्रतिदिन ५१ मालाएं करनी आवश्यक होती है। इक्यावन मालाएं पढ़ने में यद्यपि बड़ी संख्या प्रतीत होती है, किन्तु इसके मंत्र पर ध्यान देने से स्पष्ट हो जाएगा कि इस प्रकार से साधक को प्रतिदिन केवल दो से तीन घण्टे का समय देना ही पर्याप्त होगा। यदि साधक एक बार में ५१ माला मंत्र जप न कर सके, तो वह प्रातः २१ माला एवं रात्रिकाल में तीस माला मंत्र जप भी कर सकता है, इसमें कोई दोष नहीं है।

यह साधना **3.12.98 से या किसी भी पक्ष में सर्वार्थ सिद्धि योग** (संदर्भ : 'नक्षत्रों की वाणी') से प्रारंभ की जा सकती है। यदि साधक रात्रि में दस बजे के आस-पास इस साधना को प्रारंभ करे तो श्रेष्ठ माना गया है। साधना हेतु कोई भी जटिल विधि-विधान नहीं है, केवल एक ताम्र पत्र पर अंकित **'ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र'** एवं **'कमल गट्टे की माला'** ही इस हेतु आवश्यक उपकरण है, जो कि विशेष रूप से इस साधना के मंत्र के अनुरूप सृजित व प्राण-प्रतिष्ठित किए गए हों। साधक, साधना के समय लाल वस्त्र धारण कर दक्षिण मुख होकर बैठ जाए, आसन आदि भी लाल रंग का ही हो। इस यंत्र का सामान्य पूजन करें अर्थात कुंकुम और अक्षत समर्पित करें और मूल मंत्र के जप में संलग्न हो जाएं। अगरबत्ती अथवा दीपक अवश्य प्रज्वलित करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र

॥ ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठा लक्ष्मि स्वयंभुवे ज्येष्ठायै नमः ॥

Ayeim Hreem Shreem Jyeshtthaa Lakshmi Svayambhuve Jyeshtthaayei Namah

यदि साधकगण इस साधना को अनुष्ठान रूप में सम्पन्न करने के उपरान्त इसकी नित्यता बनाए रखते हैं, तो लाभ सहस्र गुणित हो जाता है और यूं भी किसी भी साधना को उसके निहित मंत्र जप के काल से भी अधिक करना सदैव अनुकूलता देने वाला माना ही गया है। साधना समाप्त कर यंत्र तथा माला को नदी में विसर्जित कर दें।

यह केवल एक श्रेष्ठ साधना की प्रस्तुति मात्र ही नहीं है अपितु यह तो एक आमंत्रण है, कि साधक स्वयं आगे बढ़कर भाग ले और अनुभव करे, कि जीवन में साधनाओं से किस प्रकार एक ऐसी अनुकूलता आती है जो स्थायित्व से परिपूर्ण होती है।

साधना सामग्री पैकेट – 210/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

ऑडियो कैसेट्स

परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी की सम्मोहक तथा मंत्र मुग्ध कर देने वाली ओजस्वी वाणी में अनेक प्रकार की महालक्ष्मी साधनाओं व पूजन पद्धतियों का एक सम्पूर्ण संकलन

प्रामाणिक एवं पूर्ण विधि विधान युक्त सम्पूर्ण महालक्ष्मी का पूजन, जिसे सुनकर साधक कहीं भी हों दीपावली के अवसर पर या किसी अन्य अवसर पर भी महालक्ष्मी की आराधना कर सकते हैं।

श्री सूक्त
कनकधारा सूत्र
महालक्ष्मी आरती एवं
सम्पूर्ण महालक्ष्मी पूजन

के समावेश से यह कैसेट साधकों के लिए हमेशा उपयोग में आने वाली कैसेट है।

आजवल्यमाना महालक्ष्मी पूजन

कोई भी दस कैसेट लेने पर एक कैसेट मुफ्त

दीपावली के अवसर पर प्रस्तुत है –

लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं पर पूज्यपाद सद्गुरुदेव की दिव्य ओजस्वी वाणी में ये कैसेट जो बेजोड़ हैं –

- स्वर्ण पात्र साधना
- महालक्ष्मी साधना
- विशेष दीपावली साधना
- अक्षय पात्र साधना
- महालक्ष्मी स्वरूप साधना
- श्री लक्ष्मी साधना
- लक्ष्मी सिद्धि (2 भाग)
- लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (3 भाग)
- स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी साधना
- सौभाग्य दायिनी लक्ष्मी प्रयोग
- ऐश्वर्य महालक्ष्मी प्रयोग
- गणपति एवं मनोकामना पूर्ति प्रयोग
- दीपावली शिविर – 95 (सिद्धिदात्री महालक्ष्मी पूजन – 5 भाग)
- दीपावली शिविर – 96 (5 भाग)
- दीपावली शिविर – 97 (1 भाग)

* न्यौछावर प्रति कैसेट - 30/-

:: सम्पर्क इस पते पर करें ::

डाक द्वारा प्राप्ति हेतु – **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-432209, टेली फैक्स : 0291-432010

व्यक्तिगत रूप से प्राप्ति हेतु – **सिद्धाश्रम**, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन 7182248

26.12.98

सृष्टि के पालन कर्ता
विष्णु की आधारभूता

महालक्ष्मी

जिनकी साधना सम्पन्न कर जीवन के दोनों पक्षों – आध्यात्मिक और भौतिक जीवन की पूर्णता प्राप्त होती है।

भगवती लक्ष्मी सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु की आधारभूता शक्ति और त्रिगुणात्मक स्वरूप में भगवती महालक्ष्मी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में वन्दनीय हैं, क्योंकि पूरे विश्व का आधार भगवती लक्ष्मी हैं, जो क्षीरसागर से उत्पन्न, समस्त संसार का पालन पोषण करने वाली, जीवन में समस्त सुख-सौभाग्य, आनन्द और पूर्णता प्रदान करने वाली एक ऐसी महादेवी हैं, जिनकी आराधना संसार का प्रत्येक व्यक्ति करने के लिए उत्सुक है।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है, कि संसार के प्रत्येक देश में भगवती लक्ष्मी की साधना, आराधना और उपासना होती है, वह चाहे अलग नाम से हो, अलग रूप में हो, अलग क्रिया-पद्धति से हो, परन्तु लक्ष्मी की मान्यता तो सम्पूर्ण विश्व में है ही, क्योंकि बिना लक्ष्मी के तो जीवन का आधारभूत सत्य ही समाप्त हो जायेगा।

जीवन के दो पक्ष हैं – आध्यात्मिक और भौतिक।

आध्यात्मिक जीवन का आधार भी लक्ष्मी ही हैं, क्योंकि अध्यात्म जीवित रहेगा तो मनुष्यता भी जीवित रहेगी। इसके मूल में लक्ष्मी ही तो है।

ठीक इसी प्रकार से सम्पूर्ण भौतिक सम्पदा की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी ही हैं। यह अलग बात है, कि आज विश्व में अधिकांश व्यक्ति आर्थिक समस्याओं से घिरे हैं, जिनके पास भौतिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं का अभाव ही रहता है; पर इसका कारण क्या है, मनुष्य को अपनी अज्ञानता त्याग कर इसके मूल में जाना ही पड़ेगा।

यह बात तो निर्विवाद सत्य है, कि मात्र परिश्रम से जीवन में पूर्णता और सम्पूर्णता नहीं आ सकती। एक कार्यशील व्यक्ति दिन भर परिश्रम कर शाम को सौ-दो सौ ही कमा सकता है और इतने धन से उसके जीवन के अभाव समाप्त नहीं होते हैं, क्योंकि परिश्रम धन प्राप्ति का केवल एक भाग है। धन की प्राप्ति तो दैवी-कृपा या भगवती महालक्ष्मी की साधना से ही पूर्णतया सम्भव है।

परन्तु जो व्यक्ति अहंकार से ग्रसित है, जो व्यक्ति नास्तिक है, जो व्यक्ति देवताओं की साधना को, आराधना को, सिद्धियों को, मंत्रों को नहीं पहचानते या उन पर विश्वास नहीं करते, वे जीवन में बहुत बड़े अभाव पाल-पोस रहे होते हैं, उनके जीवन में सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं होता, निर्धनता उनके चारों ओर मंडराती रहती है, जीवन की समस्याएं उसके सामने मुंह उठाए खड़ी रहती हैं . . . ऐसा व्यक्ति चाहे अपने-आप को कितना ही संतोषी कह कर कर्महीन, भाग्यहीन हो जाता है, पर यह ध्रुव सत्य है कि वह अपने जीवन में उस आनन्द और मधुरता को, उस सम्पूर्णता और वैभव को प्राप्त नहीं कर सकता, जो दैवी-कृपा या भगवती लक्ष्मी की कृपा से प्राप्त होता है।

कुछ व्यक्ति जो जीवन में धन सम्पदा से युक्त होते हैं और वे ये समझ बैठें कि लक्ष्मी तो उनके पास आनी ही है, वे भूल कर रहे हैं। यह लक्ष्मी तो निश्चय ही उनके द्वारा पूर्व जन्म में किए गए साधना और सुकृत कार्यों से ही प्राप्त हुई है। साधना वह क्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य देवताओं को भी विवश कर सकता है, कि वे सम्पूर्णता से उसके साथ रहें, उसकी सहायता करें, उसके जीवन में जो न्यूनता है वह पूर्ण हो इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में लिखा है, कि –

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥

(अध्याय ३, ११)

हे मनुष्यो तुम साधन यज्ञ, पूजन, ध्यान द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें, इस प्रकार से निःस्वार्थ भाव से एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम पूर्णत्व प्राप्त कर सकोगे।

प्रत्येक व्यक्ति वह चाहे गृहस्थ जीवन में हो, भौतिक जीवन में हो, संन्यासी हो, योगी हो, चाहे हिमालय में विचरण करने वाला हो, लक्ष्मी की कृपा का अवलम्बन तो उसको लेना ही पड़ता है। जो व्यक्ति इस कटु सत्य को समझ लेता है, जो इस बात को समझ लेता है, कि जीवन का आधारभूत सत्य भौतिक

सम्पदा के माध्यम से ही जीवन में पूर्णता और निश्चिन्तता आ सकती है, वह लक्ष्मी की आराधना, लक्ष्मी का अर्चन और लक्ष्मी की कृपा का अभिलाषी जरूर होता है।

मैं यह नहीं कहता, कि कुंकुम, अक्षत् से पूजा की जाए; मैं यह भी नहीं कहता, कि आरती उतारी जाए . . . ये तो पूजा के प्रकार हैं। साधना तो इससे बहुत ऊंचाई पर है, जहां मंत्र जप के माध्यम से हम देवताओं को भी इस बात के लिए विवश कर देते हैं, कि वे अपनी सम्पूर्णता के साथ व्यक्ति के साथ रहें, उसकी सहायता करें, उसके जीवन के जो अभाव हैं, जो परेशानियां हैं, जो अड़चनें हैं, जो बाधाएं हैं उन्हें दूर करें, जिससे उसका जीवन ज्यादा सुखमय, ज्यादा मधुर, ज्यादा आनन्ददायक हो सके।

इसमें कोई तो राय नहीं, कि जीवन में महाकाली और सरस्वती की साधना भी जरूरी है, क्योंकि महाकाली की साधना से जहां जीवन निष्कंटक और शत्रु रहित बनता है, वहीं महा सरस्वती साधना के माध्यम से उसे बोलने की शक्ति प्राप्त होती है, उसका व्यक्तित्व निखरता है, वह समाज में सम्माननीय और पूजनीय बनता है। मगर यह सब तब हो सकता है, जब धन का आधार हो –

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,
सः पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः,
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ॥

– 'भृर्तहरी'

चाहे हम रुद्र की साधना करें और चाहे हम ब्रह्मा की साधना करें, चाहे हम इन्द्र, मरुद्गण, यम या कुबेर की साधना करें, किन्तु वैभव और धन की अधिष्ठात्री देवी तो भगवती लक्ष्मी ही हैं, मात्र लक्ष्मी की साधना के माध्यम से ही व्यक्ति अपने अभावों को दूर कर सकता है।

जिसके पास लक्ष्मी की कृपा है 'यस्यास्ति वित्तं . . .' समाज उसको समझदार समझता है, प्रतिष्ठित समझता है, ऊंचे खानदान का समझता है, उसे पण्डित कहते हैं, उसे गुणज्ञ कहते हैं, लोग उससे सलाह लेते हैं, उसके पास बैठते हैं, उससे मित्रता करने का प्रयत्न करते हैं।

जिसके पास लक्ष्मी की कृपा होती है, वह अपने आप अच्छा वक्ता बन जाता है – 'सः एव वक्ता, स च माननीयः . . .' समाज में लोग उसका सम्मान करते हैं, उसके पास बैठने, उससे मित्रता करने को प्रयत्नशील होते हैं।

भृर्तहरी ऋषि कह रहे हैं – **'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते'** ये सब गुण मनुष्य के नहीं हैं, ये तो भगवती लक्ष्मी की कृपा के गुण हैं, जो साधक को प्राप्त हैं।

प्रश्न उठता है, कि क्या प्रत्येक मनुष्य के लिए लक्ष्मी की साधना आवश्यक है?

हमारे जीवन में अन्न की नितांत आवश्यकता है, जल की नितांत आवश्यकता है, प्राणवायु लेने की नितांत आवश्यकता है, किन्तु केवल इन तीनों से मनुष्य जीवन सुमधुर नहीं बन सकता है; जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी की साधना भी नितान्त आवश्यक है। जो इस सत्य को नहीं समझ सकते, वे जीवन में कुछ भी नहीं समझ सकते। जो व्यक्ति जितना जल्दी इस तथ्य को समझ लेता है, वह इस बात को भी समझ लेता है, कि जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी की आराधना, लक्ष्मी का सहयोग आवश्यक है और ऐसा ही व्यक्ति जीवन में सही अर्थों में पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकता है। **यह जरूरी नहीं है, कि कोई योगी, साधु, संन्यासी या साधक ही लक्ष्मी की साधना करे, लक्ष्मी की साधना तो कोई भी कर सकता है, चाहे पुरुष हो, चाहे स्त्री हो, चाहे बालक हो, चाहे वृद्ध हो, चाहे अमीर हो, चाहे गरीब हो कोई भी लक्ष्मी की साधना से ही जीवन में पूर्णता, सौभाग्य, सुख और सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है।**

चाहे हम रुद्र की साधना करें और चाहे हम ब्रह्मा की साधना करें, चाहे हम इन्द्र, मरुद्गण, यम और कुबेर की साधना करें, किन्तु वैभव और धन की अधिष्ठात्री देवी तो भगवती लक्ष्मी ही हैं, मात्र लक्ष्मी की साधना के माध्यम से ही व्यक्ति अपने अभावों को दूर कर सकता है,

पूर्वजों की गरीबी और निर्धनता को अपने जीवन से हटा सकता है, जीवन को आनन्ददायक बना सकता है, सम्पन्नता और वैभव का सदुपयोग कर सकता है . . . और यदि लक्ष्मी की कृपा हो गई, तो वह सुकृत कार्य कर सकता है, मंदिर, धर्मशाला, तालाब, अस्पताल का निर्माण करा सकता है और समाज सेवा के माध्यम से हजारों-लाखों लोगों का कल्याण कर सकता है। भगवती लक्ष्मी की साधना से जहां व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को श्रेष्ठ बना कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, वहीं समाज के बहुत बड़े वर्ग को सुख और सौभाग्य, आनन्द और मधुरता प्रदान करने का माध्यम बन सकता है।

मनुष्य जीवन में लक्ष्मी की कौन सी विशेष साधनाएं करे, जिससे उसके जीवन में लक्ष्मी का वास हो सके और दरिद्रता रूपी मैल को बाहर निकाल कर जीवन कान्तिमय बना सके, इसी क्रम में कुछ लघु प्रयोग दिए जा रहे हैं, जिनके बारे में आप कह सकते हैं – 'देखन में छोटे लगें, पर कार्य करें गम्भीर' –

शत अष्टोत्तरी महालक्ष्मी यंत्रः विशेष नियम

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व लक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट तथ्य ज्ञान लेने चाहिए –

१. महालक्ष्मी की साधना, मंत्र-जप अथवा अनुष्ठान को **26.12.98 अथवा किसी भी मास के शुक्ल पक्ष के किसी बुधवार** से प्रारम्भ करें, तो ज्यादा उचित रहता है।

२. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यदि व्यक्ति **'महालक्ष्मी दीक्षा'** प्राप्त कर लें, तो सफलता निश्चित ही प्राप्त होती है।

३. किसी भी प्रकार की भगवती महालक्ष्मी से सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने के लिए **'शत अष्टोत्तरी महालक्ष्मी यंत्र'** को स्थापित करने और उसके सामने साधना, उपासना या अनुष्ठान सम्पन्न करने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है, क्योंकि यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है, इसमें सहस्र लक्ष्मियों की स्थापना और उनका कीलन होता है, जिससे कि साधक के घर में स्थायित्व प्रदान करती हुई लक्ष्मी स्थापित होती है। यहां दिए तीन प्रयोगों की सामग्रियां इसी पद्धति से निर्मित हैं।

४. साधक साधना में कमल या गुलाब के पुष्प का प्रयोग पूजन के समय अवश्य करें।

५. **'कमलगट्टे की माला'** से मंत्र-जप करना ही ज्यादा उचित माना गया है।

६. इस प्रकार की साधना व्यक्ति अपने घर में या व्यापार स्थान में अकेले या पत्नी के साथ सम्पन्न कर सकता है।

लक्ष्मी से सम्बन्धित तीन प्रयोग जो ऊपर वर्णित शत अष्टोत्तरी यंत्र पर ही आधारित हैं, स्पष्ट किए जा रहे हैं –

१. शीघ्र धन प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग तांत्रोक्त नारियल पर आधारित है धनदायक प्रयोग है। लाल रंग के वस्त्र पर **'तांत्रोक्त नारियल'** के साथ **'शतष्टोत्तरी महालक्ष्मी महायंत्र'** स्थापित करें, उसका संक्षिप्त पूजन कर निम्न

या देवि सर्व भूतेषु महालक्ष्मी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

मंत्र का जप **'कमल गट्टे की माला'** से ५ (पांच) माला करें –

॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐश्वर्य महालक्ष्मी आगच्छ ॐ नमः ॥

Om Hreem Shreem Eishvarya Mahaalakshmi Aaagachchh Om Namah

मंत्र जप समाप्त कर अगले दिन समस्त सामग्री नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 201/-

२. मनोरथ पूर्ति प्रयोग

'ऐश्वर्य महालक्ष्मी' पर आधारित यह प्रयोग मनोरथ पूर्ति में सहायक है। साधक स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करें और किसी पात्र में **'श्रीं'** बीज मंत्र कुंकुम से लिखें, उस पर एक पुष्प रखें तथा पुष्प पर **''शत अष्टोत्तरी महालक्ष्मी यंत्र'** स्थापित करें, गुरु का ध्यान कर निम्न मंत्र का **'कमलगट्टे की माला'** से ११ (ग्यारह) माला जप करें –

॥ॐ श्रीं वांछितं साधय ऐश्वर्यं देहि ह्रीं महालक्ष्म्यै ॐ नमः ॥

Om Shreem Vaanchhitam Saadhay Eishvaryam Dehi Hreem Mahaalakshmyei Om Namah

जप समाप्त कर एक दिन बाद समस्त सामग्री को किसी नदी में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट – 201/-

३. आकस्मिक धन लाभ प्रयोग

यह प्रयोग आकस्मिक धन लाभ का प्रयोग है, जिसे कोई भी व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है। किसी पात्र में **''शत अष्टोत्तरी महालक्ष्मी यंत्र'** स्थापित करें। अक्षत, कुंकुम तथा पुष्प अर्पित कर यंत्र का पूजन करें। इस साधना में – कमल गट्टे की माला की जगह प्रत्येक मंत्र का उच्चारण करते समय **'कमल गट्टे के बीज'** यंत्र पर अर्पित करें। इस तरह मंत्र का उच्चारण करते हुए १०८ बीज अर्पित करने हैं।

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं धनं देहि दापय ॐ नमः ॥

Om Hreem Hreem Dhanam Dehi Daapay Om Namah

प्रयोग के बाद यंत्र को लाल वस्त्र में लपेटकर पूजन स्थान में रख दें तथा **कमल गट्टे के बीजों** को नदी में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र पर आप पांच बार ही प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, किन्तु यह ध्यान रखें कि मंत्र जप के लिए हर बार नए कमल गट्टे के बीज लेने होंगे जो **'श्री सूक्त'** के द्वारा चैतन्य किए गए हों। उसके पश्चात यंत्र नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 201/-

विशेष – इन तीनों प्रयोगों को आप एक ही दिन में प्रातः, मध्याह्न, सायं अथवा रात्रि अलग-अलग समय में भी सम्पन्न कर सकते हैं या किसी भी एक प्रयोग के बाद दस पन्द्रह मिनट का अन्तराल देकर दूसरे प्रयोग को प्रारम्भ कर सकते हैं। इन तीनों प्रयोगों के लिए निर्धारित दिवस है – 26.12.98 या किसी भी शुक्ल पक्ष का बुधवार।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अंगूठा काट बक्शो मेरे गुरुवर

इतिहास का सबसे मार्मिक क्षण था वह जब द्रोण जैसे गुरु, अपने शिष्य को इतिहास पुरुष बनाने के लिए अपने ऊपर लांछन लेने को सन्नद्ध थे। द्रोणाचार्य अच्छी तरह समझते थे, कि आने वाली पीढ़ियां मुझे धिक्कारेंगी, मुझ पर आरोप लगाएंगी परन्तु इसके अलावा कोई चारा भी नहीं कि एकलव्य को इतिहास में अमर किया जाए, इतिहास पुरुष बनाया जाए। अर्जुन का इतिहास तो उनके सामने स्पष्ट था, कि राज घराने का है और अमर हो जाएगा, लेकिन यदि इसे इसी हाल में छोड़ दिया, तो इसकी सभी विद्याएं मात्र आखेट करने में समाप्त हो जाएंगी और आने वाला इतिहास मेरे इस शिष्य को विस्मृत कर देगा।

गुरु का यह प्रेम था अपने शिष्य के प्रति। गुरु शिष्य सम्बन्धों पर प्रकाश डालता यह इतिहास आलेख...

पूज्यपाद सद्गुरुदेव कुछ शिष्यों के साथ उपस्थित थे, उस दिन वे गुरु और शिष्य के सम्बन्धों की उन गहराइयों को उजागर कर रहे थे, जो केवल सद्गुरु ही अपने प्रिय शिष्यों में उतार सकते हैं . . . गुरुदेव उस दिन द्रोणाचार्य और एकलव्य के सन्दर्भ में प्रवचन कर रहे थे . . .

द्रोणाचार्य के जीवन की यह विडम्बना रही है, कि जितना चुनौतीपूर्ण जीवन उन्होंने जिया, उतना शायद ही किसी अन्य ऋषि ने जिया हो . . . उन्हें बहुत लांछन सहने पड़े . . . और वह सब मात्र केवल अपने शिष्य के लिए, केवल अपने शिष्य को पूर्णता देने के लिए, इतिहास पुरुष बनाने के लिए।

जब एकलव्य उनके पास पहुंचा, तो द्रोणाचार्य ने तुरन्त अपने ज्ञान चक्षुओं से जान लिया, कि यह मेधावी व्यक्तित्व है और शिष्य की पात्रता से युक्त है, क्योंकि गुरु के पास तो आत्म भेदी दृष्टि होती है, वे एक क्षण में ही सब कुछ समझ लेते हैं – आने वाली घटनाओं को, घटना चक्र को और आने वाले समय को। द्रोणाचार्य की पारखी नजर ने भी अवलोकन कर लिया था भविष्य का। जिस तरह एक शिष्य को साध होती है, कि उसे योग्य गुरु प्राप्त हो, ठीक उसी तरह एक गुरु को भी योग्य पात्र की आवश्यकता होती है, कि योग्य पात्र मिले और जो गुरु की कसौटी पर पूर्ण खरा उतरे, वह अपना ज्ञान उसमें उड़ेल सके, अपने ज्ञान से उसके हृदय को आलोकित कर सके।

. . . परन्तु द्रोणाचार्य के सामने एक विवशता थी, कि वह राज दरबार का अन्न खाते थे, वैसे तो राज्य के प्रत्येक कार्य में वे भागीदार थे, उनकी मंत्रणा पर ही कार्य सम्पन्न होते थे, लेकिन फिर भी राजाज्ञा के बिना राजघराने के अतिरिक्त किसी अन्य छात्र को विद्याध्ययन के लिए आश्रम में रखना राजघराने की परम्परा के अनुकूल नहीं था . . . क्योंकि राज घराने की अपनी मान्यता हुआ करती थी।

गुरु द्रोणाचार्य चाह कर भी उस बालक को शिष्य के रूप में सर्वमान्य तरीके से दीक्षा देकर शिष्य घोषित नहीं कर

सकते थे, यह कितनी विडम्बना थी उस योग्य गुरु के सामने . . . कितनी टीस हुई होगी उसके हृदय में।

उन्होंने देखा, कि स्थूल देह से वह उसे ज्ञान नहीं दे सकते, तो दूसरा पहलू कार्यान्वित किया सूक्ष्म देह से भावनात्मक रूप में पूर्णत्व ज्ञान देने का।

एकलव्य द्रोणाचार्य के समक्ष उपस्थित होता है और निवेदन करता है, कि मुझे भी दीक्षा देकर अपना शिष्य बना लें और धनुर्विद्या रूपी ज्ञान प्रदान करें। ब्रह्माण्ड में आपसे बढ़कर इस श्रेष्ठ विद्या का कोई ज्ञाता नहीं है।

मर्यादित गुरु अपनी मर्यादा में मौन रह गए और आशीर्वाद दिया कि 'कल्याण हो'। केवल मात्र इन्हीं शब्दों से एकलव्य को ज्ञान का प्रकाश मिला और उसका निश्चय और अधिक दृढ़ हो गया और उसने अपने स्थान, अपनी झोपड़ी में जाकर गुरु का ध्यान किया तो आत्म आदेश प्राप्त हुआ, कि तू मेरी एक मिट्टी की मूर्ति बना ले . . . और एकलव्य की भावना इतनी अधिक प्रबल और विश्वासयुक्त थी कि उसने मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजन कर गुरु का आवाहन कर उनसे आत्मिक अनुमति लेकर विद्याभ्यास प्रारम्भ कर दिया। यह केवल एकपक्षीय क्रिया नहीं थी, इसमें गुरु और शिष्य दोनों थे, हृदय के सूक्ष्म तार जुड़े रहे। इस पूरी प्रक्रिया में एकलव्य बराबर यही अनुभव करता रहा, कि गुरुदेव किस प्रकार उसके साथ प्रति क्षण रहते हुए उसकी प्रत्येक त्रुटियों को दूर कर देते हैं।

इस सम्पूर्ण क्रिया में द्रोणाचार्य कहीं पर भी अपनी मर्यादा से पदच्युत नहीं हुए, क्योंकि अन्न तो स्थूल देह ग्रहण करती है, अतः वह सामाजिक बन्धन से बंधी है, परन्तु सूक्ष्मदेह पर कोई बन्धन नहीं होता, वहां वह स्वतंत्र होती है और द्रोणाचार्य सूक्ष्म रूप से एकलव्य के पास सदैव रहते थे।

समय व्यतीत होता रहा और अर्जुन तथा एकलव्य दोनों ही अपनी-अपनी विधि से गुरु द्रोण द्वारा शस्त्र संचालन की क्रिया का ज्ञान प्राप्त करते रहे। आगे प्रसंग है, कि अर्जुन को यह अभिमान हो गया कि मेरे पास द्रोणाचार्य जैसे महान गुरु द्वारा सिखाई गई विद्या है और मेरे बराबर भू-मण्डल में कोई भी धनुर्धारी नहीं है . . . और जैसे ही गुरु को यह आभास हुआ, तो उन्होंने विचार किया कि अब समय आ गया है, कि अपने शिष्य अर्जुन का अभिमान खण्डित कर ही दूं, क्योंकि गुरु को आवश्यकता होती है विनम्र शिष्य की जो पारंगत होते हुए भी विनम्र भाव से शिष्यवत् ही रहे।

और इसी उद्देश्य से गुरु द्रोण अपने अन्य शिष्यों और अर्जुन के साथ वन भ्रमण के लिए गए।

उनके साथ ही आश्रम का श्वान भी चल रहा था। वह श्वान थोड़ी देर बाद भौंकता हुआ आगे चला गया, किन्तु थोड़ी देर बाद ही उसके भौंकने की आवाज बंद हो गई। आगे जाने पर कुत्ता वापिस आते दिखा, तो उन्होंने देखा कि उसका मुंह तीरों से भरा हुआ है। अर्जुन ने तीरों को बाहर निकाला, तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ, कि कुत्ते को जरा भी खरोंच नहीं आई है। अर्जुन को घोर आश्चर्य होता है, वह अति विस्मय से पूछता है, कि 'गुरुदेव! आपने तो कहा था, मैं ही श्रेष्ठतम धनुर्धर हूं। यह कौन है जो मुझसे बढ़कर इस विद्या का ज्ञाता है।' गुरु मंद हास्य से कहते हैं, कि 'चलो आगे चलकर देखते हैं।'

आगे जाने पर द्रोण, अर्जुन एवं अन्य शिष्य देखते हैं, कि एक आदिवासी युवक हाथों में धनुष-बाण लिए अभ्यास कर रहा है। गुरु द्रोण को देखते ही एकलव्य ने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया और विनम्रता से कहा, कि आज मेरा जीवन धन्य हो गया।

गुरु द्रोण कहते हैं – 'मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं, परन्तु यह जानना चाहता हूं, कि तुम्हें किस गुरु ने यह विद्या सिखाई है?'

एकलव्य कहता है – 'मेरी कुटिया में मेरे गुरु आसीन हैं।'

इतना कहकर वह द्रोणाचार्य को कुटिया के अन्दर ले गया, जहां पर उसका साधना कक्ष था, सुन्दर सुसज्जित गुरु की मिट्टी से बनी मूर्ति स्थापित थी, गले में ताजे पुष्पों की माला सुगन्ध बिखेर रही थी। एकलव्य ने कुटिया के अन्दर गुरु द्रोण के

वर्तमान समय में भी यह तो केवल वह गुरु ही जान सकते हैं अथवा शिष्य एहसास कर सकता है, कि पूज्य गुरुदेव उसके साथ प्रतिक्षण किस तरह छाया के समान रहते हैं और जब शिष्य व्यथित होता है, गुरु चित्र के सम्मुख अपने विषाद निवेदित करता है, तब उसके 'विषाद' 'हर्ष' में परिवर्तित हो जाते हैं।

यदि शिष्य में समर्पण और निष्ठा हो और उसके सामने देवता और सद्गुरुदेव मूर्ति में, चित्र रूप में स्थापित हों, तो उसे सदैव रक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त होता ही है।

यही एक प्रक्रिया है गुरु को अपने आत्म घट में स्थापित करने की जहां शिष्य समर्पण भाव से गुरु साधना करता है।

चरणों को प्रक्षालित किया और गुरु ने भी उसे तत्क्षण पूर्णता का आशीर्वाद दे दिया। अमरत्व का वरदान दे दिया।

इतिहास का सबसे मार्मिक क्षण उपस्थित था, द्रोण जैसे गुरु अपने शिष्य को इतिहास पुरुष बनाने के लिए अपने ऊपर लांछन लेने को सन्नद्ध थे। द्रोणाचार्य अच्छी तरह समझते थे, कि आने वाली पीढ़ियां मुझे धिक्कारेंगी, मुझपर आरोप लगाएंगी परन्तु इसके अलावा कोई चारा भी नहीं था, जिससे एकलव्य का नाम इतिहास में अमर किया जाए। अर्जुन का इतिहास तो उनके सामने स्पष्ट था, कि राज घराने का है और उसे ऐसे कई क्षण मिलेंगे, जिससे वह अमर हो जाएगा, लेकिन इसे यदि इस हाल में छोड़ दिया, तो इसकी सभी विद्याएं मात्र आखेट करने में ही समाप्त हो जाएंगी और आने वाला इतिहास मेरे इस शिष्य को भूल जाएगा।

कितना दर्द, कितनी पीड़ा रही होगी उस गुरु के मन में, जिसने अपने शिष्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा गुरु दक्षिणा के रूप में मांग लिया, वह मात्र दाहिने हाथ का अंगूठा ही नहीं था, उस एकलव्य के जीवन की जमा पूंजी, सारी धरोहर, सारी तपस्या थी, क्योंकि धनुर्धर के लिए उसके दाहिने हाथ का अंगूठा ही तो सबसे महत्वपूर्ण अंग है और सद्गुरु जब शिष्य पर कृपा करते हैं, तो ऐसे ही उसकी सबसे प्रिय वस्तु लेकर उसे कृतार्थ कर देते हैं।

धन्य है वह शिष्य जिसने एक क्षण भी गवांए बिना, पलभर में ही अपना अंगुष्ठ काट कर गुरु के चरणों में भेंट कर दी, क्योंकि वह जानता था, कि यह शरीर भी गुरु का ही है, यह समस्त ज्ञान भी गुरुदेव का दिया है, उसने प्रत्यक्ष अनुभव किया था, कि गुरुदेव ने उसे किस प्रकार रात-रात भर जागकर, सारा दिन बैठकर, बिना खाए-पिए ज्ञान दिया, अन्यतम धनुर्धर बनाया . . . और यह सब केवल गुरु कृपा से ही हुआ था।

गुरु और शिष्य के सम्बन्ध की किसी अन्य से उपमा नहीं दी जा सकती है। महत्वपूर्ण यह नहीं है, कि एकलव्य ने अपना अंगूठा दक्षिणा स्वरूप दान कर दिया, यह तो मात्र एक क्रिया है जो शिष्य द्वारा की गई। अंगूठा ही क्या यदि द्रोण उसका सिर मांगते तो भी किंचित मात्र वह हिचकता नहीं और तत्क्षण काटकर चरणों में समर्पित कर देता, परन्तु उससे वह बात कहां बनती जो गुरु द्रोण चाहते थे, जो उनकी परिकल्पना थी, जो शिष्य को वरदान स्वरूप प्रदान करना था।

यदि द्रोणाचार्य को एकलव्य यह दक्षिणा देने से इंकार कर भी देता, तो उस पर कोई बन्धन नहीं था, कोई दबाव नहीं था, वह तो स्वेच्छा से मांगी गई गुरु दक्षिणा थी। यदि यह घटना नहीं घटी होती, तो कौन जानता गुरु द्रोण के उस प्राणांश को, जो उनका तपोपुञ्ज स्वरूप था, उनका शिष्य था।

चेतना पुञ्ज गुरु की मार्मिक वेदना को कोई समझ नहीं पाया। एकलव्य से अंगूठा मांगने का अर्थ भी गुरु द्रोण भली प्रकार समझते थे, कि उन्होंने स्वयं पर एक शिष्य से अंगूठा दक्षिणा में मांगकर अपने नाम पर कलंक लगा दिया है। उन्होंने जानबूझ कर यह कलंक अपने ऊपर मात्र इसलिए लिया, कि उनका शिष्य मृत्यु से अमृत्यु की ओर जा सके, इतिहास में उसका नाम अमिट हो सके।

द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरु दक्षिणा में अंगूठा तो मांग लिया, किन्तु वर्षों से सीखी धनुर्विद्या गुरु द्रोण के आशीर्वाद से और अधिक मुखरित हो उठी और बिना अंगूठे के भी उसने धुनर्विद्या में पारंगतता प्राप्त कर ली . . . और इतिहास गवाह है, कि जब भी श्रेष्ठ धनुर्धर का नाम आता है, तो एकलव्य का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है।

इतिहास ने एकलव्य का कटा अंगूठा तो देखा, परन्तु क्या गुरु द्रोण का कटा हृदय कोई देख सका? अंगूठा लिया वह तो प्रकाश में आया, परन्तु गुरु ने क्या दे दिया और समर्पण के साथ उसे कितना महान बना दिया, यह समाज ने याद नहीं किया। शिष्य को याद जितनी गुरु की रहती है, उससे भी कहीं अधिक याद गुरु को अपने एक-एक शिष्य की रहती है, क्योंकि गुरु के लिए सभी शिष्य समान होते हैं, लेकिन वे किसी भी शिष्य का अभिमान सहन नहीं कर सकते हैं। एक तरफ उन्होंने अर्जुन का अभिमान तोड़ा और दूसरी तरफ एकलव्य को अमरता प्रदान की।

गुरु और शिष्य के सम्बन्ध तो पूर्ण निःस्वार्थ भाव-भूमि पर जनमते और पनपते हैं।

एक आदमी जो कि छल, झूठ के वातावरण में पला वह इन सम्बन्धों को केवल अपनी स्वार्थी दृष्टि से ही देखता है और समर्पित शिष्य यह जानता है, कि गुरुत्व शक्ति जो भौतिक शरीर रूप में व सूक्ष्म, इन दोनों स्थितियों में पूर्णरूपेण कार्य करती है, प्रत्येक प्रकार से अपने शिष्य का शुभ चिंतन करती है, शिष्य के जीवन को सजाती-संवारती है और उसको इतिहास पुरुष बनाने के लिए, उसके जीवन को हिमालय से भी ऊंचा उठाने के लिए गुरु स्वयं को द्रोण की तरह कीचड़ आक्षेप व लांछनों में फंसा लेते हैं। फिर भी उन्हें संतोष होता है, कि वह अपने शिष्य को कुछ बना सके, अमर कर सके। शिष्य की दक्षिणा उतनी महत्वपूर्ण हो अथवा न हो, लेकिन गुरु का व्यक्तित्व बहुत महान होता है, जिसे समझना इतना आसान नहीं होता, इसके लिए तो ज्ञान चक्षुओं की ही आवश्यकता होती है जो केवल समर्पण से ही मिल सकती है।

कितने महान होते हैं गुरु, कि उनके त्याग की भनक तक भी शिष्य को होने नहीं पाती और न ही समाज समझ पाता है। गुरु अपनी आलोचना से विचलित नहीं होते।

. . . लेकिन क्या कोई गुरु पद की गरिमा को समझ सका है, गुरु का अपने शिष्य के प्रति प्रेम को समझ सका है?

गुरु आत्म स्थापन साधना

24.12.98 अथवा किसी भी मास की 21 तारीख या गुरु श्रद्धाञ्जलि समर्पण दिवस

जिससे शिष्य सद्गुरु के दिव्य भाव को आत्मसात कर लेता है

शिष्य जब समर्पण भाव में आ जाता है और वह गुरु के साथ एकाकार होने के लिए मन मस्तिष्क और हृदय से दृढ़ हो जाता है, तो गुरु शिष्य के साथ आत्म लीन होकर उसे अपना सम्पूर्ण प्यार उड़ेल देते हैं।

जब तक शिष्य शिष्यत्व भाव से रहते हुए सद्गुरु को आत्मसात करता है, तभी तक उसे दिव्य आशीर्वाद केवल स्वयं के लिए प्राप्त होता रहता है।

परम पूज्य सद्गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी, जो हम सबके सद्गुरुदेव हैं एवं हमारे प्राणप्रिय हैं, उन्होंने अपनी क्रिया द्वारा यह भौतिक देह भले ही छोड़ दी हो, वे सिद्धाश्रम में पूज्य श्री निखिलेश्वरानन्द स्वरूप में विराजमान हैं और आत्मिक रूप से हम सबके मध्य ही तो स्थित हैं।

मात्र शिष्यों के कल्याण के लिए ही वे आए और उनकी नजर में प्रत्येक शिष्य समान ही रहा, चाहे वह एक वर्ष से जुड़ा हो या दस वर्ष से या दस दिन से या अभी भी जुड़ने का मानस बना रहा हो, तभी तो करुणा से वशीभूत होकर वे यह साधना दे गए, जिसको सम्पन्न कर आप हर समय गुरु की सान्निध्यता का अनुभव कर सकते हैं।

एकलव्य गुरु द्रोण के आश्रम से काफी दूर जंगलों में रहता था, उसने वहां गुरु की मूर्ति स्थापित कर अभ्यास जारी रखा। गुरु द्रोण सदैव उस मूर्ति में प्राण स्वरूप में विराजमान रहते थे और एकलव्य को प्रेरणा दिया करते थे, यह रहस्य केवल एकलव्य और गुरु द्रोण ही जानते थे। सशरीर रूप में कभी सामने न आकर भी एकलव्य को मात्र धनुर्विद्या में ही नहीं अपितु अपना सर्वस्व ज्ञान देकर पूर्ण कर दिया।

प्रस्तुत **'गुरु आत्म स्थापन साधना'** पूज्य द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य को दी गई साधना का परिवर्द्धित रूप है, जिससे साधक गुरु कृपा प्राप्ति के लिए तीव्रता से अग्रसर हो सकें और उन्हें गुरुदेव के सानिध्य का एहसास होना प्रारम्भ हो जाए। एकलव्य ने भी साधना के द्वारा ही गुरु द्रोण की सूक्ष्म उपस्थिति को साकार किया था, आवश्यकता है तो मात्र इस साधना को पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से सम्पन्न करने की।

अभी तक यह साधना गोपनीय ही रही है, परन्तु अब वर्तमान समय को देखते हुए, शिष्यों की तड़फ और बेचैनी का अनुभव करते हुए, उनकी वेदना को समझते हुए ही इस साधना को उजागर किया जा रहा है।

इस साधना को **24.12.98 अथवा शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार, अथवा किसी भी मास की 21 तारीख, अथवा किसी भी मास के 'गुरु श्रद्धाञ्जलि समर्पण दिवस' (शुक्ल पक्ष की नवमी)** से प्रारम्भ किया जा सकता है। स्नान आदि से निवृत्त होकर उत्तराभिमुख हो पूजा स्थल में एक श्वेत वस्त्र बिछाकर सद्गुरुदेव का एक चैतन्य चित्र स्थापित करें। चित्र ऐसा हो, जिसे आप स्नान करा सकें, विधिवत पूजन कर सकें, तिलक लगा सकें, ऐसा भव्य चित्र हर समय आपके पूजा स्थान में स्थापित रहे। इस चित्र

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

के साथ ही सिद्धाश्रम चेतना युक्त 'गुरु आत्म यंत्र' भी स्थापित करें। उसके बाद सद्गुरुदेव के ललाट, कान, कण्ठ, हृदय स्थान, नाभि, दोनों भुजाओं पर चन्दन से तिलक करें। यह तिलक बिन्दी स्वरूप हो, तत्पश्चात् गुरु चित्र पर सुगन्धित माल्यार्पण करें। तदनन्तर निम्न मंत्र का १०५ बार उच्चारण करते हुए गुरु चित्र और यंत्र पर अक्षत चढ़ाते हुए गुरुदेव का आवाहन करें।

आवाहयामि आत्म स्वरूपं, आवाहयामि प्राण स्वरूपं। आवाहयामि मम देह चिन्त्यं, गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं ॥

अब आप अपने सामने एक कटोरी में चन्दन लेकर उसे अपने शरीर के अंगों (ललाट, कान, कण्ठ, हृदय स्थान, नाभि, दोनों भुजाओं) पर लगाएं और निम्न मंत्र का उच्चारण करें। इन मंत्रों के उच्चारण के साथ ही गुरुदेव को अपने हृदय स्थान पर विराजमान होने का भाव रखें—

ॐ कूर्माय नमः, ॐ आधार शक्तये नमः, ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ धर्माय नमः, ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ सवित्रात्माय नमः, ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः, पंचाशर्णबीजाढ्यकर्णिकायै नमः, ॐ वैराग्याय नमः, ॐ अनेश्वर्याय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः, ॐ आनन्दकन्द कन्दाय नमः, ॐ प्रकृतमयपत्रेभ्यो नमः।

चूंकि आप दीक्षित शिष्य हैं, और नित्य गुरु मंत्र का जप करते हैं, अतः मंत्र जप से पूर्व जिस माला से गुरु मंत्र जप करते हैं, उस माला से गुरु मंत्र की ४ माला जप करें, इसके बाद गुरु आत्म स्थापन मंत्र की 'गुरु सिद्धि माला' से २१ माला गुरु आत्म स्थापन मंत्र का जप करें।

॥ ॐ ह्रीं क्लीं गुरुत्व आत्मैक्यं ह्रीं फट् ॥

Om Hreem Kleem Gurutva Aatmaikyam Hreem Phat

यह २१ दिन की साधना है और इसे प्रातः काल अथवा रात्रि में ही सम्पन्न करना चाहिए। मंत्र जप के बाद साधक को दस मिनट शवासन में लेट जाना चाहिए। ऐसा करने से मनोरम प्राकृतिक दृश्य दिखाई दे सकते हैं। इस साधना से अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं।

२१ दिन के बाद माला को जल में प्रवाहित कर दें तथा यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। बाद में भी इस मंत्र का नित्य पन्द्रह-बीस मिनट तक जप करने के पश्चात् शवासन करें। धीरे-धीरे साधक को गुरुदेव की उपस्थिति का अनुभव होने लगेगा, आपके मन में उमड़ रहे प्रश्नों का उत्तर भी मिलने लगेगा, जीवन में साहस और निडरता आ जाएगी।

*यह साधना पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद स्वरूप प्रदान की है। जिसकी साधना सामग्री आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। आप केवल दो पत्रिका सदस्य बनाएं (जो आपके परिवार के सदस्य न हों) और संलग्न पोस्टकार्ड भर कर भेज दें। हम **438/-** (दो पत्रिका सदस्यता शुल्क **195+195/-** डाक व्यय **48/-=438/-**) की वी.पी.पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'गुरु आत्म यंत्र'** और **'गुरु सिद्धि माला'** भेज देंगे और आपके दोनों परिचितों को वर्ष पर्यन्त प्रति माह पत्रिका भेजते रहेंगे।*

ये पुस्तकें तो आपके लिए अत्यधिक उपयोगी हैं...

गुरु व शिष्य के सम्बन्धों की ऐसी अद्भुत विवेचना पहले अन्य किसी ग्रन्थ में की ही नहीं गई है। इन पुस्तकों में अध्यात्म के अनछुए पक्षों को इस प्रकार उतारा गया है, कि पढ़ते ही प्राणों के तार झंकृत होने लगते हैं।

ध्यान धारणा और समाधि

'ध्यान', 'धारणा' और 'समाधि' – इन तीनों विधियों द्वारा जीवन में अपूर्व शान्ति एवं आनन्द भर देने की कला को समझाता हुआ अद्वितीय ग्रंथ।

न्यौछावर:96/-

KUNDALINI TANTRA

This book is the real essence of human life. It defines the *Naad-Brahm* in a completely novel way for the first time, and presents an authentic review of the facts regarding the *Kundalini Power*.

Price :240/-

जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाकर, आनन्द के मान सरोवर में लहराने में उतर कर पूर्ण गुरुमय होने और सम्पूर्णता प्राप्त करने हेतु है यह ग्रंथ, जिसका पाठ करना तथा जिसके अनुसार साधना करना ही जीवन का सौभाग्य माना गया है।

न्यौछावर:90/-

निखिलेश्वर सहस्रनाम

MEDITATION

...to realise the totality of life, it is a unique book. Diving deep into its depths one can attain eternal peace, mental upliftment and spiritual enlightenment.

Price :240/-

हर साधु शिष्य का मन हंसे बोले। जब-जब गुरु हृदय कपाट खोले॥

शब्द ब्रह्म है, ज्ञान अमर है, गुरु शाश्वत है और शिष्य जब उस भाव-भूमि पर आकर खड़ा हो जाता है, तब गुरु सब कुछ लुटा देने को तत्पर हो जाता है, शिष्य सब कुछ प्राप्त करने को आतुर हो उठता है, यही तो एकाकार होने की क्रिया है जो पूर्णत्व प्रदान करती है।

मध्य प्रदेश की हृदय स्थली राजधानी भोपाल में जब नवम्बर १९९४ में प्रथम बार अमृत महोत्सव संन्यास दिवस के अवसर पर सम्पन्न हुआ, तो प्रथम बार सद्गुरुदेव ने संन्यास की विशद व्याख्या की और कायाकल्प शक्तिपात किया तो शिष्य चकित रह गए, साधना का जो वितामण रूप उपस्थित हुआ, वह हृदय में अमृत प्रवाहित करने के निमित्त ही था। आज तक तो भोपाल में पांच बार दुए तीन बार जन्मोत्सव सम्पन्न हुआ और दो बार सन्यास दिवस, हर बार गुरुदेव ने अपने ज्ञान कुंज से शिष्यों को सम्यक् ज्ञान प्रदान किया, वह प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग की, कि सारे शिष्य साधक यह सोचने लगे, कि भोपाल पर पूज्य गुरुदेव की यह विशेष अनुकम्पा कैसे रहती है?

गुरुदेव ने कहा है, कि मेरे लिए तो हिमालय की कन्दराएं और बम्बई की अट्टालिकाएं दोनों समान हैं, मैं तो सदैव हर स्थान पर उसी भाव में रहता हूं, लेकिन जब-जब भोपाल आया हूं, तो मुझे यहां शिष्यों का प्यार विशेष रूप से प्राप्त हुआ है और मैं प्यार का भूखा हूं, मुझे प्यार देते रहो और मुझसे सब कुछ लेते रहो।

भोपाल में आयोजित विभिन्न शिविरों में पूज्य सद्गुरुदेव द्वारा उच्चारित कुछ विशेष अंश प्रस्तुत हैं –

- संन्यास तो जीवन में अद्भुत संस्कार लाने की व्यवस्था है, अपने आप को शुद्ध करने का उपाय है, जिससे की यह प्रस्फुटित भाव, स्वास्थ्य होकर, अपनी ताजगी, अपना पूरा सौन्दर्य प्रकट करे, संन्यास अपने आपका स्वनिर्माण करने की प्रक्रिया है, जिसमें यह बन्धन नहीं है, कि आप क्या थे संन्यास तो वह तत्व है कि आप क्या बनते जा रहे हैं, संन्यास तो अन्तर्लोक में अखण्ड ज्योति जगाने की प्रक्रिया है।
- गृहस्थ मर सकता है, संन्यासी कभी मरता नहीं, संन्यासी व्यूहताओं में जीवित नहीं रहता, वह किसी से कुछ मांगता नहीं, वह सीधे ब्रह्मपद को प्राप्त करता है।
- और मेरे संन्यास का अर्थ यह नहीं कि मैं आपको भगवे वस्त्र पहनाना चाहता हूं, मैं तो आपको अधिक से अधिक तेजस्वी बनाना चाहता हूं, अधिक से अधिक सम्पन्न बनाना चाहता हूं, जिससे हृदय में कोई कमी न रहे।
- जीवन में जो भी करो आप सभी शिष्य साधक अद्वितीय बनो, सामान्य जीवन जीना तुम्हारे लिए उचित नहीं है, क्योंकि सामान्य जीवन जीने के लिए तुम पैदा नहीं हुए हो।
- कोई देवता पैदा नहीं होता, वह तो अपने जीवन में अपने कार्यों द्वारा देवत्व प्राप्त करता है। जन्म आपके हाथ में नहीं था, लेकिन जन्म लेकर बड़े आपको सद्गुरुदेव मिल जाते, तो आप अद्वितीय बन सकते हैं।
- काया उसको कहते हैं, जो नष्ट होती है, सड़ जाती है, जिसकी गति मिट्टी में समाप्त होने

की ही है। 'कल्प' कहते हैं देह से ऊपर उठकर अपने आपको परिवर्तित कर देने की क्रिया को और आप कल्प वृक्ष के नीचे खड़े हैं।

❖ आज आदमी के पास ज्ञान और चेतना नहीं रही, और चेतना नहीं रही तो देवता भी उसके नियंत्रण में नहीं रहे। यदि मंत्र सही हैं, उच्चारण सही है, भाव सही है, तो किसी भी देवता का आवाहन कर प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

❖ संन्यासी कभी मरता ही नहीं है, क्योंकि उसके हृदय में अमृत होता है, मैं तो उस समुद्र में कूदा हूं और जानता हूं कि उसमें कितना आनन्द है, क्योंकि वह हंस बनने की क्रिया है।

❖ देह में रहते हुए भी देह से परे हट कर जीवन को देखने की प्रक्रिया ही आपको सत्य बोधने को बाध्य करेगी, तभी आप अपने जीवन का सही अर्थ समझ सकेंगे, अन्यथा जीवन सम्बन्धों की उलझन में उलझ जाएगा और आप अपने जीवन में कुछ नया नहीं कर सकेंगे।

❖ जब मैं अपने गुरुदेव के पास गया, तो उन्होंने कहा, कि तुम मृत्यु को प्राप्त हो जाओ, मृत्यु का अर्थ है – तुम्हारा भय, तुम्हारी चिन्ता, तुम्हारे कष्ट, तुम्हारे मौत का विष। जब तक यह समाप्त नहीं हो जाता, तब तक जीवन शुद्ध अमृतमय नहीं बन सकता . . . और मैं यही बात सिखाने के लिए, तुम्हारे जीवन में उतारने के लिए बार-बार भोपाल आया हूं, चाहे वह आप मेरा जन्म दिवस हो या संन्यास दिवस।

❖ 21 अप्रैल 98 को उन्होंने भोपाल में कहा – यह मेरा जन्म दिवस केवल प्रसन्न होने का अवसर नहीं है, तुम्हें मेरे साथ बराबर की मात्र भूमि पर खड़ा होना है, मेरे विचारों के साथ तुम्हें जुड़ना है, समय कम है, मैं रहूं या न रहूं मेरे विचार तुम शिष्यों के माध्यम से सर्वत्र प्रकाशमान होंगे। मैं तो जिस रूप में चलता रहा हूं, चलता रहूंगा, मेरी यात्रा अविरल, अविचल है। मेरे लिए जीवन में विश्राम नहीं है, शिष्य धर्म सृष्टि का पवित्रतम स्थान है और सब शिष्य शिष्य धर्म की ओर बढ़ेंगे ही।

आज ये शब्द कितने महान बन गए हैं, उन्होंने भोपाल के माध्यम से पूरे आर्यावर्त को एक सन्देश दिया। कुछ विशेष बातें कहने के लिए उन्होंने भोपाल को ही चुना।

और भोपाल में हर अवसर पर शिष्यों का उत्साह उसी लय में रहा, मानो तेज गति से उफनती बहती नदी समुद्र में विलीन हो लेने के लिए बेचैन हो, ऐसा लगता था मानो शिव के विरह में आतुर प्रिया अपने प्राण-प्रिय गुरुदेव से मिलने को बेचैन हो।

वह भूमि पवित्र हो जाती है, जहां हजार-हजारों शिष्य मूर्ति साधना करते हैं, पूजन करते हैं और भोपाल में भी हजारों हजारों साधकों ने तपस्वी बनकर साधनाएं ही तो सम्पन्न की हैं।

भोपाल के हर आयोजन में समय का तो भान ही नहीं रहता था, पूरे पूरे रात साधक बैठे हैं, साधनाएं सम्पन्न हो रही हैं, गुरुदेव अमृत वर्षा कर रहे हैं और शिष्य समुदाय आप्लावित हो रहा है।

इस बार पुनः भोपाल में ६-७ नवम्बर १९९८ को संन्यास - समर्पण दिवस के अवसर पर उस प्रत्येक रहस्य को समझने का कार्य करेंगे। यह वसुंधरा मैदान जीवन में विजय पथ खोलने का स्थान बन चुका है, यह ऊर्जावान स्थान एक पवित्र भूमि है जहां कोई भी भाव अधूरा नहीं रह सकता।

शिविर तो एक माध्यम है जहां एकत्र होकर सद्गुरुदेव द्वारा प्रदत्त प्रेरणादायक कार्य को करने का संकल्प हम ले सकें, और संकल्प लेकर उस कार्य पर आगे बढ़ते रहें, उस मार्ग पर बढ़ते हुए आगत कार्यों की समीक्षा करते रहें कि हम सन्मार्ग पर किस कदम आगे बढ़े हैं।

भोपाल में अरविन्द सिंह और साधना सिंह ने अपने गुरुभाइयों के साथ जो अनेक आयोजन सम्पन्न किए हैं, उन सभी आयोजनों में पूर्ण रूप से सन्यास और संकल्प भाव ही था और भाव पुनः उसी विनय भाव से ६-७ नवम्बर को आगत है, कि प्रत्येक शिष्य का जीवन सफल हो सके और गुरुदेव द्वारा दिए गए मंत्रों को पूर्ण रूप से हृदयंगम करते हुए साधनारत रहते हुए जीवन को पूर्णत्व दे सकें।

आप स्वयं भोपाल की मात्र भूमि पर देखेंगे, कि पूज्य गुरुदेव हमारे बीच से गए नहीं हैं, वे आज भी सिद्धि स्वरूप में स्थित हैं और अब उनके लिए भूमि स्थान नहीं रही, वे भूमि से ऊपर स्थान पर स्थित होकर सभी शिष्यों को, साधकों को और अधिक प्राणवान ऊर्जा संचारित कर रहे हैं।

जब विश्वामित्र ने लक्ष्मी को आबद्ध किया

– रघुवीर सिंह राणा

बात उन दिनों की है, जिन दिनों विश्वामित्र साधना में लम्बे अरसे से लगे हुए थे। उनकी जिन्दगी में एक ऐसा भी दौर आया जब वे अभावों से पीड़ित हो उठे।

ऐसे ही समय में एक दिन उनके एक शिष्य ने आकर बताया – 'गुरुदेव! आज आश्रम में आटा खत्म हो चला है। गांव के लोग अकाल पीड़ित होने के कारण भूखे मर रहे हैं। कहीं से भिक्षा उपलब्ध नहीं हो रही। भिक्षा के लिए गए आश्रम के ब्रह्मचारी खाली हाथ लौट आए हैं।'

विश्वामित्र को बड़ा क्रोध आया। उनको आशा भी नहीं थी, कि उन्हें अपने जीवन में कभी ऐसा भी समय देखना पड़ेगा। वे एक राजा के पास गए। राजा आसन से खड़ा हो विश्वामित्र के श्री चरणों में साष्टांग लेट गया। आवभगत के बाद विश्वामित्र ने अपने आने का प्रयोजन बताया, तो राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो गया – 'हे ऋषिवर! मेरे राज्य में आवश्यक कर से ली गई सम्पत्ति के अलावा आपको कोई और सम्पत्ति नजर आती हो तो बतावें, मैं आपको सहर्ष दे दूंगा।

लेकिन प्रजा के खून-पसीने का पैसा मैं बिना प्रजा की अनुमति के आपको भला कैसे दे सकता हूं और फिर मैं स्वयं प्रजा का सेवक होने के नाते यह अनाधिकार चेष्टा कैसे कर सकता हूं। उस धन की अधिकारिणी मेरी प्रजा है। मैं तो मात्र उसका संरक्षक, पालक और सेवक हूं। बात एकदम सत्य थी। विश्वामित्र निरुत्तर हो वापस लौट गए।

इस प्रकार वे कई राजाओं के पास गए, लेकिन हर जगह से वे निराश ही लौट आए। उनकी वहां आवभगत तो बहुत की गई, मगर धन देने में हर किसी ने अपनी असमर्थता दिखा दी। वे समझ गए, कि विपत्ति में कोई काम नहीं आता।

ठीक 12वें दिन उसके सामने एक आठ साल की कन्या प्रकट हुई।

"तुम कौन हो बेटी?" विश्वामित्र ने पूछा।

"आपने किसका संकल्प लिया था?"

लड़की ने पूछा तो विश्वामित्र चौंके और अपने एक शिष्य को आज्ञा दी – "अरे अर्यमन! जरा रस्सी लाना।"

और जब अर्यमन रस्सी लेकर आया, तो विश्वामित्र ने उसे उस कन्या को बांधने का आदेश दिया। यह विशुद्ध चक्र से उठाए संकल्प का ही करिश्मा था, कि लक्ष्मी को विष्णु का पांव दबाना छोड़ आकाश मण्डल की 32 परतें भेदकर विश्वामित्र के सामने प्रकट होना पड़ा।

अब वे ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के पास पहुंचे और उनसे लक्ष्मी आबद्ध मंत्र की दीक्षा ली, उसकी साधना में बैठ गए। ग्यारह दिन तक वे अपने संकल्प को मजबूत करते रहे। योगी का संकल्प बड़ा शक्तिशाली होता है। वह चाहे तो संकल्प मात्र से ब्रह्माण्ड को कम्पायमान कर सकता है। संकल्प और साधना का योग दुःसाध्य कार्य को भी सरलता से सम्पन्न कर सकता है, बस आवश्यकता है कि संकल्प विशुद्ध चक्र से लिया गया हो।

मूलाधार चक्र सिद्ध होने से पृथ्वी पर सम्बन्धित सभी प्रकार के धन, दौलत, वैभव प्राप्त हो जाएगा, लेकिन वह सब भी यहीं रह जाएगा।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

स्वाधिष्ठान चक्र के सिद्ध होने पर मूलाधार और स्वाधिष्ठान दोनों चक्रों की जाग्रति के लाभ मिलने लगेंगे। वह सम्पूर्ण जल तत्व पर अधिकार कर लेगा।

अनाहत या नाभि चक्र पर अधिकार प्राप्त करने के बाद साधक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, सूर्य, चन्द्र, तारा मण्डल, ग्रह, उपग्रह पर अधिकार प्राप्त कर लेता है। वह इस चक्र के संकल्प मात्र से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हलचल मचा सकता है। जयद्रथ वध के समय कृष्ण ने कुछ क्षण के लिए संकल्प इसी चक्र से लिया था।

विशुद्ध हृदय चक्र के सिद्ध हो जाने पर साधक सम्पूर्ण जगत का प्रेम जीत लेता है। सारा संसार उसके प्रेम में दीवाना हो जाता है। कृष्ण के पीछे गोपियों का पागल होना इसी चक्र का कमाल था।

विशुद्ध चक्र के सिद्ध होने पर साधक हर अदृश्य वस्तु, देवी-देवता, गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, नाग सबको जीत लेता है। इस चक्र से लिए गए संकल्प से देवी-देवता व्यक्ति के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं। विश्वामित्र ने भी लक्ष्मी का संकल्प इसी चक्र से लिया था, जिसमें आज ११ दिन बीत चुके थे।

ठीक १२ वें दिन उसके सामने एक आठ साल की कन्या प्रकट हुई।

"तुम कौन हो बेटी?" विश्वामित्र ने पूछा।

"आपने किसका संकल्प लिया था?"

लड़की ने पूछा तो विश्वामित्र चौंके और अपने एक शिष्य को आज्ञा दी –"अरे अर्यमन! जरा रस्सी लाना।"

और जब अर्यमन रस्सी लेकर आया, तो विश्वामित्र ने उसे उस कन्या को बांधने का आदेश दिया। यह विशुद्ध चक्र से लिए गए संकल्प का ही करिश्मा था, कि लक्ष्मी को विष्णु का पांव दबाना छोड़ आकाश मण्डल की ५२ परतें भेदकर विश्वामित्र के सामने प्रकट होना पड़ा था।

उधर विष्णु योगनिद्रा से उठे, तो वहां लक्ष्मी को अनुपस्थित पाया। नारद को बुलाया गया, परिणामस्वरूप नारद के बताने पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों साधु वेश में विश्वामित्र के सामने जाकर हाथ जोड़कर खड़े हो गए। विश्वामित्र तो पहले से ही जानते थे, कि अब त्रिमूर्ति को आना ही पड़ेगा।

विश्वामित्र ने कहा, कि आप सब लोग अपने-अपने असली रूप में आकर दर्शन दें, तब मैं लक्ष्मी को मुक्त करूंगा और वह भी इस वचन के साथ, कि भविष्य में लक्ष्मी मेरा साथ छोड़कर नहीं जाएगी।

तीनों अपने असली रूप में आए और उनको दर्शन दे कर, लक्ष्मी को साथ लेकर चले गए।

लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

लक्ष्मी से सम्बन्धित हजारों विधियां एवं प्रयोग हैं, किन्तु यह प्रयोग अपने आप में सर्वथा विलक्षण है। यदि किसी व्यक्ति के घर में लक्ष्मी का आगमन तो धीरे-धीरे हो रहा हो, परन्तु गमन हो रहा हो तीव्रता से, तो ऐसी स्थिति में यह प्रयोग अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है। कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही है, कि व्यय से अधिक आय हो तो जीवन में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है अन्यथा जीवन तो व्यतीत हो ही रहा है। बलपूर्वक बहार लाकर जीवन में उमंग भर देने में पूरी तरह सहायक है यह प्रयोग।

इस प्रयोग में आवश्यक यंत्र है, **'लक्ष्मी आबद्ध यंत्र'** जो कि पूर्णतः चैतन्य तथा प्राण प्रतिष्ठित हो।

इस यंत्र को कमल पुष्प पर अथवा किसी वस्त्र पर कुंकुम से कमल पुष्प की आकृति बना कर उस पर यंत्र स्थापित करें। फिर मौली (कलावा) से आठ बार यंत्र सहित उस पुष्प अथवा वस्त्र जो आपने यंत्र के नीचे बिछाया है, उसके साथ ही बांध दें।

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

मंत्र

॥ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ आवाहयामि नमः॥

Om Shreem Shreem Mahaalakshmee Aagachchh Anvaahayaami Namah

लक्ष्मी स्वरूपमात्म परं वदेत्यं,
लक्ष्मीर्वतेव वदतं धन-धान्य रूपं।
सत्यं वदाम्यवदतं परमं पवित्रं,
आगच्छ लक्ष्मी मम देहदात्म॥

इसके पश्चात् यंत्र पर दृष्टि एकाग्र करें (त्राटक करते हुए) मन ही मन लक्ष्मी से प्रार्थना करें, कि आप मेरे जीवन में पवित्रता, समृद्धता, धन-धान्य, सुख सौभाग्य ऐश्वर्य और स्थिरता दें।

यह प्रयोग आप **7.12.98** को करें, उस दिन पुष्य नक्षत्र एवं बुधोदय है।

यह प्रयोग आप सायं ५ बजकर ३८ मिनट से प्रारम्भ करें।

यदि आप इस दिन यह प्रयोग नहीं कर सकें, तो आप किसी भी माह के **'पुष्य योग'** में इसे सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट – 160/-

अग्नि परीक्षा

हमने प्रेम तो किया पर क्या इस प्रेम की अग्नि परीक्षा दी है, अग्नि परीक्षा तो अब आरम्भ हुई है, अब तक तो पूज्यपाद सद्गुरुदेव हमें अपने प्रेम से आप्लावित करते रहे, पर अब वे देखना चाहते हैं, कि उनके प्रेम में कौन कितना भीगा है ?

कुछ कटी-कटी सी रहने लगती है . . . और एक कोने में महफिल से थोड़ा अलग हट कर बैठने लग जाती है वह . . . मन कुछ खिन्न सा, कुछ खोया सा रहने लगता है उसका . . . भोजन में भी स्वाद नहीं रह जाता और हर पल, हर क्षण जब उन्हीं की याद सताने लगती है . . . तो शायद यही कहते हैं, कि वह बावरी हो गई है, या उसे किसी से प्रेम हो गया है।

अपने प्रियतम के साथ बिताए क्षणों को याद करती हुई वह भविष्य सम्बन्धी अनेकों रंगीन ख्वाब देखती है, सुनहरे सपनों में महल बनाती है, और अपनी छोटी सी दुनिया में खोई रहती है, जिसमें खुद वह होती है और उसके प्रियतम होते हैं . . . आंखों के सामने दृश्य घूमते रहते हैं, क्रम चलता रहता है और घण्टों बीत जाते हैं।

भविष्य को लेकर जिसके साथ रंगीन सपने सजोए थे, जब वही बीच रास्ते में, मझधार में छोड़कर, हाथ झटक कर चल दे, तो जीवन में कुछ करने को शेष नहीं रह जाता, सब व्यर्थ सा लगने लगता है, एक विरक्ति हो जाती है, कुछ करने को जी नहीं करता, जीवन भर साथ निभाने के सब वायदे बेमानी से लगने लगते हैं, बिखरने लगती है वह . . . बस एक निर्जीव देह, एक प्राण विहीन देह मात्र ही रह जाती है, जिसको ढोने का अब कोई प्रयोजन दिखाई नहीं पड़ता! अपने जीवन को समाप्त कर देने की इच्छा भी कई बार उसके मन में रह-रह कर जोर देती है . . . और एक तूफान सा मचा रहता है, जैसे सारी दुनिया ही उजड़ गई हो . . .

यही प्रेम होता है, यही समर्पण होता है प्रेमिका का अपने प्रेमी के प्रति और यही प्रेम होता है शिष्य का अपने गुरु के प्रति भी। शिष्य प्रेमिका ही तो है, जिसके जीवन में गुरु के अलावा अन्य कोई नहीं होता है, कोई अन्य बिम्ब होता ही नहीं है . . .

से धड़ाम से गिर कर अपने प्राण त्याग देती है . . . और यही कई शिष्यों के मन में कौंध रहा है, कि अब जीने का हेतु ही क्या है? क्यों न हम प्राणों का अन्त कर दें? क्यों न हम समाप्त कर दें विरह पीड़ा से छलनी हुए इस शरीर को . . .

. . . लेकिन गौर कर एक बार देखें, तो क्या प्रेमी के साथ अपने प्राणों का अन्त कर देना ही प्रेम की अन्तिम स्थिति है? क्या यही प्रेम का एकमात्र स्वरूप है?

हवा में उड़ता हुआ कुरंग जब मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो मादा कुरंगी भी उसी क्षण अपने पंख समेट लेती है और सैकड़ों फिट की ऊंचाई से धड़ाम से गिर कर अपने प्राण त्याग देती है।

और यही विचार कई शिष्यों के मन में कौंध रहा है, कि अब जीने का हेतु ही क्या है?

क्या प्रेमी के साथ अपने प्राणों का अन्त कर देना ही प्रेम की अन्तिम स्थिति है? क्या यही प्रेम का एकमात्र स्वरूप है?

और जब यह पता चलता है, कि वह बिम्ब, वह मुस्कराता हुआ चेहरा, वह आशीर्वाद मुद्रा में उठा वरद हस्त, अब दूर जा चुका है, तो जीवन कटे पेड़ की तरह मृतप्राय हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि शिष्य और गुरु का सम्बन्ध जितनी गहराई लिए होता है, उतना गहरा अन्य कोई सम्बन्ध होता ही नहीं, पति-पत्नी का भी नहीं, प्रेमी-प्रेमिका का भी नहीं, पिता-पुत्र का भी नहीं . . . संसार का कोई भी सम्बन्ध इतना प्रगाढ़ और पवित्र नहीं होता, इस सम्बन्ध में कुछ लेने-देने की क्रिया तो होती ही नहीं . . . इसमें तो बस एक-दूसरे को देखते रहने की ही इच्छा रहती है . . . और इसे प्रेम ही तो कहते हैं।

कुरंग एक पक्षी होता है, जो हिमांचल में पाया जाता है। हवा में उड़ता हुआ कुरंग जब मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो कुरंगी भी उसी क्षण अपने पंख समेट लेती है और सैकड़ों फिट की ऊंचाई से एक-एक शिष्य को सींचा है, अपने पुत्र-पुत्रियों की तरह। यदि वे हमें देख रहे होंगे, तो उन्हें बहुत पीड़ा होगी हमें व्यथित होता देख, हमें हताश व निराश होता देख कर। बहुत उम्मीदों और आशाओं से उन्होंने ये पौधे रोपे थे, कि आने वाले समय में वे वृक्ष बनेंगे और विश्व को शीतल छाया प्रदान करेंगे। क्या उनके स्वप्नों पर पानी फेर देना उचित है?

. . . और यदि यह उचित है, तो हमारा निराश होना भी उचित है, हमारा दुःखी होना भी उचित है, हमारा टूट जाना, बिखर जाना और समाप्त हो जाना भी उचित है।

पर इस तरह शोकाकुल व दुःखी होने से जीवन का बल समाप्त हो जाएगा, कुछ करने का हौसला समाप्त हो जाएगा। अपने शिष्यों को तो उन्होंने हिम्मत के हारे लोगों को सान्त्वना देने के लिए तैयार किया है, उनके दुःखों को दूर करने का सन्देश

बहुत आशाओं से उन्होंने ये पौधे रोपे थे, कि आने वाले समय में वे वृक्ष बनेंगे और विश्व को शीतल छाया प्रदान करेंगे। क्या उनके स्वप्नों पर पानी फेर देना उचित है? . . . और यदि यह उचित है, तो हमारा निराश हो जाना भी उचित है।

. . . यदि हम स्वयं ही व्यथित हो जाएंगे तो वह विशाल कार्य कौन करेगा, जिसे पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी हमारे कन्धों पर छोड़ गए हैं।

लिया है . . . लेकिन यदि हम स्वयं ही व्यथित हो जाएंगे तो वह विशाल कार्य कौन करेगा ये कार्य जिसे पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी हमारे कन्धों पर छोड़ गए हैं।

सूर्य अस्ताचल की ओर अग्रसर था, किन्तु वेदना से व्याकुल . . . उसके मन में छटपटाहट थी – मेरे जाने के बाद कौन इस धरा के अन्धकार को दूर करेगा?

मन की बेचैनी जब बहुत अधिक बढ़ गई, तो उसने यह बात अपने निकटस्थ लोगों के सामने रखी, सभी मौन रह गए, क्योंकि वे जानते थे, कि हमारे अन्दर इतनी क्षमता नहीं है, कि इस गहन अन्धकार को दूर कर सकें।

थोड़ी देर प्रतीक्षा करते-करते सूर्य को हताशा होने लगी, उसने पुनः अपनी बात रखी – कल प्रातः जब मैं आऊंगा, तब तक कोई तो एक ऐसा व्यक्तित्व मेरे सामने आए, जो इस धरा के अन्धकार को दूर कर सके, क्या प्रातः से सायं तक किया गया मेरा अथक परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा?

तभी एक नन्हा सा दीप खड़ा हुआ और बोला – आपको निराश और चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, मैं हूं न! जब तक मेरे अन्दर सामर्थ्य है तब तक, अपनी आखरी सांस तक इस अन्धकार को दूर करूंगा ही।

– हां! यह अवश्य है, कि मेरे अन्दर आपके जितनी प्रचण्डता, दुर्धर्षिता एवं तेजोमयता नहीं है, किन्तु आपको यह वचन देता हूं, कि अन्धकार का साम्राज्य इस धरा पर पूरी तरह से होने नहीं दूंगा।

. . . और मैंने तो लाखों-करोड़ों सूर्य का निर्माण किया है, मैंने छोटे-छोटे टिमटिमाते दीपक नहीं बनाए हैं, मुझे विश्वास है, कि मेरे ये समस्त सूर्य मिलकर इस धरा पर अन्धकार का प्रवेश नहीं होने देंगे। यही मेरी इच्छा है, यही मेरी आज्ञा है।

गुरुदेव ने अनेक अवसरों पर प्राणांश कह कर सम्बोधित

अस्ताचल की ओर अग्रसर सूर्य ने कहा – कल प्रातः जब मैं आऊंगा, तब तक कोई तो एक ऐसा व्यक्तित्व मेरे सामने आए, जो बस धरा के अन्धकार को दूर कर सके, क्या प्रातः से सायं तक किया गया मेरा अथक परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा?

एक नन्हा सा दीप खड़ा हुआ और बोला – आपको निराश और चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, मैं हूं न! जब तक मेरे अन्दर सामर्थ्य है तब तक, अपनी आखरी सांस तक बस अन्धकार को दूर करूंगा ही।

विपरीत घड़ियों में शत्रु और मित्रों की पहिचान हो जाती है, और यह समय है विपरीत घड़ियों का . . . मतलबी यार वे होते हैं, जो अपने स्वार्थों से ही जुड़े रहते हैं, सम्बन्ध कायम रखते हैं . . . और प्रतिकूल समय में पीठ दिखा देते हैं . . . परन्तु गुरुदेव ने तो शिष्यों का निर्माण किया है, उनके शिष्य ऐसे नहीं हैं . . . कितनी भी विपरीत परिस्थिति आए, वे अपने इस विशाल परिवार को निरन्तर सुदृढ़ बनाने में ही प्रयासरत रहेंगे।

को अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार कहा है . . . 'परिवार' के नाम से पुकारा है, 'संस्था' के नाम से नहीं पुकारा। जब उनका एक-एक शिष्य इस विशाल परिवार का एक अविभाज्य अंग बन चुका है, तो प्रत्येक शिष्य का यह दायित्व भी बनता है, कि वह परिवार के मुखिया का साथ दे, पूरे तन-मन से। पूज्यपाद सद्गुरुदेव अब अपने तीनों पुत्रों – श्री नन्दकिशोर जी, श्री कैलाशचन्द्र जी व श्री अरविन्द जी को इस परिवार का मुखिया बना गए हैं, तो यह हमारा कर्त्तव्य है, कि हम उन्हें पूरी तरह से सहयोग दें, जिस तरह हम पूज्य गुरुदेव को देते थे; उनकी आज्ञाओं को शिरोधार्य करें, जिस तत्परता से पूज्यपाद सद्गुरुदेव की आज्ञा का पालन करते थे, यही हमारा शिष्यत्व होगा, यही समर्पण होगा।

शास्त्रों में उल्लेख है, कि **बड़ा भाई पिता समान ही होता है, पिता के न रहने पर छोटे भाइयों की जिम्मेवारी भी बड़े भाई को ही लेनी पड़ती है, उन्हें उसी तरह पालना पड़ता है, पढ़ाना-लिखाना पड़ता है, जिस तरह पिता करते थे। परम पूज्य सद्गुरुदेव की सशरीर अनुपस्थिति में अब तीनों गुरुदेव हमारे लिए पिता समान ही तो हैं। अपनी हर उस बात को उनके समक्ष रखने का हमें अधिकार है, क्योंकि वे मुखिया हैं उस परिवार के जिसके हम एक सदस्य हैं।**

विपरीत घड़ियों में शत्रु और मित्रों की पहिचान हो जाती है, और यह समय है विपरीत घड़ियों का . . . मतलबी लोग वे होते हैं, जो अपने स्वार्थों से ही जुड़े रहते हैं, सम्बन्ध कायम रखते हैं . . . और प्रतिकूल समय में पीठ दिखा देते हैं . . . परन्तु गुरुदेव ने तो शिष्यों का निर्माण किया है, उनके शिष्य ऐसे नहीं हैं . . . वे हर परिस्थितियों में सदैव इस विशाल परिवार के साथ रहेंगे और अपने परिवार से अनेक भटके पथिकों को भी आश्रय प्रदान करेंगे, परिवार का विस्तार करेंगे, पूज्यपाद सद्गुरुदेव के स्वप्न को साकार करेंगे। प्रत्येक शिष्य को यह बता देना है, कि वह हर स्थिति में साथ है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

. . . और यह सब तब हो सकेगा, जब एक संगठन होगा। कहते हैं, कि एकता में बल होता है, जब हम सभी गुरुभाई एक साथ खड़े होकर तीनों गुरुजी के निर्देशन में उन्हें पूर्ण सहयोग देते हुए, उन्हीं में अपने सद्गुरुदेव को देखेंगे तभी जाकर हम कुछ ठोस कार्य कर पाएंगे . . .

हमने प्रेम तो किया पर क्या इस प्रेम की अग्नि परीक्षा दी है, अग्नि परीक्षा तो अब आरम्भ हुई है, अब तक तो पूज्यपाद सद्गुरुदेव हमें अपने प्रेम से आप्लावित करते रहे, पर अब वे देखना चाहते हैं, कि उनके प्रेम में कौन कितना भीगा है ? हमें मिलकर कार्य करना है, करते रहना है, प्रत्येक शिविरों में भाग लेना है, शिविरों का आयोजन करना है, दीक्षाएं व प्रयोग करते रहने हैं . . . क्योंकि आने वाले निकट भविष्य में बहुत कुछ घटित होने वाला है, उसके लिए प्रत्येक शिष्य को डट कर तैयार रहना है, और यह शक्ति हमें इन्हीं दीक्षाओं व साधनाओं से प्राप्त होगी, जो कि आने वाले शिविरों में तथा दिल्ली व जोधपुर में सुलभ हो सकेगी।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव के कार्यों को कैसे आगे बढ़ाना है, आने वाले समय में क्या करना है, इन सभी कार्यों का निर्देश तीनों गुरुजी के माध्यम से पत्रिका द्वारा, पत्र द्वारा या शिविरों में मिलता रहेगा।

हो सकता है, कि साधनाओं में मन न लगे, आगे कुछ करने की इच्छा न हो, मन का हौसला समाप्त हो गया हो, सब कुछ बेकार लगने लगा हो, परन्तु विरह की इस आग में जलते हुए भी मुस्कराते रहना है, अपने अश्रुओं को पीकर दृढ़ता से खड़े रहना है . . . अपने प्रिय के प्रति, अपने सद्गुरुदेव के प्रति ऐसी निष्ठा, ऐसा प्रेम कुरंगी से भी ऊपर दर्जे का प्रेम है, जिसमें प्रेमी के समाप्त होने पर मादा कुरंगी भी अपने प्राणों को त्याग देती है। उनकी यादों में तड़प-तड़प कर रह जाते हुए भी अपने जोश को कम नहीं होने देना, अपितु जोश को दोगुना कर कार्यरत रहना बहुत कठिन है, परन्तु जो ऐसा कर सकता है, वास्तव में वही सच्चा प्रेमी है . . . प्रेम की अग्नि परीक्षा में खरा उतरा वही परीक्षार्थी है, वही शिष्य है।

चूकसवा

दिव्य महापुरुष जब अपने पंचभौतिक देह को त्याग कर परलोक गमन करते हैं, उस समय उनके शेष बचे हुए कार्यों को पूर्णता शिष्यों द्वारा ही दी जाती है। उनके द्वारा समाज को दिए गए ज्ञान और चेतना को विस्तार देना शिष्यों का ही कर्तव्य होता है। गुरु दक्षिणा के रूप में शिष्यों की अग्नि परीक्षा की घड़ी होती है। भगवान बुद्ध के बाद उनके शिष्य आनन्द ने उनके ज्ञान को विश्व में साकार किया, जिससे आज संसार का एक बड़ा भाग बौद्ध धर्म की उदात्तता से अभिभूत है। इसी तरह परमहंस श्रीरामकृष्ण देव को स्वामी विवेकानन्द ने ही इतिहास पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करके अपनी गुरु-दक्षिणा पूरी की।

भगवत्पाद पूज्य गुरुदेव डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली जी ने अपने पचास वर्षों के अन्तराल में जो साधनात्मक चिन्तन नए समाज के निर्माण के लिए दिया है, उसका उत्तरार्द्ध शेष भाग अब शिष्यों के ऊपर कर्तव्य रूप में स्वतः ही आ गया है। पूज्य गुरुदेव के हजारों-हजारों शिष्य निश्चित रूप से उनके स्वप्नों को साकार करने के लिए सन्नद्ध हैं। तीनों गुरुजी के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार अब समस्त विश्व को नई चेतना देकर, अपना स्वर्णिम इतिहास स्वयं लिखेगा तथा पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली जी के उदाततम साधनात्मक चिन्तन से समस्त विश्व को आलोकित करेगा।

काल ज्ञान दीक्षा

– श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है –

''कालः कालयता महम् कालोऽस्मि लोक क्षय कृत प्रवृद्धः''

यह काल भी सूर्य के वशवर्ती होकर चलता है,

''चक्र वत् परिवर्तन कालः सूर्य वशात् सदा''

अर्थात् भूचक्र में भ्रमण करता हुआ सूर्य जब एक चक्र पूरा कर देता है तो उसे हम एक वर्ष की संज्ञा देते हैं।

इस भूचक्र की १२ राशियों के आधार पर १२ मास, एक मास में ३० दिन, एक दिन में ६० घड़ी, एक घड़ी में ६० पल, एक पल में ६० विपल, एक विपल में ६० प्रतिपल इस प्रकार सूक्ष्मातिसूक्ष्म काल गणना बढ़ती चली जाती है।

यदि हम गहराई से विचार करते हैं, तो स्पष्ट होता है, कि जीवन का एक अदृश्य संचालक है, जिसकी व्यवस्था से यह समय चक्र गतिशील रहता है। काल, जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी समाया हुआ है, यह निःस्पृह भाव से समस्त संसार की क्रिया विधि को देखता रहता है और यह काल ही जीवित प्राणियों का अन्त है, जो इसको देखकर नहीं चलता है, वह तो जीवन के वास्तविक आयाम से दूर भटक जाता है और अपने लक्ष्य से वंचित हो जाता है।

काल को समझना एक कठिन क्रिया है, किन्तु असम्भव नहीं... काल तो अपने महत्व को हर क्षण दर्शाता है। जो इसके महत्व को नहीं समझता है, वह जीवन की गति को भी नहीं समझ सकता है। काल के विशेष क्षण को पहचान कर अपने अनुकूल बना देने के लिए 'काल ज्ञान दीक्षा' का महत्व सर्वोपरि है।

यदि हम इतिहास एवं अपने पुराणों का अध्ययन करें, तो स्पष्ट होता है, कि जितने भी महापुरुष पैदा हुए हैं, उन्हें काल ज्ञान का महत्व ज्ञात था और वे इसके सहारे ही अपने जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण निर्णय करते थे तथा उसके आधार पर अपने विशेष कार्यों को सम्पादित करते थे।

कुछ ही शताब्दियों पूर्व की तो बात है, जब राजा विक्रमादित्य का राज्य था, विक्रमादित्य अत्यन्त प्रसिद्ध राजा हुए हैं। आज सभी जानते हैं, कि उनके नाम से संवत् का नाम भी पड़ा है। यह राजा इतना अधिक प्रसिद्ध क्यों हुआ, इसका मुख्य श्रेय उनके दरबार में उपस्थित ९ रत्नों में से एक रत्न **'वाराहमिहिर'** को जाता है। वाराहमिहिर एक उच्चकोटि के काल ज्ञाता हुए हैं, जो ज्योतिष ज्ञान के श्रेष्ठतम विद्वान माने जाते हैं, उन्होंने काल ज्ञान के विषय पर अनेक प्रामाणिक ग्रंथ लिखे हैं, वे ग्रंथ वर्तमान समय में भी पूर्ण खरे उतरते हैं। जिनके माध्यम से आज भी भविष्य स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है, कि कार्य को किस समय में सम्पन्न करने से इसका क्या फल प्राप्त होगा।

वाराहमिहिर विक्रमादित्य के प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व ही उसके परिणाम को स्पष्ट कर देते थे तथा अपने ज्ञान द्वारा उनको उचित मार्गदर्शन देते थे। विक्रमादित्य को चाहे युद्ध पर जाना हो या यज्ञ करवाना हो अथवा अन्य विशेष कार्य आरम्भ करवाना हो। **वे प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने से पूर्व उनकी सलाह अवश्य लेते थे और उसमें सफल होते थे, क्योंकि वाराहमिहिर के पास अद्वितीय काल ज्ञान सिद्धि थी, जिसके माध्यम से वे भूत तथा भविष्य को दर्पण की तरह देख लेते थे।**

वाराहमिहिर के काल ज्ञान ने ही विक्रमादित्य को एक सामान्य राजा न बनाकर एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व बना दिया। एक प्रकार से कहा जाए, तो विक्रमादित्य कालजयी बनकर रहें, तो यह उनके लिए उपयुक्त शब्द होगा।

आज भी यदि व्यक्ति चाहे तो अपने सम्पूर्ण जीवन काल में कालजयी बनकर रह सकता है। यदि उसे भूत-भविष्य का ज्ञान हो जाए तो वह उसके अनुसार अपने जीवन को दिशा प्रदान कर सकता है। वर्तमान में ही सावधान होकर अपने कार्यों को सफलतापूर्वक सिद्ध कर सकता है तथा भविष्य में आने वाली विपदाओं से, परेशानियों से बच सकता है।

समय का चक्र निरंतर गतिशील है और यदि हम सूक्ष्मता पूर्वक देखें, तो प्रत्येक क्षण की अपने आप में एक अलग सत्ता है, अपने आप में एक अलग महत्व है। जब तक व्यक्ति उस क्षण के महत्व को नहीं पहचान सकेंगे, तब तक समय का महत्व भी हमारे लिए व्यर्थ हो जाएगा।

रावण एक तरफ जहां लंका का राजा था और उसके क्रोध से भूमण्डल कांपता था, वहीं उसने तंत्र और मंत्र के माध्यम से कुछ ऐसी सिद्धियां प्राप्त कर ली थीं, जिसकी वजह से वह आकाश में मुक्त रूप से विचरण कर सकता था। वायु, इन्द्र आदि को वह मनचाहे तरीके से उपयोग कर सकता था, परन्तु उसने भी अन्त में काल के चक्र को मन ही मन प्रणाम करते हुए कहा है, कि

काल को समझना एक कठिन क्रिया है, किन्तु असम्भव नहीं . . . काल तो अपने महत्व को हर क्षण दर्शाता है, जो इसके महत्व को नहीं समझता है, वह जीवन की गति को भी नहीं समझ सकता है। काल के विशेष क्षण को पहचान कर अपने अनुकूल बना देने के लिए 'काल ज्ञान दीक्षा' का महत्व सर्वोपरि है। काल ज्ञान की सिद्धि के लिए यह आवश्यक है, कि हम योग्य गुरु से काल ज्ञान की दीक्षा प्राप्त करने का प्रयास करें।

– मैं सब कुछ करने में समर्थ हो सका हूं, परन्तु समय के मूल्य को, क्षण के महत्व को भली-भांति उपयोग नहीं कर सका हूं। इसलिए आज इस स्थिति में आने के लिए मजबूर हुआ हूं। रावण स्वयं में काल ज्ञान का बहुत अच्छा ज्ञाता था, किन्तु उसके जीवन की विडम्बना यह रही, कि वह उसका उचित उपयोग नहीं कर सका।

राम-रावण युद्ध में जब रावण परास्त होकर भूमि पर गिरा, तो राम ने लक्ष्मण को काल ज्ञान प्राप्त करने के लिए रावण के पास भेजा, तो रावण ने लक्ष्मण को समय के महत्व को समझाते हुए बताया, कि – समय चक्र निरंतर चलता रहता है और जो व्यक्ति अपने जीवन में इस समय चक्र को पहचान लेता है, वह निश्चय ही अपने लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो जाता है। उसकी गति और प्रगति विधाता भी नहीं रोक सकते।

परन्तु यहां पर यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए, कि प्रत्येक क्षण का अपना एक अलग महत्व होता है और प्रत्येक क्षण की स्वतंत्र सत्ता होती है। एक क्षण का दूसरे क्षण से न तो मुकाबला किया जा सकता है और न उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। एक क्षण में किया हुआ कार्य सफल हो जाता है, जबकि दूसरे क्षण में उसी कार्य को करने पर असफलता हाथ लगती है।

रावण ने अपने कथन का उदाहरण देते हुए बताया, कि मैं तुम्हारे इस तथ्य को स्पष्ट कर देता हूं। उसने पड़े-पड़े ही ७ पत्ते उठाकर एक क्रम से रखे और अपने दूसरे हाथ में लोहे की एक सुई लेकर लक्ष्मण को बताया, कि मैं एक विशेष क्षण में इस सुई से इन ७ पत्तों को भेदता हूं और तुम स्वयं प्रत्येक क्षण की स्वतंत्र सत्ता समझ सकोगे।

कुछ ही समय बाद एक निश्चित क्षण पहचान कर रावण ने वह सुई उन जुड़े हुए ७ पत्तों में छेद दी। लक्ष्मण ने आश्चर्य चकित होकर देखा, कि उस सुई के दबाव से पहला पत्ता सोने में परिवर्तित हो गया, दूसरा पत्ता चांदी में, तीसरा पत्ता तांबे में, चौथा पत्ता लोहे में और इस प्रकार सातवां पत्ता केवल पत्ता ही रह गया, उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आ पाया था।

रावण ने कहा – यही क्षणों की पहचान है और उसका महत्व है। इन सातों पत्तों को भेदते समय बहुत ही कम समय लगा था और इन सातों पत्तों के भेदने में समय के अलग-अलग क्षणों का उपयोग हुआ है और तुम स्वयं देख सकते हो, कि एक क्षणांश का महत्व दूसरे क्षणांश से कितना अलग है।

अतः व्यक्ति को क्षणों की पहचान करने की शक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिए और उन क्षणों की पहचान करना, जो पूर्ण रूप से जान लेता है, उसके जीवन में अभाव नहीं रहता है। इसके पश्चात् रावण ने विस्तार से लक्ष्मण को काल ज्ञान दीक्षा प्रदान की।

आज भी हम इतनी महत्वपूर्ण दीक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को एक निश्चित गति देने का श्रेष्ठतम प्रयास कर सकते हैं। इस ज्ञान के लुप्त हो जाने से तो हमारे देश में एक प्रकार से अंधकार सा हो गया था, **किन्तु यह तो पूज्य गुरुदेव जी की कृपा-दृष्टि है, कि उन्होंने इस दुर्लभ ज्ञान का पुनरुत्थान कर अपने ग्रंथों के माध्यम से सभी साधकों को खुले हृदय से इस ज्ञान को बांटा। इस ज्ञान के पुनरुत्थान में पूज्य गुरुदेव जी ने रात-दिन कितना श्रम किया होगा, इसको तो शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं है। किन्तु यही कह सकते हैं, कि उनके हृदय में हमारे देश व संस्कृति के प्रति प्रेम एवं स्नेह का जो सैलाब उमड़ा, उसके फलस्वरूप ही लोगों को नवीन चेतना व ज्ञान प्राप्त हो रहा है और भारतीय संस्कृति के नवीन सृजन का बीजांकुरण हो रहा है।**

काल ज्ञान की कहां आवश्यकता नहीं पड़ती, आज भले ही युग बदल गया हो, पर मानव तो मूल स्वरूप में विद्यमान है ही। उसका स्वभाव, उसके सुख-दुःख, उसके जीवन की चिंताएं, उसके जीवन के कार्यकलाप तो जैसे पहले थे वैसे आज भी विद्यमान हैं, बल्कि आज के युग में मानव जीवन अत्यन्त जटिलताओं से परिपूर्ण हो गया है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रतिस्पर्धा से संचालित हो रहा है। ऐसी दशा में काल ज्ञान मुहूर्त आदि की आज नितांत आवश्यकता है। चाहे वह वैवाहिक संस्कार हो अथवा गृह निर्माण हो, यात्रा हो अथवा अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करने हों, हर कार्य में कार्य सिद्धि होना नितांत आवश्यक है और इनके लिए एक श्रेष्ठ उपाय यही है, कि हमें उन शुभ क्षणों का ज्ञान हो, जिन क्षणों में हम इन कार्यों को सम्पन्न करके अपने जीवन में सफलता अर्जित कर सकें।

शास्त्रों में कहा गया है कि –

गुरुदेवः जगत्सर्वं ब्रह्मा विष्णु शिवात्मकम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरुम्॥

अर्थात् 'यह समस्त जगत गुरुमय है, गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्वरूप हैं। गुरु से बड़ा अन्य कोई तत्व नहीं है। अतः गुरु ही एकमात्र वंदनीय एवं पूजनीय हैं।'

वास्तव में आज आवश्यकता इस बात की है, कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह ज्योतिषी हो, व्यापारी हो, नौकरी-पेशा हो अथवा उच्च प्रतिष्ठान का मालिक हो, उसे प्रयास करके भी ऐसी महत्वपूर्ण दीक्षा सद्गुरु से प्राप्त करनी चाहिए, ताकि वह अपने जीवन के कार्यों को निर्विघ्न रूप से सम्पन्न कर अपने जीवन को पूर्णता दे सके।

हंसा जाए अकेला

कौन होगा इस जगत में जिस की कभी इच्छा न उमड़ी हो, कि एक बार उड़ कर देख ले उस निर्मल आकाश में जिसे चिदाकाश कहा गया है? – क्या होते हैं वे हंस, वे स्थितियां जो इस प्रकार उड़ने के लिए 'हंस' बनते समय समक्ष आती हैं, यही रोचक प्रस्तुति कर रही है रचना अनुग्रहानन्द जी द्वारा लिखित 'अबध गहे सो हंस हमारा' उपन्यासिका की यह दसवीं कड़ी . . .

स्वप्नवत्! . . . हां यही संज्ञा दे सकता हूं मैं उन व्यतीत हुए क्षणों की, क्योंकि पक्षियों के अलसाए पंखों में गति की ध्वनि सूचना दे रही थी कि अब प्रातःकाल सन्निकट है। सूर्यदेव की अभ्यर्थना में समस्त वन प्रदेश चैतन्य हो गया था और आलस्य मुद्रा त्याग वृक्ष अपने आप को चंवर सा डुलाने लग गए थे। वायुदेव रात्रि की निस्तब्धता को अपने साथ बहा कर ले जाने के लिए क्रियाशील हो चुके थे और लताएं अपने पुष्पों को धरा पर बिखेर कर वातावरण को मंगलमय बना रही थीं। अभ्यर्थना के समवेत गान गाते हुए अनेक पक्षी सूर्य देवता का स्वागत करने के लिए पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान कर चुके थे और यह संकेत था, कि अब ज्ञान भूमि से कर्म भूमि में वापस लौटा जाए। यह भी एक 'संध्या' ही थी।

प्रातःकाल एवं सायंकाल की संधि को भी 'संध्या' की ही संज्ञा दी जाती है तथा पुनः सायंकाल समाप्त होने के बाद प्रातःकाल से सन्धि का अवसर भी 'संध्या' ही कहा जाता है। प्रत्येक संक्रमण काल 'संध्या' ही है और प्रत्येक संक्रमण काल के परिवर्तन की ही भांति जीवन में भी नित्य परिवर्तन 'संध्या' ही है। मैं प्रथम बार ऐसा परिवर्तन अनुभव कर रहा था। मुझे लग रहा था, कि आज प्रातः वेला अन्य दिवसों से कुछ भिन्न है। यही भिन्नता का अनुभव वास्तविक 'संध्या' है।

दिवस के उदय के साथ ही साथ सब कुछ पूर्ववत् प्रतीत होता जा रहा था। जिस प्रकार की स्थिति एक दिन पहले थी, वही उस वन–प्रांतर की आज भी थी। बाह्य रूप से कुछ भी परिवर्तित न होते हुए भी आन्तरिक रूप से जो कुछ परिवर्तित हो चुका था वह लेखनी का विषय अनेक प्रयासों के उपरान्त भी नहीं बन सकता। शिला अपने स्थान पर ही निश्चल भाव से स्थित थी, जिस प्रकार से भगवान शिव निश्चल भाव से अपने आसन पर आसीन रहते हुए केवल जीव के कर्मों के साक्षीभूत ही बनते हैं। मुझे दिवस के प्रकाश में वह साक्षात ज्योतिर्लिंग ही प्रतीत हो रही थी। रात्रि में उसकी मंगलमयता किसी अलग ढंग से प्रकट हो रही थी और दिवस के प्रकाश में वही एक अन्य ढंग से परिलक्षित हो रही थी – ठीक उसी भांति जिस प्रकार भगवान शिव

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

का केवल बाह्य स्वरूप ही परिवर्तित होता है। आन्तरिक स्वरूप सदैव कल्याणप्रद ही बना रहता है। इसी कारण उन्हें केवल शिव अर्थात कल्याणकारी ही नहीं वरन 'सदाशिव' भी कहा गया है।

मेरे नेत्रों में अश्रु प्रवाह उमड़ा चला आ रहा था। अभ्यर्थना में जुड़े हस्त से भी मेरी कृतज्ञता उच्चरित हो रही थी – **'केवलोऽहं सदाशिवः'** अर्थात मैं केवल एक ही हूं और नित्य कल्याण स्वरूप हूं। मैं एकत्व का बोध करता हुआ अपनी ही स्तुति उच्चरित कर रहा था। किन्तु क्या अपनी स्तुति ही उस महान गुरु की सर्वोत्तम अभ्यर्थना भी नहीं हो सकती? यही तो आत्मज्ञान का चरम सोपान है।

. . . मैं अन्यमनस्क भाव से मित्रा जी के साथ लौटने को तत्पर हो गया। पग यदि आगे की ओर बढ़ रहे थे, तो चित्त पीछे की ओर जा रहा था और मैं लड़खड़ाता सा आगे बढ़ रहा था। मेरी भावनाएं मुझे विचलित किए जा रही थीं। मन में कुछ स्पष्ट ही नहीं हो पा रहा था कि मैं ढूंढ क्या रहा हूं। जिस स्थान से व्यक्ति की भावनाएं एक बार जुड़ जाती हैं फिर वह स्थान जहां एक ओर प्रलोभित भी करता है तो वहीं पीड़ित भी, क्योंकि उसी स्थान से जुड़ी मन में अनेक मधुर एवं तिक्त स्मृतियां भी जो साथ में चलती रहती हैं।

उस पवित्र स्थली ने जहां एक ओर मुझे एक मधुर स्मृति दी थी, वहीं यह सोचकर चित्त विदग्ध भी हो रहा था, कि मैंने कितने ही क्षण यूं ही गंवा दिए। क्यों नहीं यहां मैं पहले आ सका। मेरा चित्त मूक भाव से एक–एक वृक्ष से पूछ रहा था, कि उसने क्या परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द को देखा था? यदि देखा तो वे कैसे लगते थे? वे साधनाओं मे किस प्रकार से जीवन्त रहा करते थे?

किन्तु जो नूतन वृक्ष थे वे मूक भाव से क्षमा याचना कर रहे थे जब कि **सुदृढ़ और विशाल वृक्ष तो मानों गुरु का साहचर्य पाकर आत्मलीन ही हो गए थे। वे वार्तालाप की आवश्यकता से अपने को मुक्त कर चुके थे और बस एक ही चेष्टा में निमग्न हो गए थे कि कैसे ऊपर, और ऊपर उठा जाए, कैसे अपनी घनी छाया को और भी सघन कर लिया जाए। सच ही तो है, कि जो भी गुरु साहचर्य में एक बार आ गया वह फिर और सघन, और सघन ही तो होना चाहेगा – "वृक्ष कबहुं नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर। परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर।"**

वे गूढ़ वृक्ष साक्षात् साधु ही हो गए थे। तप स्थलियां ऐसी हो ही जाती हैं।

शीघ्र ही मैं और मित्रा जी पुनः उसी जगत के वातावरण में वापस आ गए, जिसे एक दिन पूर्व छोड़कर आए थे और जगत का जो वातावरण मुझे कभी भी नहीं प्रिय रहा वह अब और भी अधिक अप्रिय लग रहा था। वही भाग–दौड़, आपाधापी और हर क्षण एक प्रकार की धूर्तता से भरा व्यवहार। मनुष्य क्यों इतना मदांध हो जाता है, क्यों वह अपने छोटे से घरौंदे में बैठकर स्वयं को विश्व का अधिपति समझने लगता है – ये प्रश्न मुझे आज तक व्याकुल कर देते है, किन्तु इस व्याकुलता से कुछ किया नहीं जा सकता। मित्रा जी के आवास पर लौटने के बाद वे तो पुनः उसी प्रकार से जगत व्यवहार में संलिप्त हो गए, किन्तु मैं अपने आप को सभी कुछ से कुछ और कटा हुआ अनुभव करने लगा। एक दिन तो विश्राम में निकल गया किन्तु अगले दिन से मित्रा जी के आने वाले परिचितों के प्रश्नों से मेरा मन ऊबने लगा था। वही प्रश्न कि मैं करता क्या हूं? कहां रहता हूं? कितनी सन्तानें हैं इत्यादि। और उत्तर में जब मैं उन्हें अपनी वस्तु स्थिति से अवगत कराता, तो वे सभी किंचित आश्चर्य से मेरा मुंह देखने लग जाते थे तथा उपेक्षा से मुंह फेर कर दूसरी ओर वार्तालाप में व्यस्त हो जाते. कोई–कोई तो मुझसे इस बहस में उलझ जाते, कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं। कोई सुझाव देता कि मैं किराने की दूकान कर लूं, तो कोई सुझाव देता कि मैं टाइप सीख कर टाइपिस्ट बन जाऊं।

मैं प्रसंगवश कहना चाहूंगा कि मैंने पूज्यपाद गुरुदेव के सम्पर्क में आने तथा संन्यस्त जीवन में प्रवेश करने से पूर्व एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से उच्चकोटि की परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, लेकिन समाज के व्यक्तियों को तो बस यही चिन्ता थी कि मैं उनसे अलग ढंग का जीवन क्यों जी रहा हूं। वे तो मुझे भी अपने ढंग की जीवन शैली में उलझा लेना चाहते थे। मित्रा जी का व्यवहार तो यद्यपि मेरे प्रति सन्तुलित था, किन्तु उनका परिवार भी मुझसे ऊबने लग गया था। अविवाहित और संन्यस्त जीवन जी रहे युवा व्यक्ति को समाज एक प्रकार से संदेह की ही दृष्टि से देखता है और वही दृष्टि उनके परिवार की भी हो रही थी।

मैंने इस बीच में कई प्रयास किए, कि पुनः उसी तपःस्थली में जाकर मूक भाव से पड़ा रहूं, किन्तु मित्रा जी ने मुझे कुछ इस प्रकार से बांध रखा था कि मैं वहां तक जा नहीं पा रहा था। इसके बाद भी **मैंने एक दिन अवसर निकाला और वहां तक जाने का उपक्रम किया, किन्तु आश्चर्य! मैं उस क्षेत्र में पहुंच कर भी मार्ग नहीं खोज पाया और हतप्रभ सा कुछ देर इधर से उधर भटक कर** वापस आने को विवश हो गया था, मन को स्वीकार करना पड़ा कि गुरुदेव की इच्छा के बिना मैं वहां तक पहुंच ही नहीं सकता।

आपकी पत्नी आपसे प्रेम करती नहीं, सन्तान केवल धन–सम्पत्ति के लालच में आप से जुड़ी है, स्वयं आपका शरीर कई–कई रोगों को ढोते हुए जर्जर हो चला है, तो क्यों नहीं इन सभी से मुक्त होकर अपने जीवन को संवारने की चेष्टा करते? किन्तु सामाजिक मर्यादा का ध्यान करके चुप ही रह जाता था।

मित्रा जी ने मुझे एक दिन और रुकने को कहा तथा पूज्यपाद गुरुदेव से मेरे विषय में आज्ञा चाही। दूसरे दिन उन्होंने मुझे बताया, कि पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे उनके घर से सीधे वाराणसी जाने की आज्ञा दी है तथा वाराणसी में अपने एक गृहस्थ शिष्य के यहां रुकने की बात भी कही है। वाराणसी जाने की आज्ञा प्राप्त होने से तो मुझे प्रसन्नता हुई, किन्तु फिर एक गृहस्थ शिष्य के यहां रुकने की आज्ञा से खिन्नता हुई किन्तु मैं करता भी तो क्या अतः मित्रा जी से मार्ग व्यय लेकर प्रस्थान कर दिया। चित्रकूट से चलने के पूर्व मित्रा जी ने आग्रह करके मेरी घनी केशराशि, दाढ़ी को कटवा दिया था तथा मुझे संन्यासी वस्त्रों की जगह पैंट–कमीज पहनवा दी थी। पहले तो मुझे संकोच हुआ किन्तु मित्रा जी के यह कहने पर कि संन्यास तो एक आंतरिक स्थिति होती है। मैं सहमत हो गया, साथ ही मैं अपने गैरिक वस्त्रों में जिस प्रकार से समाज में व्यक्तियों के कौतूहल का विषय बन जाता था उससे भी मैंने किसी बाह्य आडम्बर को त्यागना ही उचित समझा।

यूं गैरिक वस्त्रों में भी मुझे अनेक मनोरंजक अनुभव हो चुके थे। पुलिस वाले मुझे उचक्का समझते थे, तो रेलवे के कर्मचारी बिना टिकट। जबकि सामाजिक लोग मुझे अपना हाथ दिखाकर भविष्य जानना चाहते थे। गैरिक वस्त्रों में मेरी प्रत्येक यात्रा ही मुझे एक नवीन अनुभव कराती थी। कभी कोई आकर मुझे अनायास प्रणाम कर जाता था, तो कभी कोई मेरे बिना कहे मेरे पास सिक्के फेंकता हुआ निकल जाता था। एक प्रकार से समाज में गैरिक वस्त्रों को

कालांतर में जब मैं कुछ दिन दक्षिणेश्वर काली के मन्दिर में जाकर रहा और स्वामी विवेकानन्द का साहित्य पढ़ा तभी, मुझे एक रहस्य प्राप्त हुआ कि ऐसी तपःस्थलियों पर गुरुदेव ही अपने शिष्यों को पहुंचने में व्यवधान डाल देते हैं, क्योंकि वे स्थल इस प्रकार से ऊर्जा से आपूरित होते हैं कि व्यक्ति या शिष्य वहां पहुंच कर सहज ही निर्विकल्प समाधि की उस अवस्था में पहुंच जाता है जिस निर्विकल्पावस्था को हमारा यह कच्चा शरीर सहन ही नहीं कर सकता और शीघ्र ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है। रामकृष्ण परमहंस भी अपने शिष्यों के जीवन क्रम को समझते हुए इसी प्रकार से उन्हें (शिष्यों को) उस स्थान तक जाने ही नहीं देते थे जहां उन्होंने पूर्वजन्म में साधनाएं की थीं।

मेरा मन उचाट होने लग गया था और मैंने सभी परिस्थितियों पर विचार कर मित्रा जी से वहां से प्रस्थान करने की अनुमति चाही। मुझे जीवन में यदि किसी से भय लगा है तो स्वयं अपने आप से ही लगा है, क्योंकि मुझ में क्रोध की मात्रा इतनी अधिक है कि मुझे स्वयं भान नहीं रहता कि मैं किस क्षण किस पर कैसा वार कर दूंगा और वार केवल शस्त्रों से ही नहीं अपितु वचनों से भी तो किए जा सकते हैं। मित्रा जी के परिचित जिस प्रकार से आने पर अपनी अमूल्य सलाहें मुझे देते थे उससे मैं बहुत कठिनाई से अपने को सन्तुलित कर पाता था अन्यथा मेरी इच्छा होती थी, कि मैं भी पलटकर उनके जीवन की विसंगतियों से उन्हें परिचित करा दूं और पूछूं कि क्यों नहीं आप भी संन्यास ग्रहण कर लेते? यूं भी

लेकर कोई धारणा ही नहीं है। कहीं वे भिखारी के पर्याय हैं तो कहीं भोली जनता की श्रद्धा के केन्द्र। मुझे इस सन्दर्भ में एक विचित्र अनुभव तो तब हुआ जब एक घुमंतू टोली के सरदार ने मुझे अत्यंत आग्रह से अपने पास दो दिन रोक लिया और अपनी क्षमता भर मेरा स्वागत सत्कार किया। तीसरे दिन जब उसने अपने मन की बात मुझे बताई तो मैं आसमान से जमीन पर गिरा और उसी रात चुपचाप अपना दंड कमंडल उठा कर रवाना होने में अपनी भलाई समझी। उस सरदार की हार्दिक इच्छा थी, कि मैं उसकी पुत्रवधू को संतान प्राप्त होने का **'अनुष्ठान'** कर दूं क्योंकि उसका पुत्र नपुंसक था।

मैं अपने आप को पुनः उसी रूप में, जिस रूप में मैं छात्र जीवन में रहा करता था, निहारता हुआ वाराणसी की यात्रा पर निकल पड़ा। मित्रा जी द्वारा दिए गए वस्त्रों में मैं स्वयं को ही नहीं पहचान पा रहा था और मन उन स्मृतियों में खो गया जब मैं इसी प्रकार से समाज में रहता था। मेरी बस इलाहाबाद की ओर जा रही थी और इलाहाबाद से मेरा घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। जिससे मन में ऐसी स्मृतियां आना स्वाभाविक ही था। मित्रा जी के परिवार में रहते हुए जो समाज के व्यंग्य ताने सुने थे उनसे भी मन में विगत कई दिनों से द्वंद्व चल रहा था, कि क्या मैं जो कुछ कर रहा हूं उसका कोई अर्थ है? सामाजिक व्यक्ति तो सामाजिक अर्थों में ही परिचय प्राप्त करना चाहेगा। उसे मेरे आध्यात्मिक जीवन से क्या लेना देना?

मैं सोच रहा था, कि काश मैं भी अपना छात्र जीवन समाप्त करके इन्हीं के समान किसी राज्यपद पर आसीन हो जाता, जिससे समाज में अपना परिचय तो गर्व से दे सकता और उन द्वंद्वों का मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। मित्रा जी के एक मित्र ने तो घुमा फिरा कर मुझे भिखारी कह भी दिया था, जो समाज की दया पर आश्रित है और मेरे मन में भिक्षाटन करके जो संन्यस्त जीवन जीने की उच्च धारणा थी वह खंड-खंड हो गयी थी। भगवत पाद आद्य शंकराचार्य ने अपने **'कौपीन पंचकम्'** में स्पष्ट कहा है –

वेदान्तवाक्येषु सदारमन्ते, भिक्षान्नमात्रेण चतुष्टिमन्तः।
अशोकवन्तः करुणैकवन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥

– मैं किसी अन्य विचार से नहीं अपितु इसी भावना से, संन्यास भावना से सामाजिक जीवन से कट कर इस प्रकार का जीवन जीने आया था। ऐसा नहीं था कि बस मन में कोई प्रवाह उठा और सब कुछ त्याग दिया था, ऐसा भी नहीं था कि जीवन में कोई अन्य मार्ग नहीं था। जिससे पलायन करके संन्यासी बन गया था। संन्यासी शब्द की एक पूरी अवधारणा होती है और संन्यासी का यह दायित्व होता है, कि वह जिस घर से अन्न लेता है, वहां ज्ञान के कुछ वचन कहता है। इसी से प्राचीनकाल में न तो संन्यासी ने कभी अपने को हीन समझा न ही समाज ने उसे तुच्छ दृष्टि से देखा, किन्तु अब आमूल-चूल परिवर्तन हो गया है और यह सोचकर मुझे अत्यधिक ग्लानि हो रही थी। कहां मैं इतने उच्च आदर्शों को लेकर चला था और कहां एक सामान्य सा भिखारी बन कर रह गया हूं। यह बात मेरे मन को मथ रही थी और मुझे लगने लगा था, कि ऐसा कुछ करना चाहिए या होना चाहिए, कि मेरे जीवन में धन आगमन का स्रोत बन सके। मुझे इस प्रकार दर-दर की ठोकरें न खानी पड़े।

इन्हीं विचार-विमर्शों के मध्य कब इलाहाबाद आ गया मुझे पता नहीं चला। बस स्टेशन पर उतर कर मन ने कहा, कि चलो संगम चल कर नहा लिया जाए। लेकिन मन में कुछ इस तरह से तिक्तता छा गयी थी कि अगले ही पल उस विचार को ठुकरा दिया। बुद्धि ने हेठी से कहा, कि कहां जाओगे? क्या रखा है वहां? बस दो नदियां ही तो आकर जुड़ रही हैं और संसार में अनेक स्थानों पर अनेक नदियां किसी दूसरी नदी से जुड़ ही रही हैं, तो क्या सब जगह जा-जाकर डुबकी मारनी चाहिए?

सच ही तो है, कि जब तक मन में प्रवाह न उमड़े तब तक इस प्रकार के क्रिया-कलापों का अर्थ ही कुछ नहीं। संगम तो मन में होता है, अवगाहन तो मन के संगम में किया जाता है, पानी के प्रवाह में नहीं। भले ही मैंने संन्यस्त जीवन को ग्रहण करके पावनता रूपी गंगा में अवगाहन कर लिया था किन्तु मेरे जीवन में भौतिकता रूपी यमुनायें आकर नहीं जुड़ी थीं और इसी से आह्लाद व संतोष की जो गुप्त सरस्वती मन में प्रवाहित होनी चाहिए वह नहीं उद्भूत हो सकी थी। यह मन भी त्रिवेणी बन कर धन्य होता है। यह बात मैं उस दिन बड़ी आंतरिकता से अनुभव कर रहा था और मन के अधूरेपन के कारण संगम के क्षेत्र तक न जाकर उसे दूर से ही प्रणाम करके बस में बैठ गया तथा वाराणसी के लिए प्रस्थान कर दिया।

(क्रमशः)

30.11.98

यदि आप सम्पूर्णता के साथ, जीवन निर्वाह करना चाहते हैं, तो आप अवश्य सम्पन्न करें –

राजयोग साधना

– श्री अरविन्द श्रीमाली

जीवन के दो छोर हैं एक बाह्य और दूसरा आन्तरिक, इन दोनों छोरों को मिलाकर ही वस्तुतः जीवन की संरचना हुई है, इन दोनों छोरों की संभावनाओं को ही जीवन की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

परन्तु यह विडम्बना ही कही जा सकती है, कि मनुष्य कभी भी जीवन को समझ ही नहीं पाया, वह जीया तो सही, परन्तु मृतवत् ही जीया, कभी भी उसने जीवन को समग्रता से स्वीकार नहीं किया और यही कारण है, कि आज मनुष्य स्वयं को परेशानियों, कष्टों एवं बाधाओं के जाल में पाकर पशुवत् जीवन जीने को मजबूर हो गया है।

व्यक्ति का मन स्वाभाविक रूप में 'अति' की ओर आकर्षित होता है, वह कभी भी बीच में रुकना पसंद नहीं करता, हर कार्य में 'अति' की ओर ही उसका झुकाव रहता है। उदाहरणतः एक व्यक्ति बहुत अधिक खाता है, तो वह भी एक अति है, क्योंकि उसे भूख हो चाहे न भी हो फिर भी वह खाता ही चला जाता है और परिणाम स्वरूप उसे रोगों से उलझना पड़ता है, परेशानियां भोगनी पड़ती हैं, तकलीफें उठानी पड़ती हैं . . .

इसी प्रकार एक व्यक्ति भोजन छोड़ देता है, व्रत आदि करता है और महीनों धर्म के नाम पर अपने शरीर पर अत्याचार करता है, यह भी अति ही है और इसका भी परिणाम होता है रोग परेशानियां एवं तकलीफें . . .

मन को साधना बहुत ही कठिन कार्य है, मन को प्रत्येक क्रिया के अतिक्रमण में ही आनन्द आता है, क्योंकि जहां पर भी अति का अंत होता है, वहीं से ही उन्मनी अवस्था का प्रादुर्भाव होता है . . .

बौद्धकाल में एक बहुत ही प्रभावशाली राजा था 'श्रोण' जो अत्यधिक विलासी एवं नाना प्रकार के भोगों में रत रहता था,

जीवन भी एक सितार की भांति है, इसके तारों को न तो अधिक कसना है और न ही ढीला छोड़ना है, मध्यम रखना है, क्योंकि तभी इसमें से मधुरतम संगीत के श्रोतव्य स्वर प्रस्फुटित होने की संभावना बनती है।

वास्तव में उसके जीवन में प्रत्येक प्रकार के भोग, ऐश्वर्य को चरम सीमा पर ही भोगा।

कहते हैं जब बुद्ध की उस पर कृपा हुई तब उसे अपनी यह अति दिखाई पड़ी और उसने दीक्षा लेने की ठानी, तो फिर उसके बाद वह दूसरी अति की ओर अग्रसर हो गया। अगर बुद्ध के दूसरे शिष्य बैठकर तीन घंटे ध्यान करते, तो वह धूप में एक पैर पर खड़ा होकर दस घंटे ध्यान करता, यदि शिष्य दिन में एक बार भोजन करते, तो वह सप्ताह में केवल मुट्ठी भर चने ही खाता और अगर बाकी शिष्य दिन में चार घंटे विश्राम करते, तो वह तीन दिन में २-३ घंटे ही विश्राम करता।

फलस्वरूप वह 'श्रोण' जो एक समय में अत्यंत ही सौंदर्यवान, बलवान और आकर्षक था बिल्कुल ही काला पड़ गया, उसका शरीर कंकाल के समान हो गया और उसे पहचानना तक मुश्किल हो गया, आखिरकार यह खबर बुद्ध तक पहुंची और वे स्वयं श्रोण के पास गए।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

मोक्ष का अर्थ है – इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार जहां कोई भी इच्छा शेष नहीं और यह स्थिति तभी आ सकती है जब व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं को पूरी तरह जी ले, वह बिना किसी दमन के पूर्णता के साथ अपने जीवन को जी ले। . . . और पूर्णत्व के साथ जीवन जीने का अर्थ है –बाह्य और आंतरिक जीवन का योग।

श्रोण ने उनको प्रणाम किया, तो बुद्ध ने उससे कहा – श्रोण ! मैंने सुना है, कि एक समय तुम बहुत ही उच्चकोटि के सितार वादक रहे हो।

श्रोण की स्वीकृति पर बुद्ध ने आगे कहा – अच्छा बताओ अगर तुम सितार के तारों को बिल्कुल ही ढीला छोड़ दोगे, तो क्या उससे मधुर संगीत निकल सकता है ?

''नहीं, तथागत! ढीले तारों से संगीत उत्पन्न नहीं हो सकता, बेढंगी आवाजें जरूर उत्पन्न हो सकती हैं'' – श्रोण ने कहा।

''ठीक, और अगर तुम तारों को बहुत . . . बहुत ही ज्यादा कस दो तो? ''

– फिर तो तार ही टूट जाएंगे उससे संगीत कैसे उत्पन्न हो सकता है, मधुर संगीत के लिए तो तार न तो अधिक ढीले और न ही अधिक कसे हुए होने चाहिए . . .

बुद्ध बोले – जब तू इतना जानता है, तो शरीर को इतनी यातनाएं क्यों दे रहा है ?

जीवन भी एक सितार की भांति है, इसके तारों को न तो अधिक कसना है और न ही ढीला छोड़ना है, मध्यम रखना है क्योंकि तभी इसमें से मधुर संगीत के उत्पन्न होने की संभावना है, अन्यथा नहीं।

और इसी स्थिति को बुद्ध ने मज्झिम निकाय कहा, मध्य मार्ग कहा, जहां किसी प्रकार की अति नहीं है और मज्झिम निकाय ही निर्वाण अथवा मोक्ष है . . .

मोक्ष का अर्थ है – इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार जहां कोई भी इच्छा शेष नहीं और यह स्थिति तभी आ सकती है जब व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं को पूरी तरह जी ले, वह बिना किसी दमन के पूर्णता के साथ अपने जीवन को जी ले।

और पूर्णत्व के साथ जीवन जीने का अर्थ है – बाह्य और आंतरिक जीवन का योग, इन दोनों ही छोरों का योग ।

हम उन सभी तथ्यों को अनुभव करें, जो हमारे 'स्व' से सम्बन्धित हैं, सम्बन्ध बनाने के लिए सिर्फ धर्म के उपदेशों से कार्य नहीं हो सकता, क्योंकि सिर्फ लोगों की बातें सुनकर उनके अनुसार चलना जीवन नहीं है, अपितु हम जो भी करें अपनी साधना बल से प्राप्त करें। अपने पुरुषार्थ से प्राप्त करें। सम्पूर्णता से जीवन का निर्वाह करना भी एक प्रकार की साधना है।

बाह्य जीवन का यहां अर्थ है – वे सब उपलब्धियां या स्थितियां, जिन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को बाहर की ओर यात्रा करनी पड़ती है। यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, धन, संपत्ति आदि ऐसी ही स्थितियां हैं। हर व्यक्ति इन सभी स्थितियों को प्राप्त करने का आकांक्षी होता है, शायद ही कोई व्यक्ति हो, जो इन चीजों केपीछे न दौड़ता हो।

परन्तु ये चीजें ऐसी हैं, कि ये जितनी भी मिलें फिर भी कम लगती हैं, व्यक्ति संतुष्ट नहीं हो पाता है, वह मद्यपी की भांति और . . . और . . . चिल्लाता रहता है। ऐसी दशा में वह इन चीजों को प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार के हथकंडे का प्रयोग करने में नहीं चूकता और उसकी ओर अग्रसर हो जाता है। क्रोध, हिंसा, लालच, कपट, मक्कारी उसके ऊपर हावी हो जाती है और वह अधिक से अधिक इन चीजों को प्राप्त करता ही चला जाता है . . .लेकिन **व्यक्ति बाह्य जीवन के साथ ही साथ यदि आंतरिक जीवन को भी जोड़ दे, तो उसका जीवन संपूर्ण हो सकता है।**

जीवन का यहां अर्थ है – उन सब उपलब्धियों से, जिन्हें उपलब्ध करने के लिए व्यक्ति को अंदर की ओर यात्रा करनी पड़ती है और प्रेम, करुणा, अहिंसा, सद्वृत्ति आदि ऐसी ही कुछ आंतरिक उपलब्धियां हैं, जिन्हें व्यक्ति बाह्य उपलब्धियों के साथ-साथ भी प्राप्त कर लेता है तो फिर वह कभी अति की ओर नहीं जाता . . . आप स्वयं ही सोचिए, क्या करुणापूर्ण व्यक्ति हिंसक हो सकता है?

कपटी हो सकता है? लालची हो सकता है? क्या वह अंधाधुंध धन के पीछे भाग सकता है ?

जिस प्रकार से केवल बाह्य जीवन पूर्ण नहीं है, वैसे ही अकेले आंतरिक जीवन भी अपूर्ण है, क्योंकि करुणा से, किसी भी स्थिति में संतुष्टि से या केवल अहिंसा से घर नहीं चलाया जा सकता। असल में तो इन दोनों स्थितियों का योग ही संपूर्णता प्रदान कर सकता है। शांत चित्त एवं संतुष्ट मन के साथ ऐश्वर्य भोगने की कला दे सकता है और ऐसे निष्कंप चित्त के साथ, व्यक्ति भोगों में रहता हुआ भी अपनी सभी बाह्य तथा आंतरिक इच्छाओं को पूर्ण कर लेता है; वही आखिर में इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार भी जा सकता है . . . और यह संपूर्ण योग प्राप्त हो सकता है – राजयोग साधना के माध्यम से . . .

अर्थात् हम उन सभी तथ्यों को अनुभव करें, जो हमारे 'स्व' से सम्बन्धित हैं, सम्बन्ध बनाने के लिए सिर्फ धर्म के उपदेशों से कार्य नहीं हो सकता, क्योंकि सिर्फ लोगों की बातें सुनकर उनके अनुसार चलना जीवन नहीं है, अपितु हम जो भी करें अपने साधना बल से प्राप्त करें, अपने पुरुषार्थ से प्राप्त करें। सम्पूर्णता से जीवन का निर्वाह करना भी एक प्रकार की साधना है।

राजयोग साधना **30.11.98** या किसी सोमवार को यह साधना प्रारम्भ करें। प्रातः उठकर, स्नान आदि कर स्वच्छ सफेद धोती तथा गुरु पीताम्बर धारण करें और सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठें । **'पूर्णता प्रदायक यंत्र'** अपने सामने बाजोट पर पुष्प बिखेर कर उस पर स्थापित करें, उसके सामने भोग व मोक्ष के प्रतीक रूप में घी के दो दीपक लगाएं, अक्षत, फूल, दीपक, गंध, कुंकुम से पंचोपचार पूजन करें और फिर गुरु मंत्र की चार मालाएं जपें। इसके पश्चात् कोई अधूरी इच्छा हो तो वह बोलें, फिर यंत्र के समक्ष निम्न मंत्र का जप करते हुए कुंकुम और अक्षत मिलाकर सोलह बार चढ़ाएं –

गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्यं सुगोपिताम् ।
तत्रापि मंत्रं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये ॥
मंत्रं वास्तवमेकं वा यः जपेत्प्रयतः शुचिः ।
तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्याच्छङ्करेण प्रभाषितम् ॥

फिर **'पूर्णमदः माल्य'** से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं त्रीं पूर्णत्वं स्वात्म सिद्धये
ॐ नमः ॥

Om Hreem Treem Poornatvam Svaatma Siddhaye
Om Namah

यह साधना वस्तुतः अनिर्वचनीय है, यह साधना व्यक्ति के जीवन को पूर्ण रूपेण बदल देती है, नवीनीकरण हो जाता है और वह आगे का जीवन संपूर्णता के साथ जी पाता है। यह साधना छोटी अवश्य है, परन्तु जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है। साधना के उपरान्त साधक सभी पूजन सामग्री माला तथा यंत्र को किसी नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 190/-

गुरु वाणी

'मंत्र मूलं गुरौ वाक्यं' – सद्गुरु जो कि साक्षात् शिव का ही स्वरूप होते हैं, जो जरा मरण के बन्धन से मुक्त होते हैं, जो शाश्वत होते हैं, जो मात्र जीव के कल्याणार्थ ही करुणा के वशीभूत होकर जगत में देह रूप में अवतरित होते हैं, उन ब्रह्मस्वरूप ब्रह्ममूर्ति गुरुदेव के श्रीमुख से निकले वचन कई कई मंत्रों से भी बढ़ कर होते हैं। जब साधक गुरु की कही बातों का अर्थ समझने लगता है, और उनकी बातों को आत्मसात् करता हुआ अपने जीवन में उतारने लगता है, तो उसका शिष्यत्व निखरने लगता है, उसमें गुरु का ज्ञान उतरने लगता है, फिर साधनाएं और सिद्धियां उससे दूर नहीं रह जातीं।

पत्रिका का यह मध्य पृष्ठ, मात्र एक पृष्ठ भर ही नहीं है, इस पृष्ठ पर पूज्य गुरुदेव स्वयं विराजमान होकर अपनी दिव्य वाणी के माध्यम से अपने शिष्यों व साधकों का अपने अमृत वचनों से सिंचन कर रहे हैं, उनको दिशा निर्देश दे रहे हैं, जीवन के सूत्रों का उद्घाटन कर रहे हैं।

❀ तुम बगुले मत बनो, हो सकता है तुम्हारे आस-पास बगुले खड़े हों पर तुम राज हंस बनो तभी मेरी विशेषता हो पाएगी तभी मेरा गुरुत्व हो पाएगा।

❀ इस ढंग से कोई हीरे नहीं लुटाता जिस ढंग से मैं ज्ञान आप पर लुटा रहा हूं। यह आपका सौभाग्य है, कि मैं आपको उस जगह तक ले जाना चाहता हूं, कि पूरे विश्व में आप विजयी हों, आप सफलता युक्त बन सकें।

और मैं अपने शब्दों पर दृढ़ हूं।

और मैं आपको अद्वितीय बना रहा हूं।

एक सूर्य अस्त हो, तो कई और सूर्य यहां उगे हुए हैं जो रोशनी कर देंगे।

❀ गुरु वह है, जो अपना सब कुछ शिष्यों पर न्यौछावर कर दे, ज्ञान दे, चेतना दे, पूर्णता दे, सफलता दे, श्रेष्ठता दे, झकझोर कर दे, सीना पकड़ कर दे, लेकर मार कर दे, . . . मनवा दे, उसको गुरु कहते हैं।

❀ युगधर्म के अनुसार गुरु और शिष्य को परिवर्तित होना पड़ता है। आज कृष्ण स्वयं साक्षात् भी आ जाएं, मुरली हाथ में लेकर के, मोर मुकुट पहन करके, पीताम्बर पहन करके और कहें – 'मैं कृष्ण हूं', तो आप जोर से हंस देंगे, कि 'बहुरूपिया तो बहुत अच्छा है! तुम कृष्ण हो? हमें मूर्ख मत बनाओ!'

प्रत्येक युग में प्रत्येक देश में ऐसा क्षण आया है, कि जब देश भटका है और उस समय यदि वह [illegible], चेतना का रास्ता कोई बताता है, तो गुरु के [illegible] बताते हैं। और अब आप शिष्य नहीं रहे, अपितु [illegible] स्टेज पर हैं, जहां से आप छलांग लगा सकते हैं।

आप देश को मार्गदर्शन तब दे सकते हैं जब आपमें चेतना, उमंग, जोश, जवानी हो, एक उत्सर्ग करने की भावना हो, गुरु में अपने आपको समाहित करने की क्षमता हो।

अमरीका वापस 'ध्यान' की ओर संलग्न हो रहा है, क्योंकि विनाश का भयावह स्वरूप उन्होंने देख लिया है।

सृष्टि को बचाना ही है और पूरा पश्चिम भारतवर्ष की ओर ताकेगा... और अगर भारतवर्ष डूबेगा तो फिर केवल आपकी ओर ही ताकेगा क्योंकि आपके पास ही यह ज्ञान होगा, चेतना होगी।

शिष्यता के पांच अर्थ हैं – नजदीक आना, और नजदीक आना और पूर्ण रूप से अपने आपको विलीन कर देना।

पाणिनी ने शिष्य का दूसरा अर्थ बताया है, कि शिष्य वह है जो अपने आपको बिल्कुल भुला बैठता है, खुमारी में आ जाता है, जैसे मीरा आ गई, जैसे सूर आ गए। उनको अपने शरीर का भान है ही नहीं।

तीसरा, शिष्य अपने 'स्व' का विसर्जन कर देता है, अपने अहंकार का विसर्जन करके अपने गुरु के चरणों में लिपट जाता है, वह शिष्य है। चौथा, जो गुरु के बगैर एक भी क्षण रहने की कल्पना नहीं कर सकता और जो उनमें सब कुछ प्राप्त कर लेने की भावना करता है वह शिष्य है।

और पांचवा, जिसके प्राण पूर्णतः गुरु के प्राणों से मिले हुए हों वह शिष्य है। इसलिए शिष्य होना बहुत कठिन है।

गुरु और शिष्य के बीच में पहले और आखरी शब्द होते हैं – श्रद्धा, विश्वास और समर्पण। ये आवश्यक तत्व हैं। जब पूर्ण समर्पण होता है, तो मन में किसी प्रकार का संदेह और भ्रम नहीं होता, और तब ही शिष्य अपने आप में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

एक हवाई जहाज में पति-पत्नी सफर कर रहे थे और उसका एक पंख टूट कर गिर गया, वह लड़खड़ाने लगा, लोग चीखने-चिल्लाने लगे। पायलट ने कहा, "कमर पर पट्टी बांध लो, किसी भी समय जहाज नीचे गिर सकता है!" कोई 'यीशू-यीशू' चिल्लाने लगा, कोई शिव को, कोई विष्णु को याद करने लगा।

जो पति-पत्नी थे, उनमें पति बिल्कुल शान्त बैठा था – न यीशू को याद कर रहा था, न ब्रह्मा को याद कर रहा था। दोनों की नई-नई शादी हुई थी, हनीमून मनाकर लौट रहे थे। पत्नी ने कहा – "जहाज लड़खड़ा रहा है, क्रैश हो सकता है, हम मर जाएंगे और तुम्हारे मन में भय ही नहीं है, तुम सोच ही नहीं रहे हो। सब कितना चिल्ला रहे हैं, कितने व्याकुल हैं, पर तुम कैसे आदमी हो?"

पति ने कमर में एक चाकू खोंसा हुआ था, वह निकाल कर एकदम से पत्नी की गरदन पर रख दिया, उसने कहा –

"मैं तुम्हारी गरदन काट रहा हूं।"

पत्नी ने कहा – "क्यों मजाक कर रहे हो, तुम गरदन काट ही नहीं सकते!"

तो पति ने कहा – "तुम्हें मुझ पर इतना भरोसा है, तो मुझे भी भगवान पर पूरा भरोसा है, कि तुम्हें-हमें नहीं मारेगा। मैंने चाकू तेरी गरदन पर रख दिया तब भी तुझे भरोसा था, कि पति मुझे मार नहीं सकता। मुझे भी भगवान पर भरोसा है, वह हमें समाप्त नहीं करेगा, चाहे जहाज क्रैश हो जाए, हम बचेंगे अवश्य।"

जब आपको पूरा विश्वास होगा गुरु के प्रति, तब सही अर्थों में शिष्य बनेंगे।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अंसुअन जल सींच-सींचे

प्रेम . . .

प्रेम एक एहसास है . . . एक भटकन है . . . एक आत्मीयता है . . . जो प्रेम को समझ लेता है, वह जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझ लेता है, वह जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त कर लेता है, वह जीवन को आनन्द के साथ, मस्ती के साथ जीना सीख लेता है।

जहां प्रेम नहीं होता, जहां प्रेम का सम्मान नहीं होता, वहां नीरसता, बोझिलता और कटुता का ही आधिपत्य दिखाई देता है।

शारीरिक सम्बन्धों का नाम प्रेम नहीं है, यह प्रेम की आड़ में मात्र वासना पूर्ति है। यह एक आवश्यकता है, जो मनुष्यों के साथ-साथ पशु भी महसूस करते हैं, यह वासना वृत्ति पशु और मनुष्य दोनों में एक समान ही पाई जाती है। जो इस वासना वृत्ति से आगे निकल जाता है, वह जीवन में मनुष्यता प्राप्त कर लेता है। वह प्रेम को समझने लगता है, उसके जीवन में प्रेम का, भावनाओं का समावेश होने लगता है, तब सही अर्थों में जीवन ऊर्ध्वगति प्राप्त करता है।

प्रेम की धारणा को लेकर अनगिनत शास्त्र, ग्रंथ रचे गये। ऋषियों ने, मुनियों ने, योगियों ने इसे बहुत ही सुन्दर और भावात्मक ढंग से परिभाषित किया। आदिकाल से ही प्रेम की महत्ता को समझने का, समझाने का प्रयास किया गया। यहां तक कि श्रीकृष्ण भगवान का तो सारा जीवन ही प्रेम के उच्च आदर्शों पर व्यतीत हुआ। राधा, मीरा, सूर, रैदास और नानक को प्रेम का पर्याय ही कहा जा सकता है, क्योंकि इन्होंने प्रेम को अपने जीवन में उतार कर अपने प्रेमी के लिये, अपने इष्ट के लिये, अपने गुरु के लिए, अपना सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया।

यह समाज फिर भी उनके इस स्वच्छ, निश्छल प्रेम को नहीं समझ पाया और उनके पवित्र प्रेम को वासना की दृष्टि से देखता रहा। गलती प्रेम की नहीं और न ही गलती प्रेम करने वालों की है, दोष तो उन नजरों का है, जो प्रेम को परखना नहीं जानतीं। नजरें तो केवल वही निहार सकती हैं, जो निहारने वालों के मानस में होता है।

इसीलिए तो मीरा को, जहर का प्याला पीना पड़ा था, ईसा को सूली पर चढ़ना पड़ा था, शंकराचार्य को कांच पीना पड़ा था। प्रेम में छल, कपट, स्वार्थ, व्यभिचार और असत्य का कोई स्थान नहीं होता। जो प्रेम करना जानते हैं, वे त्याग करना भी जानते हैं, बलिदान करना भी जानते हैं, वे अपने आपको फना कर देते हैं, प्रेमी की एक झलक देखने के लिए –

कागा सब तन खाइयो चुन-चुन खइयो मांस।
दो नयना मत खाइयो मोहे पिया मिलन की आस॥

प्रेम के दर्द का अहसास एक प्रेमी ही कर सकता है, जिसने प्रेम किया हो, वही प्रेम को समझ सकता है, एक विरहिन की पीड़ा का अहसास एक प्रेमी ही कर सकता है। इसीलिए उपरोक्त पंक्तियों में कौअे से कहा गया है, कि बेशक इस देह को वह नोंच-नोंच कर भक्षण कर ले, किन्तु इन दो आंखों को, छोड़ दे, जिससे मरने बाद भी कम से कम प्रियतम को देख सकेंगे।

यह संसार प्रेम की पावनता को, निर्मलता को इतनी शीघ्रता से स्वीकार नहीं कर सकता। प्रेम को सही अर्थों में समझने के लिए प्रकृति के मौन को

समझना होगा। जिस प्रकार से झरना निश्छल भाव से मधुर संगीत का गुंजरण करता हुआ बहता है, उसी प्रकार प्रेम भी मौन होकर समस्त वातावरण में अपनी सुगन्ध बिखेर देता है।

देह का मिलन ही कोई मिलन नहीं होता, आत्माओं का मिलन ही सर्वोपरि है, आत्माओं का मिलन ही सही शब्दों में मिलन होता है और समाज की सन्देहशील नजरें इस मिलन को नही समझ सकतीं, क्योंकि ये नजरें प्रेम को देह के सांचे में ढाल कर ही देखती हैं।

प्रेम में देह का महत्व नहीं है, महत्व है प्रेमी के प्रति समर्पण का, श्रद्धा का, और विश्वास का . . .

जा जाओ कि इस फर्क नजर को मिटा दें।
दुनियां समझती है कि तुम और हो हम और हैं।।

एक अहसास . . . एक दर्द . . . एक चुभन . . . सच! यही सब तो मिलता है प्रेम करने वालों को, लेकिन इस दर्द का, इस अहसास का जो आनन्द है, जो मस्ती है वह तो आंसुओं से झिलमिलाती आंखों के द्वारा ही समझी जा सकती है।

वो अश्क बनके मेरी चश्मेतर में रहता है,
अजीब शख्स है पानी के घर में रहता है।

जो हृदय की गहराइयों में रहता हो, जो आंखों में बसता हो, उसके मिलने की खुशी का इजहार कैसे किया जाय। जो हृदय अनुभव करता है, वह व्यक्त नहीं कर सकता, और जो जिह्वा व्यक्त कर सकती है, उसके पास हृदय नहीं है।

और यह समाज . . . उस विरहिन की बेबसी पर ताने दे रहा है . . . रोक रहा है अपने प्रियतम से मिलने को, लेकिन उसने भी जिद ठान ली है

बहुत गुरूर है तुझको ऐ सरफिरे तूफां,
मुझे भी जिद है कि दरिया को पार करना है।

क्या रोकेंगे ये छोटे–छोटे बांध, ये रेत के टीले, ये चट्टानें नदी के उस उमड़ते–घुमड़ते प्रवाह को? क्या हुआ जो सामने पर्वत है?

. . . और जो रुक गई, वह नदी हो ही नही सकती, वह तो एक गन्दी और मलीन तलैया मात्र हो सकती है।

नदी . . . जिसमें एक उछाह है, उत्साह है, उमंग है, फना कर देने की भावना है, . . . समुद्र से मिलने की उत्कंठा है, काट देगी इन चट्टानों को, इन पत्थरों को, तोड़ देगी उन बांधों को, जो उसे उसके प्रियतम से मिलने से रोकेंगे।

जो ठिठक कर रुक जाए, वह शिष्य नहीं हो सकता . . . वह भक्त भी नहीं हो सकता . . . वह प्रेमी भी नहीं हो सकता, क्योंकि जो प्रेम करना जानते हैं, वे रुकना नहीं जानते। वे जानते हैं, कि प्रेम के पथ में कांटे ही कांटे हैं, बीहड़ है, तपन है, झुलसन है, पथरीले समाज के बन्धन हैं, माया–मोह के शिकंजे हैं, मगर जो प्रेमी से मिलने में तृप्ति है, आनन्द है, उमंग है, आह्लाद है और सबसे परे जीवन की पूर्णता है, उसे तो प्राप्त करना ही है।

मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे।
तू देख कि क्या रंग हैं तेरा मेरे आगे।।

ये लगन, ये तड़पन, ये वेदना, एक तरफा हो ही नहीं सकती, जहां नदी अपने प्रियतम से मिलने को बेकरार है, वहीं सागर भी अपनी प्रियतमा से मिलने के लिए छटपटा रहा है।

जब वह देखता है, कि नदी का वेग मंद पड़ चुका है, उसे बांधों ने बांध लिया है, समाज के बन्धनों ने उसे जकड़ लिया है, सोने–चांदी की बेड़ियों को वह तोड़ नहीं पा रही है, तब सागर हिलोर लेता है, वह मेघों का रूप धारण कर, उड़ पड़ता है अपनी प्रियतमा की ओर . . . और बरस पड़ता है अपने पूरे वेग के साथ, दे देता है अपनी अथाह शक्ति जलराशि के रूप में . . . और नदी फिर अपने प्रियतम का सहयोग पाकर उमड़ पड़ती है और चल पड़ती है अपनी मंजिल की ओर बांधों को तोड़ती . . . पर्वतों को लांघती . . . जा पहुंचती है वहां, जहां उसका प्रेमी है।

यही प्रेम है, यही तो जीवन की पूर्णता है, यही तो शिष्य का कर्तव्य है . . . यही तो गुरु–शिष्य का प्रेम है, और यही भक्त और भगवान की भावना है।

एक दिन स्वामी चेतनानन्द जी अचानक भाव विह्वल होकर अपने शिष्यों से बोले – "हो सकता है मैं अब अधिक दिनों तक तुम्हारे बीच न रह सकूं, इसलिए मेरी मृत्यु के बाद तुम इस देह की राख को हिमालय व मानसरोवर के क्षेत्र में बिखेर देना।"

तब एक शिष्य बोला – "गुरुदेव! आप ऐसा करने के लिए क्यों कह रहे हैं?"

स्वामी जी बोले – "अरे पगले! वही क्षेत्र तो मेरे गुरुदेव का विचरण स्थल है। मैं जीते जी तो उनके पास रह नहीं पाया, मेरे मरने के बाद तो इस कण को उनके चरणों का सामीप्य प्राप्त होगा। मैं उन्हें इस प्रकार निहार तो सकूंगा।"

सचमुच कितनी अद्भुत है प्रेम की पराकाष्ठा . .

साधक साक्षी हैं

जब पूज्य गुरुदेव ने बार-बार रक्षा की

पूज्य गुरुदेव की कृपा से इन २६ दिनों में आधा दर्जन घटनाओं में मौत के मुंह में जाने से बचा हूं। २८ मई को मैं पत्नी और पुत्री स्कूटर द्वारा गांव से इन्दौर जा रहे थे, आगे चल रही बस ने अचानक सवारी हेतु बस रोक दी, मैंने भी ब्रेक लगायी, गति में होने के कारण स्कूटर घूम कर गिर पड़ा परन्तु किसी को भी चोट नहीं लगी और आगे जाने पर स्कूटर का सायलेंसर टूट कर पिछले पहिये के सामने आ गया, जिससे पत्नी गिर पड़ी परन्तु उसे चोट नहीं लगी।

मैं स्कूटर से इन्दौर-पीतमपुर डेली अप-डाउन करता हूं। २९ मई को रास्ते में भगवे वस्त्रधारी बूढ़े ने लिफ्ट हेतु हाथ दिया, मैंने स्वभाववश बिठाने हेतु ब्रेक लगायी, लेकिन ब्रेक फेल हो गयी, मैंने गाड़ी किनारे पर रोक ली अन्यथा न जाने क्या हो जाता। मुझे बाद में ध्यान आया, कि उस बूढ़े साधु के भेष में गुरुदेव ही थे, जिन्होंने प्रत्यक्ष होकर प्राण रक्षा की।

इन २६ दिनों में अशुभ समय के अन्तर्गत २२ जून को सीढ़ी से १२ फीट ऊंचाई से कंक्रीट ट्रक में असंतुलित हो गिर पड़ा। '**गुरुदेव बचाओ**' पुकारा तब तक एड़ी की हड्डी क्रेक हो गई थी। पूज्य गुरुदेव की कृपा से जहां मौत थी वहां मामूली चोट ही आई। प्रभु ने पत्रिका की वृषभ राशिफल में ४, १३, २२ तारीखें अशुभ हैं लिखकर आगाह कर दिया था, लेकिन सावधानी नहीं बरतने से गुरुदेव को ही कष्ट उठाना पड़ा, क्योंकि गुरुदेव साक्षात् भगवान नारायण का स्वरूप हैं, वे सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान हैं।

– विष्णु पाटीदार, बजरंग नगर, इन्दौर - ८

घोर संकट से बचाव

गुरुदेव आपने हैदराबाद शिविर में कहा था, कि मौत भी मेरे शिष्य के पास नहीं आ सकती, यह बात एकदम सत्य है। दिनांक ३. ८. ९७ रविवार को शाम ७.३० बजे मेरे घर के ऊपर बिजली गिरी। उसी दिन शाम को हम तीन गुरुभाई गुरु चर्चा में मग्न थे, कि अचानक ऐसा धमाका हुआ और धमाके के ऊपर धमाका आधा मिनट तक चलता रहा। हम लोगों के तो होश ही उड़ गए।

बाद में मालुम पड़ा, कि आसमान से गिरने वाली बिजली घर की इलेक्ट्रिक वायरिंग द्वारा सीधी 'अर्थिंग' में चली गई थी। उस दिन की घटना को मैं क्या बताऊं क्या हुआ, उसका बखान नहीं कर सकता। लेकिन हम इतना जानते हैं कि आपकी कृपा से हमारा पूरा परिवार बच गया। सब के मुख पर गुरुदेव का ही नाम था। गुरुदेव आप तो सर्वशक्तिमान हो।

– गोपी चंद शेन्डे, मॉढर, रायपुर (म. प्र.)

जब काल को झुकना पड़ा

२८ मार्च नवरात्रि को रात्रि के ११ बजे मैं साधना कक्ष में जाने की तैयारी कर रहा था, उसी समय छोटा भाई आया और बड़े भाई साहब से बोला – पड़ोसन बीमार है आप जल्दी आटो लेकर चलें। मैंने साधना कक्ष में जाकर गुरुदेव से प्रार्थना की, कि यदि उसकी अकाल मृत्यु का योग है तो आप उसकी रक्षा करना।

इसके बाद मैंने अपनी साधना प्रारम्भ कर दी, साधना के मध्य मैंने ध्यानावस्था में देखा, कि कुछ डॉक्टर कह रहे थे कि अब ये खतरे के बाहर है। साधना पूर्ण करने के बाद मैं आसन पर बैठा हुआ गुरुदेव का ध्यान कर रहा था, कि उसी क्षण आसन के दाहिनी तरफ गुरुदेव आकर खड़े हो गये, मैंने उनके चरणों में प्रणाम किया। इसके बाद अगले दिन मेरा छोटा भाई हॉस्पीटल से आया, तो मैंने उससे पड़ोसी का हाल पूछा तो उसने बताया, कि अब वह ठीक है और सब कुछ वैसे ही घटित हुआ जैसे मैंने साधना में देखा था।

गुरुदेव साक्षात् औढरदानी शिव ही हैं और ये गुण महाकाल शिव में ही हो सकते हैं कि वे किसी प्राणी को जीवनदान दे सकें। गुरुदेव आपसे मेरी यही प्रार्थना है, कि जब तक इस ब्रह्माण्ड में मेरी आत्मा का अस्तित्व है वह आपके श्री चरणों की सेवा में रहे।

मुकेश त्यागी, राजनगर कालोनी, लोनी बॉर्डर, गाजियाबाद (उ. प्र.)

साधनाएं पूर्ण प्रामाणिक हैं

गुरुदेव मैंने स्वप्नेश्वरी साधना सम्पन्न की है जो कि [illegible] ९८ माह में प्रकाशित हुई है। इसे मैंने १६. ३. ९८ से [illegible] कर २१. ३. ९८ को समाप्त की। इस साधना से हमें [illegible] सफलता मिल रही है। जब यह साधना समाप्त हुई तो मैं स्वप्नेश्वरी देवी से रात्रि को मैंने परीक्षा लेने के लिए एक प्रश्न पूछा मैंने नौकरी के लिए इंटरव्यू दिया था उसका कॉल लेटर आयेगा या नहीं? ऐसा सोचते-सोचते मैं सो गया कि अचानक [illegible] कि मेरा काल लेटर पोस्ट मास्टर दे रहा है।

इस क्रिया के ठीक तीसरे दिन मेरा काल लेटर दिल्ली [illegible] कम्पनी से आ गया। मैं स्वप्नेश्वरी देवी को हृदय से नमन करता हूं तथा दिल से सिद्धाश्रम पहुंचने की कामना करता हूं। पत्रिका में प्रकाशित साधनाएं वास्तव में प्रामाणिक हैं, यह घटना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

– संजय कुमार, ग्रा. पो. प्रधान चक, जमुई।

जो जग बैरी होय

दिनांक १३. ३. ९८ को होली का दिन था, करीब १ बजे की बात है। मैं बाजार से किराना का सामान खरीदने के लिए जा रहा था, कि रास्ते में अचानक ८-१० आदमियों ने मुझ पर हमला कर दिया, सभी ने शराब पी रखी थी। मैं अकेला था, मैं भी मुकाबला करने लगा, लेकिन मैं मुकाबला नहीं कर सका और सबने मिलकर मुझे मारना शुरू कर दिया, मुझे कुछ भी नहीं सूझ रहा था, कि अचानक मेरे मुख से जय गुरुदेव निकला और गुरु मंत्र का जप शुरु हो गया, तो वे सब लोग मुझे छोड़कर अलग हो गये और तब मैं घर वापस आ सका। इस तरह गुरुदेव ने मेरे जीवन की रक्षा की, इसके लिए मैं गुरुदेव के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।

– अशोक कुमार साहू, ग्रा. पो. मॉढर, जि. रायपुर

गुरु कृपा से जान बची

मैं तथा मेरा पूरा परिवार दिनांक १०.६. ९७ दिन मंगलवार को समय दिन के ४ बजे हमारे पैतृक गांव ससुन्द्रा से सारनी बस द्वारा आ रहे थे, उस बस का संतुलन बिगड़ जाने से बैतूल एवं रानीपुर के बीच में वह एक खाई में पलट गई। बस पलटकर १५ फीट नीचे जा गिरी तथा एक पेड़ से टकराकर रुक गई, अगर और नीचे जाती तो खाई की गहराई लगभग ३०० फीट थी। लेकिन अचानक ही संतुलन बिगड़ने से हम लोगों ने पूज्यपाद सद्गुरुजी का स्मरण किया एवं गुरु मंत्र जप शुरू कर दिया। बस में करीबन ६० लोग बैठे थे। हमारे परिवार के ६ लोग थे। जब बस टकराकर रुक गई तो मैंने देखा वहां कोई भी पेड़ नहीं था। स्वयं गुरुदेव जी ने आकर बस को आगे खाई में जाने से रोक दिया। अगर हम परिवार के सातों लोगों ने दीक्षा न ली होती तो हम बच नहीं पाते। लेकिन बस पलटने के बाद भी हम लोगों को न कोई चोट आई और न ही कोई खरोच। गुरुदेव आप सर्व समर्थ हैं। साक्षात् महादेव हैं। आपकी शरण में जो भी जाता है वह भवपार हो जाता है।

– एन. आर. सराटकर, सारनी, बैतूल (म. प्र.)

यात्रियों की जान बची

मैं एक बस का ड्राइवर हूं। १८.६.९७ को शाम को ४.४५ बजे मैं महासमुन्द से निकला हल्की हल्की वर्षा हो रही थी। लगभग १० कि.मी. पहुंचा, वहां एक खतरनाक मोड़ था, कि तभी उधर से भारी लोड वाला ट्रक आ गया। उसने ब्रेक लगायी पर वह बीच रोड में स्लिप होते हुए आउट साइड आ गया और मैंने अपनी बस को जंगल में उतार दिया। इतने में ट्रक फिर दोबारा स्लिप हुआ और वह एक बहुत बड़ी दीवार से टकरा गया, उस ट्रक ड्राइवर ने शराब पी रखी थी, मेरी बस से जा टकराया। मेरी बस में ३६ सवारियां थीं और सामने ही पूज्य गुरुदेव जी का चित्र रखा था। यह उनकी कृपा ही थी, जिन्होंने मुझे और मेरी सवारियों को बचा लिया। अब मैं जब भी बस चलाता हूं, उनकी उपस्थिति बस में हमेशा प्रतीत होती रहती है।

– घनाराम साहू, महासमुन्द, रायपुर।

निखिल स्तवन से तंत्र प्रयोग दूर हुआ

पूज्य गुरुदेव से मैंने व मेरे पति ने सन् ९४ में भोपाल शिविर में दीक्षा ग्रहण की थी, उस समय मेरा परिवार किसी तंत्र प्रयोग के कारण बहुत सी परेशानियों के दौर से गुजर रहा था, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी ने हमें इस तरह से तोड़ कर रख दिया था, कि परिवार बिखरने की कगार पे पहुंच गया था। गुरु दीक्षा लेने के बाद धीरे-धीरे सुधार होने लगा। इसी बीच किसी शत्रु ने मुझ पर तंत्र प्रयोग किया जिस वजह से मेरा अन्न छूट गया, खाना देखते ही उल्टी होने लगती थी, परिवार के सभी लोग मुझसे अलग हो गये थे। ऐसे समय में मैंने अपने आप को अकेले पाया। गुरुदेव की फोटो के सामने अपने दुःख कह कर जी हल्का कर लेती दिन में तीन-चार बार निखिलेश्वरानंद स्तवन का पाठ करती। गुरुदेव की कृपा से चमत्कार हो गया, डेढ़- दो माह का छूटा हुआ भोजन फिर से रुचिकर लगने लगा, मेरा पुत्र भी घर आ गया और छोटे पुत्र की नौकरी लग गई आदि। पूज्य गुरुदेव ने कई बार मेरी इस तरह से सहायता की है जिसे लिखना संभव नहीं है।

– विद्या मीणा, होशंगाबाद (म. प्र.)

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

27.12.98

पुष्पधन्वा प्रयोग

पुष्पधन्वा अर्थात पुष्प के धनुष को धारण करने वाले, जिसे प्रायः कामदेव के नाम से भी जाना जाता है। समस्त कामनाओं व इच्छाओं की पूर्ति करने वाले कामदेव की इस साधना को करने से साधक का व्यक्तित्व सम्मोहन व पौरुष से खिल उठता है तथा वह हर क्षेत्र में यश, कीर्ति व विजय प्राप्त करता है।

साधना जगत में विभिन्न देवी–देवता हैं और उनकी साधना, उपासना का बड़ा ही जटिल विधान है . . . और फिर सबसे आश्चर्य की बात है, कि हर देवी–देवता की एक–एक साधना नहीं, अपितु उसके विभिन्न स्वरूपों से सम्बन्धित कई–कई साधनाओं का विधान शास्त्रों में मिलता है . . .

उदाहरण के तौर पर शिव से सम्बन्धित कई साधनाएं हैं। उनके पशुपति स्वरूप से सम्बन्धित कई साधनाएं हैं, और इस तरह उनके विभिन्न स्वरूप जैसे–रूद्र, भूतनाथ, शंकर, पिनाकधारी आदि से सम्बन्धित कई–कई साधनाएं शास्त्रों में प्राप्त होती हैं . . . ठीक ऐसी ही स्थिति हर देवी–देवताओं के साथ है . . .

कामदेव सौन्दर्य और प्रेम के देवता हैं और सही कहूं तो वे प्रेम के ही देवता हैं, इच्छाओं, आकांक्षाओं के देवता हैं . . . उनके कई नाम प्रचलित हैं जैसे मनोज, मदन, कंदर्प, रतिसखा आदि . . . और इन्हीं नामों में से एक प्रमुख नाम है **पुष्पधन्वा**।

पुष्पधन्वा का अर्थ है पुष्पों के धनुष–बाण जिसके अस्त्र हों। पुष्पधन्वा का स्वरूप बड़ा ही मनोहर एवं सौन्दर्य युक्त है। ये अपने हाथ में पुष्पों का धनुष लिए रहते हैं और इनके तरकश में पुष्पों से ही निर्मित पांच बाण हैं, जो अपने आपमें सभी प्रकार की कामनाओं को समेटे हुए हैं . . .

और ये पांच बाण अपने आप में अद्वितीय हैं, और इन पांच बाणों के अन्दर ही विश्व की समस्त सम्पदाएं निहित हैं। इन बाणों की विशेषताएं और नाम प्रस्तुत हैं –

1. ***दैव्य*** – यह बाण बड़ा ही अद्भुत है, और इसके द्वारा किसी में भी अद्भुत सौन्दर्य एवं आकर्षण का संचार किया जा सकता है। इसके द्वारा व्यक्ति खुद अत्यधिक सम्मोहक हो जाता है और पूरा संसार उसके इर्द–गिर्द चक्कर लगाने लग जाता है।

2. ***रति*** – इसके द्वारा व्यक्ति के अन्दर अपूर्व पौरुष का संचार होता है। अगर कोई रोग या कमजोरी हो, तो वह स्वतः दूर हो जाती है। उसे पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्त होता है और उसका सारा जीवन आनन्दमय हो जाता है।

3. ***कीर्ति*** – इससे व्यक्ति समस्त संसार में किसी भी इच्छित क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है। उसका यश पूरे विश्व में कस्तूरी की सुगन्ध की तरह फैलता है, और समाज में उसे सहज ही मान, पद, धन, प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है।

4. ***काम्य*** – इसके द्वारा व्यक्ति की जितनी भी दबी हुई इच्छाएं हैं, जो वह किसी से कह नहीं पाता, पूरी हो जाती हैं। उसकी सारी कामनाएं, आकांक्षाएं, इच्छाएं पूर्ण होती हैं, जिसके फलस्वरूप वह अत्यधिक सुखद जीवन व्यतीत कर पाता है।

5. ***विजय*** – यह पुष्पधन्वा का बड़ा ही तेजस्वी बाण है और यदा–कदा इसका प्रयोग 'देवता' आसुरिक व दानवीय शक्तियों पर विजय प्राप्त करने हेतु करते रहे है। इस बाण के द्वारा व्यक्ति हमेशा हर क्षेत्र में विजय लाभ प्राप्त करता है और वह जीवन में कभी परास्त नहीं होता।

पुष्पधन्वा के बाणों का यह विवरण अत्यन्त संक्षिप्त में ही किया गया है, क्योंकि वास्तव में तो ये

पांच दिव्य आशीर्वाद हैं, जिन्हें व्यक्ति यदि प्राप्त कर लेता है, तो वह स्वतः ही प्रेम आदि सब कुछ प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

आजकल के जीवन में वैसे भी हर व्यक्ति परेशान ही है। किसी का व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं है, जिसकी वजह से हर जगह मात खानी पड़ती है, तो किसी के घर में धन का अभाव है, किसी को योग्यता अनुसार पद नहीं प्राप्त हो रहा, कोई शत्रुओं से परेशान है, तो कोई प्रेम में सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

. . . और इन सभी परेशानियों का एक ही हल है – **'पुष्पधन्वा साधना'**।

. . . पर, पुष्पधन्वा साधना ही क्यों?

सर्वप्रथम तो यह एक लघु एवं एक दिवसीय साधना है, जिसे कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

यह एक दिवसीय साधना अत्यधिक सौम्य साधना है, क्योंकि पुष्पधन्वा बहुत ही जल्दी प्रसन्न होने वाले देव हैं।

यदि जीवन में उल्लास समाप्त हो गया हो और आप आनन्द के निर्झर में ही भीगते रहना चाहते हैं, तो यह साधना करनी ही चाहिए।

दूसरे, यह साधना स्त्री–पुरुष, बालक–वृद्ध कोई भी सम्पन्न कर सकता है। धर्म, जाति आदि का कोई बंधन नहीं है। तीसरे, यह साधना अत्यधिक सौम्य साधना है, और चूंकि पुष्पधन्वा बहुत ही जल्दी प्रसन्न होने वाले देव हैं, इसलिए यह साधना असफल होती नहीं देखी गई।

. . . तो अगर आप जीवन में एक आनन्द का निर्झर बहाना चाहते हैं, अद्वितीय व्यक्तित्व के साथ यश, मान, प्रतिष्ठा के आकांक्षी हैं, अगर अपने प्रेमी/प्रेमिका का हृदय जीतना चाहते हैं, तो यह साधना आपको करनी ही चाहिए।

साधना विधान

जैसा की पहले बताया जा चुका है, यह साधना एक दिवसीय है। इसमें **'पुष्पधन्वा दिव्य यंत्र'**, **'कामदा माला'** एवं गुलाब के पुष्पों की आवश्यकता होती है।

यह साधना **27.12.98** अथवा किसी भी रविवार की मध्य रात्रि में सम्पन्न करनी चाहिए। साधक स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठें और अपने सामने सफेद वस्त्र से ढके बाजोट पर **'पुष्पधन्वा दिव्य यंत्र'** स्थापित कर उसका विधिवत पंचोपचार पूजन करें। इसके उपरांत यंत्र पर गुलाब के पुष्प अर्पित करें और **'कामदा माला'** का भी लघु पूजन सम्पन्न करें। फिर उस माला से निम्न मंत्र की 24 मालाएं मंत्र जप करें –

॥ ॐ ह्रीं पुष्पधन्वा आगच्छ सौन्दर्य सिद्धिं ॐ नमः ॥

Om Hreem Pushpdhanvaa Aagachchh Soundarya Siddhim Om Namah

यह मंत्र बड़ा ही तेजस्वी और शीघ्र फल देने वाला है। कहते हैं, कि तीन माह तक अपने सामने पुष्पधन्वा दिव्य यंत्र रखकर अगर रोज सवेरे इस मंत्र का 21 बार उच्चारण कर लिया जाए, तो भी व्यक्ति सौन्दर्य, सम्मोहन से युक्त अद्भुत व्यक्तित्व का स्वामी हो जाता है।

साधना के उपरांत साधक समस्त साधना सामग्री को एक पोटली में बांधकर दूसरे दिन किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है और व्यक्ति को दैव्य, रति, कीर्ति, काम्य और विजय की स्थिति अपने जीवन में स्वतः ही प्राप्त होने लग जाती है। उसका सारा जीवन बदलने लगता है और वह खुद एक नए व्यक्तित्व का स्वामी हो जाता है।

वास्तव में ही बड़े सौभाग्यशाली हैं, वे जो इस साधना को सम्पन्न कर पाते हैं।

साधना सामग्री पैकेट – 240/-

सर्वथा मुफ्त

नि:शुल्क

राज्य बाधा निवारण यंत्र

यदि कोई व्यक्ति मुकदमे में फंस जाए, कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने में फंस जाए, तो उसका हंसता-खेलता जीवन बिल्कुल मृतप्राय हो जाता है, जीवन छलनी-छलनी हो जाता है... और ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि व्यक्ति जीवन को समाप्त कर देने की सोचने लग जाता है। परिश्रम से इकट्ठी की गई जमा-पूंजी पानी की तरह बहने लगती है।

आपको न्याय मिल सके, मुकदमे में सफलता प्राप्त हो सके, तथा इस उलझन से आपको छुटकारा मिल सके, इसी दृष्टि से इस यंत्र का निर्माण किया गया है। अपने पूजा-स्थान में स्थापित कर, गुरुदेव का ध्यान करते हुए इस यंत्र का नित्य प्रातः काल पूजन करें। तीन माह पश्चात् यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान – "ज्ञान दान".

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। आप भी 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें ?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्ट कार्ड) भरकर भेज दें, कि **" मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप नि:शुल्क "राज्य बाधा निवारण माला" 348/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 48/-) की वी.पी. पी. से भिजवा दें,** वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि देकर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने के बाद मुझे **20** पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।

आपका पत्र आने पर तथा 300/- + डाक व्यय 48/- की वी.पी.पी. से **"राज्य बाधा निवारण माला"** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – 342001, (राज.)
फोन – 0291-432209, टेली फैक्स : 0291-432010

सम्पर्क :- सिद्धाश्रम, ३०६-कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली-३४, फोन: 7182248

GURU in my Heart

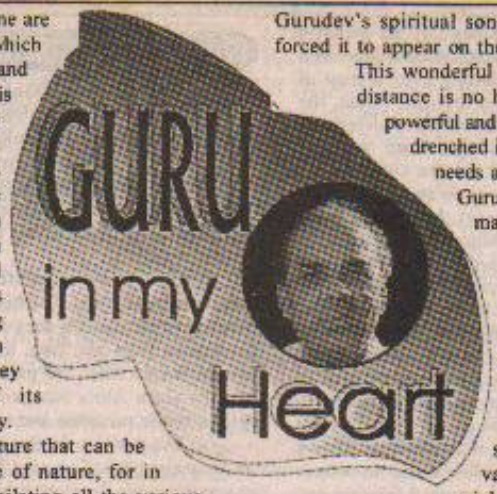

Water, air, food, sunshine are just gross elements which are said to sustain life and make it thrive, while in fact it is the *Guru Tatva*, the Supreme Element that vibrates in each atom of the universe, that in its omnipresence binds the whole cosmos and everything in it in a single unit, that makes the rain delightful, the flowers beautiful and the nature resplendent in its glory. All creatures, all living beings are never separate from this Supreme Element, rather they are vivid expressions of its multifaceted, infinite personality.

Yet man is one creature that can be disturbed from the basic state of nature, for in him is the possibility of assimilating all the various facets of the Guru element. He can climb higher and higher, and for that he has thought. But his thoughts can, instead of propelling him onwards, lead him into gross materialism and darkness. It is to prevent this downfall that the Supreme Guru has to manifest in human form in order to guide, to help, to propel humans towards their highest goal.

The love, the devotion, the benign affection between a Guru and his spiritual child have no parallel in this world and even beyond. These emotions vibrate on a subtle plane which can be touched only with the purest of thoughts & feelings. The symphony of love that is produced when the disciple reaches the Guru's feet, uplifts the soul and leaves it drifting in a sea of ecstasy. Years pass in the Guru's company yet it seems only a few moments have gone by. The thirst ignited by the taste of divine elixir most kindly poured by Him onto one's tongue, leaves one wishing and praying for more & more.

"Ah! Those moments. Only if they could be brought back." This thought assails one's mind again and again when the Guru is not in our midst. To think of a Yogi of Siddhashram and consider that he is no more is utter foolishness, for from that highest plane of existence, Siddhashram, He can and does direct our lives even better. But what to do of the limitations of the human mind which keep reminding that he has gone, and which force tears to the eyes, bring out heart rending sighs and leave one heavy hearted and desperate?

However the Guru who is thousands of miles away, and in a different plane altogether, remains ever concerned about his spiritual sons and daughters and remains ready to let them have his subliminal glimpse through the medium of Sadhanas and Mantras. Their love, their sighs are enough magnets to pull Him to them instantly but they also have to develop inner vision to see his divine subtle form! And for that purpose the ***Guru Atma Sthapan Sadhana*** is the best, most potent and unfailing method, a unique divine ritual that has till now remained under covers of secrecy. But the needs of the Sadhaks, the sighs of Gurudev's spiritual sons & daughters, their love have forced it to appear on these pages here.

This wonderful ritual proves beyond doubt that distance is no hindrance when the Guru is all-powerful and the disciples are fully devoted and drenched in the nectar of His love. One just needs a Mantra-energised photograph of Gurudev and a ***Guru Atma Yantra*** to make this subtle contact.

To the scientific mind this might sound absurd, but who cares about such so-called scientific minds that can devise only robots without any feelings. And how can science explain the wonderful miracles that occur all across the Indian subcontinent in temples of various Gods & Goddesses? They might not believe it but they shall find millions of Indians in the rural belts, and some not yet westernised ones even in urban areas, ready to swear that they have seen divine forces emerge from energised idols in temples and accomplish tasks for them.

This way to interact with the divine forces and its Ultimate Form, the Guru, goes back to thousands & millions of years. Reminiscing of the various historic instances one particular event stands out prominent that provides a glimpse into the wonderful relation between a Guru and a disciple.

The event dates back to the Mahabharat era when hundreds of luminaries had made the scenario in India remarkably glorious. Yet there was also a Guru in those times who was nonpareil when it came to providing training in archery and there was a disciple who glorified his eminent Guru's name by becoming the best archer.

Dronacharya, the Guru, was in the service of the royal court and could take only royal scions under his wing. Hence when Eklavya, the Bheel youth, sought disciplehood Guru Dron was forced to refuse, although he knew that he had a remarkably potential disciple before him.

Yet a true Guru shall never limit his knowledge to a particular group and though Dron found himself physically unable to train Eklavya he decided to guide him subtly. As the rebuffed Eklavya sadly made his way back home, the Guru spiritually planted the thought in his mind to mould a clay idol of the Guru and commence his practice of archery in its presence.

Eklavya's love and devotion for the Guru was just as deep as the Guru's unexpressed affection for him and hence he lost no time in catching the wonderful thought and putting it into practice.

Physically no doubt the Guru Dron was bound by his duty towards the royal family, yet there were no such shackles spiritually; hence he started to guide and tutor his beloved disciple spiritually. O how kind can a Guru be! Even when physically not there, even when he is miles away, he keeps showering his kindness, his love, his affection on his disciples, on his spiritual children.

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

The highest test in those days of an archer's proficiency used to be sealing the mouth of an animal with arrows without hurting it, without letting even a drop of blood to flow. Only to his most able disciple, Arjun, the Guru taught this wonderful art, but unknown to anyone he instilled this skill into Eklavya as well. Both Arjun & Eklavya were equally devoted and for the Guru it was impossible to discriminate, when it came to blessing one with the most exalted trick. However Arjun could not gracefully accept his high accomplishments and started to feel vain. To instil into him some humility Dron took him into the forest for hunting. Their pet dog accompanied them and at a point it suddenly ran away, barking loudly. They followed the way the dog had taken, only to find it returning with its mouth sealed. Arjun was shocked and he said, "Gurudev, you had said that I alone am skilled in this art. How come there's another more skillful archer?"

"Come, let's see!" said Dron and as they emerged into an opening they saw a young man sending arrows into a target with his bow. It was Eklavya and no sooner did his eyes fell on his Master than he rushed forward and bowed in his feet.

Dron blessed him and said, "Who is your Guru?"

Without a word the youth led them into his hut and to the idol of the Guru installed within. Dron was moved by Eklavya's wonderful devotion and he slipped into deep thought. Here was a disciple before him who was brighter than even Arjun, yet his simple background would never help him find place in the pages of history. To the Guru this was unbearable and hence he set into motion a play, a *Leela* that would bring laurels to the disciple for generations to come. Dron knew that the method adopted would attract severe criticism for him, the Guru, but he worried not a bit about his own disrepute.

"You shall have to give Guru Dakshina," he said.

"What do you ask for, O Gurudev?" asked the worthy disciple.

"Give me the thumb of your right hand." And as he spoke these words a terrible pain tore at Dron's heart, but he knew he had to do it.

Without a word, without hesitating for even a moment Eklavya pulled out a dagger and slashed the thumb off and devotingly offered it in his Master's feet. In a second he had sacrificed the very basis of his years of practice and his success as an archer. Yet he could do it without any hard feelings for he knew that the knowledge had been gifted by the Guru and he could demand anything in return. Had he asked for his head, even then he would not have hesitated!

Nothing can compare with this expression of true love. An enlightened master put at stake even his reputation and asked for the impossible just to make his disciple's name immortal, while the disciple too gratefully gifted all he had to the Guru. Dron has been criticised as a false Master who favoured Arjun and demanded Eklavya's thumb so that the former could be the best archer in the world. But nothing could be farther from the truth, for Dron readily accepted abuses just to see Eklavya attain glory as a true disciple.

No one can be more kind, more sacrificing than a Guru who is ready to face abuses and criticisms of the society just to see his disciples rise high in life. But it is very seldom that people are able to recognise the great sacrifices made by a Spiritual Master. It is very rare to find someone who has measured the depth of a Guru's love and affection.

Guru Atma Sthapan Sadhana

24.12.98 or 21st of any month

The Precious Gem of Siddhashram, Revered Swami Nikhileshwaranand Paramhans, who till some days back was with us in the form of Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali, has no doubt left behind the fragrance of his love for us to cherish, but it is very difficult to fathom the great sacrifices that he made for his beloved spiritual children.

He lived his entire life for the good, for the spiritual & material upliftment of his disciples and all of them irrespective of whether they knew him for ten years or a few months miss him from their hearts and souls. It is in these moments when the pain is most unbearable that we need the Guru Atma Sthapan Sadhana, so that we could feel his subtle presence and spiritually interact with him.

The best day for this ritual is 24.12.98, otherwise it can be accomplished on any Thursday or the ninth day of the waxing moon fortnight or the 21st of any month. Take a bath, get into fresh white clothes and sit on a white worship-mat facing the North. Spread a new white cloth. On it place the picture of beloved Gurudev and the ***Guru Atma Yantra.*** Put sandalwood paste marks (*Tilak*) on the forehead, ears, throat, heart, navel, and both arms of Gurudev in his picture. Offer a garland of fragrant flowers. Light incense and a ghee lamp. Chant the following Mantra 108 times, each time offering a few rice grains on the picture and the Yantra.

Aavaahyaami Aatma Svaroopam, Aavaahyaami Praann Svaroopam, Aavaahyaami Mam Deh-Chintyam, Gurutvam Sharannyam Gurutvam Sharannyam.

Now apply sandalwood paste on your own body chanting thus. ***Om Koormaay Namah, Om Aadhaar Shaktaye Namah, Om Prithvyei Namah, Om Dharmaay Namah, Om Gyaanaay Namah, Om Savitraalaay Namah, Om Eishvaryaay Namah, Om Vikaarmayakesharebhyo Namah, Om Panchaasharnnaa-beejaaddhyaa-karnnikaayei Namah, Om Veiraagyaay Namah, Om Aneshvaryaay Namah, Om Anantaay Namah, Om Sarva Tatvaatmakaay Namah, Om Aanandkand Kandaay Namah, Om Prakritmay-patrebhyo Namah.*** Next chant 4 rounds of the Guru Mantra. After that recite 21 rounds of the following Mantra with ***Guru Siddhi rosary.***

Om Hreem Kleem Gurutva Aatma Eikya Hreem Phat

This is a 31 day Sadhana that can be done early in the morning or at night. After the daily recital the Sadhak must lie down with a calm mind. Wonderful & strange scenes might appear in his mind on which he should concentrate deeply. As the Sadhana progresses one shall be able to feel the presence of Gurudev, interact with him subtly and even obtain solutions to one's material & spiritual problems. After the 31 day Sadhana the rosary must be thrown into a river. The Yantra must be established in one's worship-place and the Mantra recital should be continued even afterwards so as to keep the subliminal contact intact.

(Note :- The Sadhana packet for this Sadhana is gifted free. You only have to get two friends or relatives to subscribe to the magazine for one year. For this post the special Sadhana card given on page 52. The articles shall be sent through V.P.P. and you shall have to pay Rs. 195 each as subscription fee and Rs. 48 as post charge (Total Rs. 438). The two subscribers shall receive their copy every month for a year.)

Slake your thirst

Having reached the Mansarovar,
Don't remain thirsty, O my soul.
Let divine elixir fill your being,
For enlightenment is your only goal.

One great soul, Vivekanand, attempted to lead thousands of thirsty souls to the holy lake Mansarovar, to the Guru. Each word of his ever put down on paper stirs the very depths of one's heart and brings out pure feelings hitherto unfathomed. Yet going through his works, in particular the wonderfully illuminating text Rajyog, one has the feeling that he wished to convey something more, but the inescapable wheel of destiny cut short his presence on earth before he could give fulfilment to his spiritual outpourings.

Come to think of it, every spiritual giant remains ever in a terrible dilemma, for so infinite is the screen of spiritual knowledge that stretches before him that he cannot decide what to divulge in such a short life-span. And to add to this is the divine joy, the feeling of total fulfilment which overwhelms them so much that they find it hard to climb down from the ecstatical heights of this divine joy to the gross mundane level where they could interact with the common man and reveal the spiritual secrets to him.

It's here that the difference between a Siddh Sadhak, and a Sadguru emerges. While the former having tasted divine joy finds the joy hard to relinquish, a Sadguru, as the needs of that age might demand, willingly emerges from the ecstatic state of Samadhi and enters the world as a common man ready to face the tensions and problems and gift away the spiritual knowledge that he has. He might come as Buddha, Shankaracharya or even as a simple looking family man, his treasure trove of spiritual gems wide open for the ordinary men and women to loot.

Having done his part it then depends on the individual how he or she pierces the outer form and identifies the divine soul that has incarnated in human form. It is important to mention here that it is foolish to assume that such great souls pull a veil of *Maya* (illusion) over their real forms. It is in fact our confused minds that create Maya and lead us into delusion.

Remaining in the social circle which is filled with hatred, envy, jealousy and lies the Sadguru bears the brunt of all these negative forces and keeps sending out divine radiance. To recognise him one needs something more than the two eyes, one needs inner vision, one needs the power of the Third Eye, for he lives and works in the world as a common man. Some might encash the good Karmas of previous lives and be quick in realising that they have an enlightened being in their midst, while others might have to acquire the grace of the master through Diksha to activate their Sixth Sense.

The bond that exists between a Guru and a disciple is not on the physical plane; it's on a spiritual level. The master might teach outer modes of worship, yet his aim is to lead the disciple to the Sea of Divine Light that is in the latter's own soul. When this happens, every act of the disciple, even his breath becomes dedicated to his loving Guru.

It's love that binds the two, but it's not love of two bodies, it's pure love where each atom of the disciple's body and his soul becomes *Gurumay* or identical with the Guru element. Spiritualism does not mean throttling one's feelings rather its aim is to direct the combined force of all feelings towards one's Guru.

Each sigh that one lets out for the Guru brings one closer to his true form. The Guru wishes for nothing, least of all your money or wealth. All he wants is love and total devotion. And in return he fills the disciple with Divine Ecstasy which purges the mind and soul of all sins and weaknesses. The mind becomes still, the thoughts stop and he starts to feel the presence of the Guru element in every object, in everything around him.

I know not which Sadhana or Diksha might help one to attain this state, but I sure do know that offering oneself totally and unconditionally in the feet of the master is the best, sure and unfailing way. And more importantly there should be but one prayer on one's lips – Enlighten me, O Master!

Without this silent and sincere prayer even a Diksha or a Sadhana would prove futile. As far as the Guru is concerned he has for ages been saying – "The lotus of your heart blooms only when radiance from my soul falls on it, the fragrance that fills your breath is of my name, the blood that rushes through your veins is my own. But you have forgotten how to make your heart throb in pure love. Come to me. I shall teach you!"

No Guru could extend a more open invitation. But one has to do more than just listen to His words. One has to rush to Him, fall in His feet and let one's tears of love wash his toes. To have such a Sadguru in our midst is a great fortune, but if one misses the chance to meet him one has to repent all one's life that he was here and I could gain nothing. However the Sadguru's pain is even more intense and as he breathes his last, the pain tears at his heart that the people did not heed his words and failed to accept what he wished to gift them!

03.12.98

Jyeshttha Laxmi Sadhana

SUCCESS – MATERIAL & SPIRITUAL

For a wise man Laxmi has great significance because he can make use of the wealth in his possession for the good of all. An arrogant person on the other hand having come into money might well try to show off as a social worker yet actual benefits accruing from his side would be nil.

As far as my own experiences in the social circles go, the gentry, the intellectual class generally puts on airs and pooh-poohs at Sadhanas, whenever the topic might come up in some social gathering. Yet it's a fact that although they criticise Sadhanas and all forms of worship in the open, in their hearts they long to try them if only to test their efficacy.

They cannot express their feelings openly and hence they fall easy prey to pseudo-gurus and cheap baseless literature. In fact today their is no dearth of literature that is based on Sadhanas, yet whose authenticity is seriously doubtful. And this is only going to increase, so the only way out is that the real, authentic literature be made easily available.

And if the high intellectual groups of the society enthusiastically join this crusade not only shall they themselves benefit, rather they shall also be able to preserve the knowledge for the future generations in a proper, systematic manner.

I do not in the least mean that only the intellectuals are eligible to enter the world of Sadhanas, rather I want such people who could assimilate the knowledge as well as keep its river flowing way into the future to come forward. Moreover history is witness to the fact that even unlettered men with enlightened souls like Kabeer and Raidas have left behind virtual rivers of knowledge.

The efforts to present this pristine knowledge in a simple form continue to this day and we are fortunate to have had a great and nonpareil exponent of ancient Indian sciences, revered Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali, to guide us. He has led thousands of Sadhaks into the labyrinthine lanes of the Sadhana world and helped unravel mysteries which had been left unsolved even in the most famous spiritual texts.

In fact books can only explain the stepwise procedure of accomplishing a ritual, while in practical life the Sadhak might have to face ten different kinds of problems. It's at this juncture that one needs a Guru, a guide, a teacher.

Keeping in mind the requirements of the present times revered Gurudev consented to let a very secret and hitherto unrevealed Sadhana appear on these pages. And he has not done this for the first time in his life, for he always believed that Sadhanas are divine gifts and not anyone's personal heritage. This is a Sadhana very relevant for this age and it pertains to Laxmi – the Goddess of Wealth and Prosperity.

The Goddess Laxmi has numerous forms, each concerned with a different aspect of life. Eishwarya Laxmi can get you luxury, Vasudha Laxmi can make you a landowner, Aayushya Laxmi can be propitiated for long, healthy life. But there is a form of the deity which not just makes the Sadhak wealthy and rich but also helps him in spiritual and mental upliftment. Jyeshttha Laxmi is the deity in question, and although several texts have been written on Jyeshttha Laxmi, most lack practical aspects of her Sadhana.

But why is this deity and her ritual so important? The reason is that though it is a Tantra Sadhana, even a family man can try it without going into too many strict rules and restrictions.

This ritual must go on lifelong, but if daily recital is not possible one can try a special 5 day ritual with the same effects. If done daily one should chant 3 rounds of the Mantra every day, but if going in for the five day Sadhana one has to chant 51 rounds of the Mantra daily, which shall take not more than 2-3 hrs. every day. And if it's not possible for one to sit continuously for so long one can chant 21 rounds in the morning and 30 rounds at night.

This Sadhana can be started on 3.12.98 or on any auspicious day. It's best to do the Sadhana after 10 p.m. One needs a mantra-energised ***Jyeshttha Laxmi Yantra*** and a ***Kamal Gatta rosary*** for the ritual.

Get into red clothes and sit down cross-legged on a red worship-mat facing South. Offer vermilion and unbroken rice grains and worship the Yantra placed on a wooden seat again covered with a red cloth. Light a ghee lamp or incense.

Chant the following Mantra –

Ayeim Hreem Shreem Jyeshttha Lakshmi
Svayambhuve Jyeshttaayel Namah

Even after the ritual if the Mantra is chanted daily (3 rounds) before the Yantra the effect is said to become a thousand fold. This is not just a presentation of a Sadhana rather it is a cordial invitation to all spiritual aspirants to come forward and try the efficacy of the ritual for themselves.

Sadhana Articles : 210/-

26.12.98

Mahalaxmi Sadhana

It's a well established fact that Bhagwati Laxmi is worshipped, prayed to and propitiated in each and every nation across the globe, although the name, the form, the method of Sadhana of the deity might differ. Without Laxmi there can be no life, for she is the Provider of the entire mankind, she is the deity that bestows comforts, joy, wealth and totality, whether it's a mundane life that you are leading or a spiritual existence.

Yet although most of us recognise Her as the Goddess of Wealth and Prosperity the majority amongst us are victims of poverty, scarcity and problems. Even the bare necessities of life are missing. This is because most of us believe that only hard work brings money, while the fact is that without divine grace no aspect of life, not even wealth can be total.

For this very reason most people in arrogance, in foolish defiance of the divine powers continue to live in utter misery and poverty although they might otherwise be gifted with sharp intelligence and talent. They might try all they can but without the divine element there to catalyse the process of achieving success in life it remains stagnant.

No human whether he is a family man, a business man or a Yogi can do without money. One who realises this basic fact in life can also be made to understand that Laxmi Sadhana is just as important for becoming prosperous as is working hard.

And Sadhana does not mean making offerings or singing hymns, although these might constitute a part of the whole process, rather Sadhana means contacting the divine cosmic beings, the Gods and Goddesses and seeking their help to get rid of poverty, problems, tensions and hurdles in life.

Today you might be very daring and you might even be mesmerisingly eloquent, yet without wealth you cannot earn respect in the society.

Yasyaasti Vittam Sa Narah Kuleenah
Sa Panditah Sa Gunvaan Gunnagya
Sa Ev Vaktaa Sa Cha Darshaneeyah
Sarve Gunnah Kaunchan-maashrayante.

ie. One graced by Laxmi is considered an intelligent, respectful, intellectual person by the society. People seek his advice, his company and friendship. They listen to his words and take great delight in obeying him. He might not have any such qualities but his wealth makes him respectful in the eyes of others.

It's always better to understand this fact that only a person blessed with wealth and prosperity can achieve totality and fulfilment in life. And not just a Sadhak or a Yogi, any person – man, woman or a child – can go in for this Sadhana for gaining wealth, comforts and prosperity.

There are thousands of Sadhanas of as many deities, yet when it comes to wealth and prosperity Bhagwati Laxmi is the only one who can drive away generations of poverty, diseases, scarcity and problems forever from one's life.

There are some important points to take note of while doing this Sadhana.

1. The Sadhana of Mahalaxmi must be accomplished on any day of the bright fortnight of the lunar month.
2. For ensuring success it's better to get ***Mahalaxmi Diksha***.
3. ***Shat Ashtotari Mahalaxmi Yantra*** must be obtained and the Sadhana must be performed sitting before it. This Yantra assimilates within it the divine power of a thousand Laxmis and its inclusion in the Sadhana means quick success.
4. Flowers of rose and lotus are a must in a Laxmi ritual.
5. The Mantra chanting must be done with a Kamalgatta or a Sfatik rosary.
6. One can try this Sadhana in one's house or business place with one's spouse or alone.

Here two very fast acting rituals are being revealed for the aspirants.

Practice I – On any Saturday place a ***Tantrokt Nariyal*** and a ***Shat Ashtotari Mahalaxmi Yantra*** on a red cloth spread over a wooden seat. Worship it briefly and then chant 5 rounds of the following Mantra with a ***Kamal Gatta rosary***.

Om Hreem Shreem Eishvarya Mahaalakshmee Aagachchh Om Namah

After the Sadhana throw the rosary and the Nariyal in a river or pond. **(Sadhana Articles : 201/-)**

Practice II – This ritual based on Eishvarya Mahalaxmi is a potent tool for realising all wishes. The Sadhak must take a bath, wear fresh yellow clothes and write the Beej Mantra (श्रीं) with vermilion on any plate. Over it he must put a flower, on which ***Shat Ashtotari Mahalaxmi Yantra*** must be established. Prayers to the Guru must be offered and then 11 rounds of the undergiven Mantra be chanted with ***Kamalgatta*** rosary.

Om Shreem Vaunchhitam Saadhay Eishvaryam Dehi Hreem Mahaalakshmyel Om Namah

One day after the completion of the ritual disperse all the Sadhana articles in a river. **(Sadhana Articles : 201/-)**

Note: *One can accomplish these rituals separately in the morning, noon, evening or night or if one wishes one can start the next ritual 15-20 minutes after the completion of the first ritual. The best day for performing them is 26.12.98 or any Wednesday of the waxing moon fortnight.*

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

Divyatma Sadhana

Any Sunday

My Invisible Friend

"When the Yaksha put the next question to Yudhishtthir – What's the most surprising thing in this world? And Dharmaraj replied – Thousands die in the world daily, yet every single person thinks death is never going to touch him . . ."

The words struck home and I burst out laughing at the ridiculousness of the whole affair, at the same time shutting the book that I was reading. Everyone does think he is immortal, and this seemed to amuse me to no end.

However the next moment I almost choked on my laughter as the bus I was travelling in hit something with a bone-shattering jolt. The driver had hit the brakes too hard in order to avoid a rock avalanche and the bus skidded to the very end of the roadside that overlooked the valley below. For a moment it seemed it would stop in time as it rammed into a rock. But no, the boulder rolled over the edge, and as screams filled the air the bus rushed into empty space.

And then it stopped, precariously balanced on the edge, its two front wheels and the front portion dangerously jutting out from the precipice. Death loomed large before my eyes, my breath seemed knocked out of my lungs, and then as a flash the words came back –

"Every single person thinks death is never . . ."

I had laughed then, forgetting that I too was a mortal. Now with the spectre of death right ahead I almost sobbed aloud.

What happened next simply boggles the imagination every time I think of it now. I was ready to utter my last prayers when suddenly there was a flash of lightning, not above in the clouds, but next to the very window where I sat. I was almost blinded by it, but I have the distinct memory of seeing a strange visage hanging there in mid-air above the valley, before I shut my eyes. There was again a jolt and I said to myself – This is it! – quite sure that the bus was going to plunge 3000 ft. down to the valley floor. The screams of other passengers reached a crescendo, and then stopped abruptly.

But surprisingly there was no pain, nothing! I opened my eyes. Lo and behold, the bus stood on the road, all its wheels on firm ground. There was a rush to get out, even as loud cries of joy and thanksgiving to the Lord rent the air. But I found it hard to move from my seat. The shock had been too much!

Then I remembered something and craned my neck out of the window to look down the valley. The strange face had disappeared. I had seen it clearly in the flash – a fair complexioned face, long hair, a flowing white beard. But now there was nothing there except for empty space and the sheer drop – a sure pit of death.

One moment the bus had been hanging at the edge and the next it stood on the road as if picked up and placed there. Was that what had happened? The thought seemed absurd but intuition told me that it was true!

Outside, the other travellers stood surrounding the driver some praising him sky high for his remarkable expertise, while the poor fellow stood bewildered, silently listening to the encomiums being showered upon him. Others not so generous, were calling it a miracle and thanking God for saving their lives.

Miracle it sure was! But what really perplexed me was who had worked it? Was I the only one who had seen the old wizened face? It sure appeared thus, for no one talked of the flash or the face. Why was I the only one to have seen it? I had not been hallucinating, of this I was sure, and I knew that there was only one person who could provide answers to all my questions.

The rest of the journey was concluded without any further event except for the discussion amongst the passengers which never seemed to end. And I was sure it would be cited all their lives as a proof of "there being God on Earth".

I finished my work in the city as soon as I could and rushed back home. Without even unpacking, I made my way straight to Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali's place. He seemed to be waiting for me, for although there was a large throng waiting to meet him, I was admitted to his room as soon as I was there. The strange smile on his lips should have told me that he knew everything, but I was too eager to relate the event, to bother about it.

When I had finished, I asked him if it had been some Divine Soul that had saved my life. Again the queer smile played on his lips and he said – "You have forgotten everything. Yes, it's been years, but you shall remember. Stay here tonight and we shall do the Sadhana again."

Again? What did he mean? But before I could enquire, he dismissed me asking me to go to a particular room and prepare it for Sadhana. His special instructions included decking the room with as many rose flowers and garlands as I could find.

This I did and when I had finished, the whole floor was carpeted with fragrant roses. Besides, long strings of roses criss-crossed the walls and the ceiling. As directed I got into white clothes and lay a white mat to sit on. Luckily for me it was a Sunday – the most propitious day for this kind of ritual. Gurudev then summoned me and handed over to me the articles needed for the Sadhana and also discoursed me on its stepwise procedure.

A look at the Sadhana articles and it all came back to me. A few new articles had been added, rest were same. Also now the method elucidated by Gurudev was based on Tantra, while several years earlier I had tried it in the Mantrik way. I distinctively remembered the ritual now – the ***Divyatma Sadhana*** – and I also remembered that I had left it unaccomplished earlier. Now Gurudev had suggested the Tantra way so that success came in the very first attempt.

I sat down on the mat and first of all I spread a white cloth before myself. On it I placed the ***Guru Yantra***. On its right hand side I placed a heap of roses, twenty one in number. It was on it that the Divine Soul was to be invoked. Next I made a mark on the Yantra with sandal-wood paste and offered on it a few rice grains. Then taking the ***Siyar Singi*** I placed it in the middle of the Yantra. I placed seven ***Laghu Nariyals*** around the Yantra in a circle. Next I lit a ghee lamp and burnt some very fragrant incense.

I prayed to the Guru for success and chanted a round of the Guru Mantra with the ***Sfatik Mala***. With the same rosary I then started to recite 21 rounds of the following Mantra –

Vam Siddhaashrame Siddhaatmane Aavaahay Aavaahay Phat

I had hardly concluded one round when the ambience became strangely mystical and almost eerie. I had a creeping feeling that there was someone or something there with me in that room! As I proceeded with my chantings slight rounds, silent footsteps, rustling of clothes made the extra-terrestrial presence all the more evident. Somehow I managed to get to the last round without being distracted, but no sooner had the last recital escaped my lips than a mist enveloped me.

A part of me was ready to spring to the feet and rush out but I concentrated my mind on the Guru Yantra and my courage rushed back. Dark smoke seemed to have filled the whole room and it swirled and moved gently. Soon it took a distinct form and a hazy human figure appeared on the heap of roses. I peered closely at the face and found it to be the dead spit of the Old Soul which had saved my life.

For a moment I thought I was hallucinating but again I controlled my senses and realised that it was a Divine Soul seated before me. As soon as this thought breached my doubts, the hazy face broke into a smile as if in affirmation and then it started to fade away, leaving me there unable to believe that I had successfully accomplished the Sadhana.

The next morning when I returned to the Sadhana room I was amazed to find that the heap of roses graced by the Divine Soul was as fresh as the night before, while the rest in the room looked as ruffled as I did, having just got out of the bed. Carefully I collected the roses in an urn. The rest of the roses and the Sadhana articles found their way into the pond nearby. For several days to come the roses remained as fresh as the morning dew.

When I met Gurudev in the evening he blessed me for my success. "You would have made it years ago had you then not given up the Sadhana mid-way", he said. I knew that much of the credit of my success lay in his blessings and to this day I fondly cherish the moment when he had gifted me the Sadhana, which not just earned me a celestial protector, but also made me realise that Divine Souls are not ghosts or ghouls. They are benevolent spirits from the Land of Siddhashram who can help one overcome all hurdles in life, once they have been propitiated through Sadhana. Besides the hundreds of problems and tensions, there have been at least a score of occasions when I was mortally threatened but managed to emerge unscathed from the ordeal all due to my Divine Friend.

Propitiating such Souls does not mean you can become their master or summon them at your whim. They are highly sensitive, intelligent and omniscient beings who can sense on their own when their presence is required. It's no wonder, for I feel as if I am always being watched by a very powerful, invisible ally who would spring to my help the moment some danger threatened me!

Sadhana Articles : 320/-

Priceless gems authored by
Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali
at unbelievable prices!

- **Fragrance of Devotion**
- **Essence of Shaktipaat**
- **Wealth and Prosperity**
- **The Omnipotent Mahavidyas**
- **Beauty – A Joy Forever**
- **The Celestial Nymphs**
- **Activation of Third Eye**
- **Secrets of Hypnotism**

Rs. 15 per Book

Mail Orders to
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan,
Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur.
Phone: 0291-432209, Fax : 0291-432010

Kaal Gyan Diksha

Pierce The Time Warp

Kaalah Kaalyatam Maham Kaalosmi Lok Kshay Krit Prabudhah.

Time is unconquerable, the supreme element, the entity with no beginning or end, the force that is above all, and even Lord Krishna the great Sadguru and Avatar while accepting the supremacy of Time or Kaal said that even the sun is subject to the Laws of Time.

And to the present day if there is any plane that boggles the minds of the best of geniuses it is Time which we humans have divided into past, present and future. But these are man-made divisions and to a Yogi , a *Kaal Gyata*, an Omniscient Master time is a continuous flux, it is one single chain that extends into infinity on either side of the moment which we identify as the present.

Scientists might try all they can to pierce the mystery of time yet their most modern gadgets are going to prove useless, for there is only one element, one force that can conquer Time, that can unravel and lay bare its secrets. Throwing light on this element which can overcome even Kaal the Shastras state -

Gurudev Jagatsarva Brahma Vishnu Shivaatmakam
Gurouh Paratarram Naasti Tasmaat Sampoojayed Guru.

ie. The entire world, the whole cosmos is *Gurumay* or permeated with the Guru element. Even Brahma, Vishnu and Shiv are the divine forms of Guru. There can be no greater, no higher element than the Guru. Hence the Guru alone is worth being worshipped and meditated upon.

No doubt it is difficult and almost impossible to look into the past or future but once the Guru element is imbibed, once a person becomes one with this supreme force all secrets of the universe become crystal clear to the inner vision. To have such a Guru, such an enlightened master of Kaal Gyan as one's guide can mean sure victory in every sphere of life.

And there have been Spiritual Masters who through their extraordinary clairvoyance paved the path of life of their disciples with flowers of success instead of leaving them to face the usual thorns of troubles, tensions and problems.

One of such Enlightened Souls was the great Guru Varahmihir the supreme astrologer who, it is said, could make the stars and planets marking one's fortunes dance to his tune. He possessed an astounding degree of clairvoyance and several of his works are to this day extolled as virtual gems of astrological knowledge.

The Great King Vikramaditya was his protègé and he never failed to seek directions of the seer before he set about on some venture or task . Whether it was a war, a religious ceremony or construction of some building – whatever the nature of work the Master Varahmihir would be consulted and his word would be command for the astute King. Varahmihir possessed the amazing power of looking back into the past and ahead into the future, and whatever he foreordained was sure to occur.

It was in fact due to this piercing foresight of his Guru that Vikramaditya rose from the shadows of obscurity to the bright sunshine of glory and fame. And if one has such a capability even an ordinary person can achieve any level of success in life. All one needs to have is the power to recognise the value, the impact of each moment *ie.* one should be able to catch the right moment. Even fraction of a second here and there can mean dismal failure instead of success and victory as was demonstrated practically by the great master of Kaal Gyan, Ravan, to Laxman.

No doubt he was a great exponent of this remarkable science but as he later lamented on his death-bed, he had failed to make the best use of it. And hence he misused his divine powers and ultimately committed a heinous crime that brought him face to face with the wrath and fury of Lord Ram. He was defeated and as he lay breathing his last, Ram sent Laxman to him to learn Kaal Gyan.

In Ravan, Laxman found a ready teacher and Ravan said, "The wheel of time keeps rotating and even the Gods cannot deny success in life to a person who can catch the golden moment. But always remember that each moment has its own significance. Once you miss a chance you miss it forever. Let me demonstrate this to you practically. Go bring me seven leaves and a pin."

Laxman complied and Ravan placed the leaves one over the other. Then he picked the pin and waited. In a particular moment he brought the pin down on the leaves and it pierced them right through.

And much to the consternation of Laxman the first leaf had turned golden, the second silver, the third copper, the fourth iron and the seventh remained as it was – an ordinary leaf.

Ravan said, "Look, even the fraction of a second can mean such mountain of a difference."

Truly life can be changed for the better if one learns now to identify the golden moment and make the best of it. This knowledge has thrived in our country for thousands of years; yet in an age of gross materialism it had become almost extinct, when there appeared on the scene a great Yogi and Yugpurush, Dr. Narayan Dutt Shrimali, who resurrected this ancient Indian knowledge to its pristine glory.

Due to his efforts Kaal Gyan is once again a living science, the essence of which can be imbibed through spiritual initiation. It's a great fortune of the present generation that this Diksha is so easily available, and today when life has become an ordeal of tensions, problems, anxieties,enmites, terrorism, violence and hatred, one needs to be all the more equipped with clairvoyance that could help one take the right step in life . It's a golden opportunity for all whether one is a politician, an officer, a businessman or a public servant, to seek this wonderful Kaal Gyan Diksha from a Sadguru who has shown to us this perfect path to success and fulfilment in every sphere of life.

आरोग्य सरिता

आपके अत्यधिक स्नेहयुक्त पत्रों को प्राप्त कर हम आपके किसी भी सुझाव को मानने के लिए उत्साहित हो जाते हैं, अतः इस स्तम्भ का आरम्भ किया गया है, जो व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक रोगों के निदान से सम्बन्धित है, आप इन प्रयोगों को अपनाकर अवश्य ही इसके बारे में हमें अपने विचार भेजें।

१. तनाव से आती है कमजोरी ?

मानसिक तनाव यह एक ऐसा रोग है, जो किसी भी समय व्यक्ति के लिए मानसिक असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न कर देता है और यह असन्तुलन धीरे-धीरे व्यक्ति के पूरे शरीर पर प्रभाव डालने लगता है, जिसके कारण होती है – चिड़-चिड़ाहट, सिरदर्द, माइग्रेन, बाल झड़ना या असमय ही परिपक्वता की ओर अग्रसर हो जाना।

इसका निदान है, कि तनाव को नियंत्रित किया जाए और उन कारणों को समाप्त किया जाए जिनसे तनाव में वृद्धि होती है। आप इस प्रयोग को अपना कर तनाव को नियंत्रित कर सकते हैं तथा उन कारणों को समाप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

'सिद्धि फल' को दाहिने हाथ में लेकर आज्ञा चक्र पर रखते हुए निम्न मंत्र का जप २१ बार करें –

मंत्र

// ॐ ह्रीं ह्रीं गुरुदेवाय विद्महे ॐ ह्री ह्रीं नमः //

Om Hreem Hreem Gururdevaay Vidmahe Om Hreem Hreem Namah

मंत्र जप के पश्चात 'सिद्धि फल' को पूजन स्थान में रख दें। इस प्रकार सात दिन तक करें। सात दिन के बाद सिद्धि फल नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 21/-

२. कहीं आप बीमारी के शिकंजे में तो नहीं फंसते जा रहे हैं ?

बीमारी, रुग्णता अवसाद यह कब हौले कदमों से आकर व्यक्ति को घेर ले – यह तो कोई नहीं जान सकता है, यहां तक कि जानने के बाद भी व्यक्ति इसे हल्के ढंग से ले लेता है और कब कोई एक बीमारी इनका सहारा लेकर उग्र रूप धारण कर पूरी शरीर में फैल जाए यह तो स्वयं आजकल के डॉक्टर भी नहीं स्पष्ट कर पाते हैं। यदि आप भी छोटी-छोटी बीमारियों से ग्रसित होने लग गये हैं तो शीघ्र ही सावधान हो जाइए और स्वयं को सुरक्षित कर लीजिए।

किसी पात्र में कुंकुम से अपना नाम लिखकर हेमांगा स्थापित कर दें। **'हेमांगा'** का पूजन सिंदूर, अक्षत, पुष्प से करें। निम्न मंत्र का जप ३१ बार पांच दिन तक नित्य करें –

मंत्र

// ॐ शं शंभवाय रोगनाशाय रुद्राय फट् //

Om Sham Shambhavaay Roganashaay Rudraay Phat

पांच दिन के बाद हेमांगा को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 65/-

३. डिप्रेशन दूर हो सकता है?

व्यक्ति जब अपनी कामनानुसार किसी वस्तु या लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है, तो उसके मानस में स्वयं के लिए हेयता और घृणा के भाव आने लगते हैं और वह स्वयं को किसी भी कार्य के लिए असफल, अपरिपक्व मानने लगता है; परन्तु व्यक्ति को उसकी इस मानसिकता से भी उबारा जा सकता है।

उस व्यक्ति को यह विश्वास दिलाएं, कि वह प्रत्येक कार्य करने में समर्थ है और साथ ही यह प्रयोग करें या वह व्यक्ति स्वयं करे जो पूर्ण आत्मविश्वास प्राप्त करना चाहता है।

यह प्रयोग आप किसी भी मंगलवार से प्रारंभ कर सकते हैं। उस दिन प्रातः ही उठकर गुरु पूजन करें और निम्न मंत्र का जप २१ दिन तक नित्य ग्यारह बार करें –

मंत्र

// ॐ ऐं मनोरथान् साधय ह्रीं ॐ फट् //

Om Aeim Manorathaan Saadhay Hreem Om Phat

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जप करते समय यह ध्यान रखें, कि मंत्र जप पूर्ण हो, स्पष्ट उच्चारण हो।

४. क्या आपका वजन कुछ दिनों से लगातार कम होता जा रहा है?

अधिक वजन हो तो उसे कम करने के लिए व्यक्ति प्रयास करता है, लेकिन वजन स्वतः ही कम हो और दिन प्रतिदिन और कम होता जा रहा हो, तो व्यक्ति के लिए निश्चय ही यह चिंताजनक तथ्य है। ऐसे व्यक्ति डॉक्टरी सलाह के साथ साथ यदि यह प्रयोग सम्पन्न करें, तो निश्चय ही उन्हें सफलता प्राप्त होगी।

एक पात्र में कुंकुम से '**ॐ**' लिखकर उसमें '**सिद्धक**' स्थापित करें, उस पर जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप ग्यारह बार करें –

मंत्र

॥ ॐ हूं हूं जौं हूं हूं ॐ फट् ॥

Om Hoom Hoom Joum Hoom Hoom Om Phat

जप के पश्चात् जल को अपने ऊपर छिड़क लें। यह प्रयोग २१ दिन तक करें। २१ दिन के बाद '**सिद्धक**' नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 30/-

५. क्या आपको संदैव ही नींद आती रहती है?

स्वस्थ शरीर के लिए पांच से छः घण्टे की नींद पर्याप्त मानी जाती है। परन्तु वर्तमान समय में आधुनिकता की होड़ में दौड़ते-दौड़ते व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से थक चुका है, इतना अधिक डिस्टर्ब हो गया है और मानसिक शांति की इच्छा में उसे प्रायः बेवजह नींद सी आने लगती है, आलस्य बना रहता है। यह नींद कुछ घण्टों की नहीं, अपितु वह तो दिन भर थका-थका स्वयं को नींद में ही अनुभव करता है और लेटने पर भी उसे गहरी नींद नहीं आती है।

ऐसी स्थिति से निकलने के लिए '**ऋण**' को अपने पास निम्न मंत्र का जपकर रख लें –

मंत्र

॥ ॐ चं छं निद्रां दारय उत्सारय ॐ फट् ॥

Om Cham Chhum Nidruam Dauray Utsaaray Om Phat

ऋण को ग्यारह दिन तक अपने पास रखें। ग्यारह दिन के बाद ऋण को निर्जन स्थान में फेंक दें। बाद में जब भी बेवजह नींद व थकान का अनुभव हो तो उपरोक्त मंत्र का जप कर लें।

न्यौछावर – 30/-

६. कई रोगों की रामबाण औषधि – ध्यान

ध्यान सिर्फ आंख बंद करके बैठने की क्रिया नहीं है। यह स्वयं को पूर्ण रूप से ऊर्जावान बनाने के लिए है, बशर्ते ध्यान में गहनता हो। ध्यान के लिए उपयुक्त समय है प्रातः काल, जब वातावरण भी पूर्ण चैतन्य रहता है और प्रकृति भी नूतनता एवं स्फूर्ति का अहसास कराती है। मन को पूर्ण रूप से शान्त करने की प्रक्रिया एवं बाहरी विचारों से सप्रयास कटने की क्रिया से अनेक रोग ठीक होते हैं, शरीर स्वस्थ एवं मन प्रफुल्लित रहता है।

आप भी जब गुरु मंत्र या इष्ट मंत्र का जप करते हुए ध्यान प्रक्रिया में संलग्न होंगे, तो निश्चय ही आप स्वयं को अनेक बीमारियों से मुक्त कर पायेंगे। आप ध्यान करते समय '**गुरु रहस्य सिद्धि माला**' धारण करके बैठें।

न्यौछावर – 300/-

इस मास में होने वाली साधनाएं जो अगस्त अंक में प्रकाशित हैं

10.10.98	**संतान प्राप्ति साधना**	बांझपन का निदान तथा संतान प्राप्ति करने की श्रेष्ठ साधना है।
12.10.98 से 31.10.98 तक	**दीपावली के १०८ प्रयोग**	विभिन्न समस्याओं के समाधान व कार्य सिद्धि हेतु।
18.10.98	**दीपांगना अप्सरा साधना**	जीवन में प्रेम, आह्लाद व रस भर देने की सौंदर्य साधना है।
19.10.98	**अष्ट लक्ष्मी साधना**	दीपावली के अवसर पर आठों प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त करने की साधना।
21.10.98	**वसुधा लक्ष्मी प्रयोग**	जीवन में आर्थिक दृष्टि से उन्नति तथा सुन्दर भवन प्राप्ति/निर्माण हेतु उत्तम साधना है।

रक्त बहने रोग

अर्श रोग की मणि मंत्र चिकित्सा

– डॉ. सन्तोष मिश्र

अर्श रोग की उत्पत्ति का इतिहास प्राचीन काल से ही मिलता है। ईसा से ६००० वर्ष के पूर्व ग्रंथ '**चरक संहिता**' के चिकित्सा स्थान में अध्याय १४ में इसका विषद वर्णन है तथा '**सुश्रुत संहिता**' के निदान स्थान के द्वितीय अध्याय में एवं बाणभट्ट के निदान स्थान के सप्तम अध्याय में भी अर्श रोग का विस्तृत वर्णन है एवं इसके पश्चात् आयुर्वेदीय ग्रंथों में तथा सभी चिकित्सा पद्धतियों में, जो कि लगभग १५० वर्षों में ही विकसित हुई हैं प्रायः अर्श रोग का वर्णन थोड़ा बहुत मिलता है। आयुर्वेद में अर्श के छः भेद मिलते हैं –

१. वातार्श, २. पित्तार्श, ३. कफज अर्श, ४. सन्निपातज (त्रिदोषज) अर्श, ५. रक्तार्श, ६. सहज अर्श

इन छः प्रकार के अर्श रोगों का अधिष्ठान गुदा (रेक्टम, एनस) है। गुदा की तीन वलियां १. प्रवाहिणी, २. विसर्जनी, ३. संवरणी ही अर्श रोग का आश्रय स्थान है। अर्श रोगों के प्रायः ३० हेतु बतलाए गए हैं, जिनसे दोष कुपित होकर त्वचा, मांस व मेद को दूषित करके गुदा आदि में मस्से उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें अर्श कहते हैं।

चिकित्सा

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान में अर्श रोग की चिकित्सा को चार वर्गों में विभक्त किया गया है। यथा –

दुर्नाम्नां साधनोपायः चतुर्धा परिकीर्तितः।
भैषजक्षार शस्त्राग्नि . . . . ॥

अर्थात् १. भैष्यज चिकित्सा, २. क्षार चिकित्सा, ३. शस्त्र चिकित्सा, ४. अग्नि चिकित्सा। इनमें प्रथम भैष्यज चिकित्सा ही औषधि चिकित्सा है।

अर्श रोग की मणि चिकित्सा

मणि चिकित्साओं का वर्णन श्रुत व दर्शन तथा अनुभूत रोग शमनोपायों का ही यहां उल्लेख किया जा रहा है –

मणि शब्द बहुत प्राचीन है तथा विश्व की सर्वप्राचीन लिपी ऋग्वेद में भी मणियों का उल्लेख है। यहां तक कि वानस्पतिक मणियों का भी उल्लेख है, ऋग्वेद के ही यम सूक्त में खदिर मणि का भी उल्लेख मिलता है। मणि शब्द से तात्पर्य गोलाकृति या चपटी गोल या विषमाकृति गोल ऐसी वस्तु है, जिसे धारण करने व दर्शन, स्पर्शादि से सुखानुभूति होती है।

भारतीय संस्कृत व हिन्दी वाङ्मय में अनेक प्रकार की मणियों का उल्लेख मिलता है। जैसे – प्रधान मणियों में कौस्तुभमणि, स्यमन्तक मणि, गजमणि, सर्पमणि, सूर्यमणि, चन्द्रमणि, पारस मणि, मुक्ता मणि व नवरत्नों की मणियों एवं दन्तमणि तथा वानस्पतिक मणियों में रुद्राक्ष, तुलसी, तृणकान्तमणि, पुत्रजीवक, रजनी, कमल बीज मणि माला आदि की मणियां हैं।

अर्श रोग के शमन के लिए, जो मणियां उपयोग में आती हैं; उनमें प्रधान हैं –

१. **बकायन के बीजों** की माला धारण करने से शनैः-शनैः अर्श के दाह व वेदना तथा रक्तच्यवन में कमी आती है।

२. **तृणकान्त मणि (कहरवा) के मणियों की माला** बनाकर सदैव कमर (कटि भाग) में धारण किए रहने से अर्श प्रकोप नहीं होता एवं तृणकान्त मणि की पिष्टी १-१ ग्राम दिन में तीन बार मक्खन के साथ सेवन करने से अर्श रोग की दाह व वेदना तथा रक्त प्रवृत्ति दूर हो जाती है।

३. **प्रवाल, मरकत, चन्द्रमणि, हरिताश्म** आदि के मणियों की माला धारण करने से भी अर्श रोग में दाह व वेदना में लाभ होता है।

५. **तीक्ष्ण या कान्त लौह की मुद्रिका** बनाकर विशेष काल से इसका प्रयोग किया जाता है।

विधि

बुद्धाष्टमी के दिन तीक्ष्ण लौह या कान्त लोहे का जल व दुग्ध से शुद्धि व प्रक्षालन किया जाता है तथा लौहकार या स्वर्णकार से उसी दिन करांगुली में धारण करने योग्य अंगूठियां बनवाई जाती हैं। किसी भी प्रकार के अर्श के रोगी को यह अंगूठी बुद्धाष्टमी या शनिवार के दिन दुग्ध व जल से प्रक्षालित करके अगरबत्ती या धूप दिखाकर दाएं हाथ की मध्यमांगुली में धारण कराई जाती है। विशेष परिस्थितियों में जैसे दाहिनी मध्यमांगुली के अभाव में या दाहिने हाथ में कोई केमिकल आदि का कार्य करते समय वाम हस्त की मध्यमांगुली (सेंटर फिंगर) में भी पहनी जा सकती है। इसके निरंतर धारण करने से सामान्य परिस्थितियों में अर्श प्रकोप नहीं होता अपवाद स्वरूप विशेष परिस्थितियों में यदि होता भी है तो शीघ्र ही शान्त हो जाता है।

६. रविपुष्य नक्षत्र में बांदाल वृक्ष के बांदे को लाकर अर्श रोगी को धारण कराने से भी अर्श में शान्ति मिलती है।

इस प्रकार अर्श रोग में मणि धारण अपने प्रभाव से ही कार्य करते हैं।

२. अर्श रोग की मंत्र चिकित्सा

अर्श रोग की मंत्र चिकित्सा से भी मानसिक व शारीरिक वेदना में लाभ की अनुभूति होती है। मंत्र कुछ अक्षरों के विशेष मेल से बनता है, प्रत्येक वर्ण या अक्षर ब्रह्म कहलाता है। मंत्र अनेक प्रकार के होते हैं तथा इनसे जो ध्वनियां निकलती हैं, वे आकाशीय तत्व ईथर आदि को प्रभावित करके व्यक्ति के शरीर को प्रभावित करता है। मंत्र चिकित्सा में आस्था होना आवश्यक है, आस्थावान व्यक्ति ही इसका पूर्ण लाभ प्राप्त करता है। अनास्थावान या नास्तिक को इसका लाभ नहीं मिल पाता। अर्श चिकित्सा का साबर मंत्र प्रस्तुत है –

मंत्र

अरस भगन्दर गुदाविचार।
वाह वेदना रक्तरूकाव।
गुरु गोरख नाथ की दुहाई।
नहीं मिटै तो अश्विनी कुमारों की दुहाई॥

यह साबर मंत्र है। साबर मंत्रों की रचना तब हुई जब कि वेदोक्त व शास्त्रीय मंत्रों को देवता व ऋषियों के द्वारा प्रकोपित होकर कीलन कर दिया गया था। साबर मंत्रों के प्रथम आचार्य भगवान शिव माने जाते हैं तथा गुरु गोरखनाथ, जलन्धरनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, नागार्जुन आदि ने भी साबर मंत्रों की रचना की थी। इन आचार्यों के द्वारा जो साबर मंत्रों की रचना हुई, वर्णमाला के अनुसार उनके अर्थ भले ही कुछ भी निकलते हैं, किन्तु उचित साधना से उनका लाभ साधक को या रोगी को मंत्र के प्रभाव से अवश्य मिलता है।

उपयोग

एक पात्र में जल को उक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके रोगी को कुछ जल पीने को देते हैं तथा कुछ जल से गुदा प्रक्षालन हेतु प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार निरंतर तीन से सात दिन के प्रयोग से अर्श का प्रकोप शान्त होने लग जाता है।

विशेष – आप अपने डाक्टर की सलाह लेकर ही किसी प्रयोग को आजमाएं।

स्वस्थ शरीर के स्वर्णिम सूत्र

इन सूत्रों को यदि दैनिक जीवन में अपनाया जाए, तो अनेक छोटे-मोटे रोग व्याप्त होते ही नहीं तथा शरीर व मन दोनों ही स्वस्थ बने रहते हैं।

१. *नित्य प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठें तथा कम से कम एक गिलास पानी पिएं।*
२. *स्नान करने के बाद पैर के दोनों अंगूठे पर सरसों का तेल लगाएं।*
३. *भोजन से आधा घण्टा पहले तथा एक घण्टे बाद तक जल बिल्कुल न लें। भोजन के मध्य एक-दो घूंट पानी ले सकते हैं।*
४. *भोजन के तुरन्त बाद मूत्र त्याग करें। यथासम्भव हो तो मूत्र त्याग बैठकर करें।*
५. *यदि सम्भव हो, तो भोजन के बाद दस मिनट तक बाईं करवट लेटें।*
६. *फिर वज्रासन में आधा घण्टा बैठें। दिन में यदि सम्भव न हो, तो रात में सोने से पूर्व ऐसा करें, इससे पाचन क्रिया अच्छी रहती है।*
७. *भोजन के समय दाहिना स्वर तथा पानी पीते समय बांया स्वर चलना चाहिए।*
८. *मल त्याग के समय दाहिना स्वर तथा मूत्र त्याग के समय बांया स्वर चलना चाहिए।*
९. *रात को सोते समय नाभि में सरसों का तेल लगाकर सोएं।*

इन नौ सूत्रों को अपनी दिनचर्या में उतारने से आप का स्वास्थ्य निखरता चला जाएगा, जिससे आप स्वयं ही आश्चर्यचकित रह जाएंगे। प्रत्येक सूत्र पर ही एक लम्बी विवेचना की जा सकती है, परन्तु स्थानाभाव के कारण सूत्रों को संक्षेप में ही दिया गया है।

पाठकों के पत्र

● **बालकिशन शर्मा, बड़बर, झुंझनू** से लिखते हैं, कि मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के माध्यम से गुरुदेव ने साधनाओं की बरसात कर दी है। प्रत्येक माह प्रकाशित होने वाले अंक में कुछ न कुछ नया व दिल को छू लेने वाला प्रयोग मिल ही जाता है। सच तो यह है, कि तंत्र के पुराने साधकों को एक अनमोल खजाना व नए साधकों को मार्ग दर्शन प्राप्त होता है।

● **तेजपाल शर्मा, गाजियाबाद** से लिखते हैं, कि मेरी आपसे प्रार्थना है, कि आप शीघ्र से शीघ्र मंत्र महार्णव, मंत्र संहिता, मंत्र महोदधि जैसे उच्चकोटि के तांत्रिक-मांत्रिक ग्रंथों का प्रकाशन करें, जिससे सभी साधक इस विद्या का लाभ उठा सकें तथा यह तंत्र विद्या पृथ्वी पर रह सके।

● **गोपी शंकर चौबे, गोपालपुर, बलिया** से लिखते हैं, कि इस पत्रिका में विविध साधनाओं का प्रकाशन किया जाता है, परन्तु **'श्री विद्या'** जैसी गुप्त विद्या व **'श्री यंत्र'** पर वृहद सारगर्भित लेख का अभाव रहा है। कृपया **'श्री विद्या महा विशेषांक'** के रूप में एक अंक निकालें, जिसमें श्री विद्या सम्बन्धी पूर्ण साधनात्मक ज्ञान व पूर्ण सांगोपांग विधि का प्रकाशन हो। प्रत्येक महाविद्या पर एक-एक विशेषांक, जैसे तारा विशेषांक, षोडशी विशेषांक आदि प्रकाशित हो।

आपकी आकांक्षा शीघ्र ही पूरी होगी। हमारा यही प्रयास है, कि पाठकों को महाविद्या से सम्बन्धित सारगर्भित जानकारी प्राप्त हो।

— सह सम्पादक

● **नगमीत कौर, नई दिल्ली** से लिखती हैं, कि मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में जब जड़ी-बूटियों या घरेलू उपचार आदि के बारे में जानकारी छपती है, तो कृपया उसे विस्तार पूर्वक दें। हर पहलू पर प्रकाश डालते हुए यदि उसकी प्रस्तुति हो, तो पाठकों को और अधिक अच्छा लगेगा तथा उनके ज्ञान में वृद्धि होगी।

● **प्रकाश बागुल, सेन्धवा, खरगोन** ने लिखा है, कि यह पत्रिका मुझे अत्यधिक प्रिय है, मैं बेसब्री से पत्रिका का इन्तजार करता हूं। पत्रिका के संरक्षक पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी जैसे व्यक्तित्व के सान्निध्य में कोई भी व्यक्ति पूर्णता प्राप्त कर सकता है, कृपया अप्सरा साधना से सम्बन्धित विशेषांक प्रकाशित करें।

अप्सरा साधना से सम्बन्धित पुस्तक का भी प्रकाशन हुआ है, आप उसे प्राप्त कर अप्सरा साधना से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

— सह सम्पादक

● **मृगेन्द्र कुमार, बागपत, मेरठ** से लिखते हैं, कि **'विश्व की अलौकिक साधनाएं'** के ग्यारहवें अध्याय **'साबर साधनाओं के करिश्मे'** में ६ प्रयोग वर्णित हैं। उन प्रयोगों में कुछ कमी रह गई हैं, जैसे प्रथम प्रयोग के मंत्र की संख्या नहीं है, दूसरे प्रयोग में मंत्र नहीं है, तीसरे और चौथे प्रयोगों में मंत्र में माला का नाम नहीं है। यदि सम्भव हो, तो उन्हें पत्रिका में प्रकाशित करें, जिससे हमें पूर्ण प्रयोग प्राप्त हो सके।

इस पुस्तक का जो नवीन संस्करण प्रकाशित हो रहा है, उसमें बहुत अधिक सुधार एवं संशोधन किया गया है। यदि आप उसका अध्ययन करेंगे, तो निश्चय ही आपकी शिकायत दूर हो जाएगी।

— सह सम्पादक

● **एस. आर. मचली, ओरछा, बस्तर** से लिखते हैं, कि जिस प्रकार प्रत्येक विज्ञान की एक पारिभाषिक शब्दावली होती है तथा जिसका एक निश्चित अर्थ होता है, उसी प्रकार 'मंत्र-तंत्र-यंत्र' भी एक विज्ञान है तथा साधना सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों का भी विशेष अर्थ होता है। कृपया पत्रिका का एक या आधा पन्ना एक नए स्तम्भ **'पारिभाषिक शब्दावली'** के लिए सुरक्षित रखें, ताकि नवीन साधकों, पाठकों, शिष्यों को इस विशेष व गूढ़ विज्ञान की सम्यक जानकारी सरलता से हो सके। जो लोग शिविरों में भाग नहीं ले पाते, उनके लिए पत्रिका का यह प्रयास सराहनीय होगा।

आपका सुझाव सराहनीय है, इस विज्ञान से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावली नववर्ष से अवश्य प्रारम्भ कर दी जाएगी।

— सह सम्पादक

● **विष्णु कु. पाटीदार, बजरंग नगर, इन्दौर** से लिखते हैं, कि आपने सदस्यों को भेजी जाने वाली पत्रिकाओं पर **'Not for Sale'** छाप कर बहुत ही अच्छा किया है और कार्यालय इसके लिए साधुवाद का पात्र है। इससे सदस्यों की शिकायतें कुछ कम हुई हैं। हमारी प्रिय पत्रिका घर-घर पहुंचे, ऐसी ही आशा रखता हूं।

साधक कृपया ध्यान दें

1. जोधपुर कार्यालय में सम्पर्क करने के लिए अब टेलिफोन नं० बदल गया है। नया टेलिफोन नं० है 0291-432209 एवं फैक्स नं० है 0291-432010 (फोन नं० के पहले 4 अंक जुड़ गया है)

2. सितम्बर माह की पत्रिका के पृष्ठ क्रं० 70 पर दी गई 'दिव्यात्मा साधना' की तारीख 1.1.98 न होकर 1.11.98 (दिवस रविवार) है। इसके अलावा इस साधना को किसी भी रविवार के दिन भी प्रारम्भ किया जा सकता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नक्षत्रों की वाणी

मेष

यह माह आपके लिए सभी दृष्टियों से सामान्य रहेगा, लेकिन जीवन के अनेकों पहलुओं को प्रभावित करने वाले संघर्ष शुरू होंगे। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग सामान्य ही रहेगा। आपको स्वयं की मौलिक सूझबूझ एवं चतुराई के कारण आप सफलता प्राप्त करने में सक्षम होंगे। इसके अलावा आप साधनात्मक प्रक्रिया का सहारा लेकर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस माह आप **'भैरव साधना'** पुस्तक से **'भैरव कवच'** का पाठ करें। कारोबारी मामलों को लेकर शिथिलता रहेगी लेकिन नौकरीपेशा व्यक्ति उत्साहित रहेंगे। पारिवारिक प्रसंगों को लेकर शिथिलता न बरतें तथा वाहन प्रयोग के समय उत्तेजना से बचें।

वृष

व्यापार के क्षेत्र में नवीन निर्णय लेने से आर्थिक लाभ होगा। मित्रों का सहयोग प्राप्त करना आपके लिए आवश्यक होगा। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। रुका हुआ धन प्राप्त होगा, वहीं लिया हुआ ऋण भी लौटाना पड़ेगा। आपके निर्णय सही व सटीक होते हैं फिर भी आप निर्णय लेने में किसी प्रकार की जल्दबाजी न करें। राजकार्य आसानी से पूरे होंगे तथा जीवनसाथी का सहयोग मधुर व अनुकूल रहेगा। प्रेम प्रसंगों को लेकर सावधानी बरतें तथा समाज में मान-सम्मान की स्थिति को बनाये रखें। माह की पूर्ण अनुकूलता के लिए **'दुर्लभोपनिषद'** का पाठ करें।

मिथुन

कारोबारी मामलों को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। जो कार्य आपने हाथ में लिए हैं पहले उन्हें ही पूरा करें। किसी को कष्ट पहुंचाने वाला अथवा किसी को धोखा देने वाला कोई भी कार्य न करें। जीवनसाथी की ओर से सहयोग प्राप्त होगा, लेकिन स्वास्थ्य सम्बन्धी मामलों को लेकर परेशानी का सामना करना पड़ेगा। वाहन का प्रयोग सावधानी पूर्वक करें। पूर्ण रूप से अनुकूलता के लिए **'महाकाली कवच'** का पाठ करें। किसी से किया हुआ वायदा भी समय से पूरा करें अन्यथा विवाद उत्पन्न होकर परेशानी होगी।

कर्क

आपके सहयोग से किसी मित्र का रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। लेकिन मित्रों का सहयोग आपको प्राप्त होगा ऐसा दिखाई नहीं देता, फिर भी आप प्रयास कर अनुकूलता प्राप्त करने में सफल होंगे। धन का आगमन आशा अर्थजनक रूप से होगा, लेकिन सम्बन्धियों के कारण तनाव भी व्याप्त हो सकता है। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति इस माह में विशेष लाभान्वित रहेंगे। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी तथा घर में सुख-सुविधा के साधनों का विकास होगा। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर व्यस्तता रहेगी। माह की पूर्ण अनुकूलता के लिए **'शिव महिम्न स्तोत्र'** का पाठ करें।

सिंह

नौकरीपेशा वर्ग के व्यक्ति इस माह में विशेष उत्साहित रहेंगे तथा जीवन के अनेक पक्षों को लेकर अनुकूलता प्राप्त करेंगे। कारोबारी मामलों को लेकर यात्रा के योग बनेंगे तथा कार्य को लेकर भी तनाव व व्यस्तता रहेगी। पारिवारिक मामलों की किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें। लिया हुआ धन समय पर लौटाएं तथा राजबाधाओं का निपटारा सूझबूझ के साथ करें। आप अपने मन की बात शीघ्र ही दूसरों पर विश्वास कर प्रकट कर देते हैं अपनी इस कमजोरी पर ध्यान दें तथा संयम से काम लें। माह की पूर्ण अनुकूलता के लिए **'बगलामुखी कवच'** का पाठ करें।

कन्या

यह समय आपके लिए विशेष सावधानी और सूझबूझ के साथ गुजारने का है। आवश्यक नहीं, कि कोई आपकी बात माने ही, परन्तु आप किसी की भी बात अनसुनी न करें तथा ध्यानपूर्वक विचार करके ही निर्णय लेकर जीवन को गतिशील करें। जीवनसाथी का सहयोग सामान्य ही रहेगा, परन्तु मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी मामलों को लेकर आर्थिक व्यवहार में वृद्धि होगी। शत्रुपक्ष से विशेष सावधानी बरतें। पूर्ण अनुकूलता प्राप्त करने के लिए **'शत्रु संहारक यंत्र'** को स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें। यात्रा में किसी भी प्रकार की जल्दबाजी न करें तथा जमीन-जायदाद के मामलों को लेकर किसी भी प्रकार की उपेक्षा न बरतें। आपके सहयोग से मित्रों का कार्य पूर्ण होगा।

तुला

साझेदारी एवं कारोबार के मामलों को लेकर पूर्ण सतर्कता से रहें। जीवनसाथी से चले आ रहे मतभेद समाप्त होंगे। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बनेंगे तथा जीवन को हतोत्साहित करने वाले प्रसंगों को लेकर अधिक परेशान न हों। इस माह की सम्पूर्ण अनुकूलता के लिए आप **'सिद्धि माला'** से नित्य गुरु मंत्र का ४ माला मंत्र जप करें। कला जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ के साथ समाज में मान-सम्मान भी प्राप्त करेंगे।

वृश्चिक

नौकरीपेशा वर्ग के व्यक्ति जीवन में उत्साह का अनुभव करेंगे तथा पदोन्नति एवं मनोनुकूल स्थानान्तरण के योग बनेंगे।

सर्वार्थ, अमृत, रवि पुष्य, गुरु पुष्य सिद्ध योग

इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

4 अक्टूबर – रवि योग
6 अक्टूबर – अमृत सिद्ध योग
10 अक्टूबर – अमृत सिद्धि योग, रवि योग, सर्वार्थ सिद्ध योग
11 अक्टूबर – त्रिपुष्कर योग
18 अक्टूबर – सर्वार्थ सिद्ध योग, अमृत सिद्ध योग
22 अक्टूबर – सर्वार्थ सिद्ध योग
23 अक्टूबर – सर्वार्थ सिद्ध योग, रवि योग
24 अक्टूबर – रवि योग
25 अक्टूबर – रवि योग
26 अक्टूबर – रवि योग
27 अक्टूबर – रवि योग, त्रिपुष्कर योग
29 अक्टूबर – रवि योग
30 अक्टूबर – रवि योग
31 अक्टूबर – रवि योग

व्यापारी वर्ग के व्यक्तियों के लिए यह माह मध्यम ही रहेगा। पारिवारिक प्रसंगों को लेकर किसी भी प्रकार की उपेक्षा न करें। अनेक बाधाओं के बाद भी धन का आगमन सरलता पूर्वक ही रहेगा। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेंगे। रुका हुआ धन प्राप्त होगा तथा यात्रा योग बनेंगे। अनुकूलता के लिए पूरे माह आप निम्न मंत्र का जप नित्य ३१ बार जप करें –

॥ ॐ श्रीं श्रीं सौभाग्य सिद्धिं ॐ नमः ॥

Om Shreem Shreem Soubhaagya Siddhim Om Namah

प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व सावधानी पूर्वक अवश्य विचार कर लें।

धनु

आपका सहयोग आपके मित्रों के लिए अभूतपूर्व होगा, परन्तु आपको भी मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा ऐसा दिखाई नहीं देता। कारोबारी मामलों को लेकर स्वयं के प्रयास ही कारगर सिद्ध होंगे। कारोबारी विस्तार के मामलों को लेकर यात्रा के योग बनेंगे। इस माह में दो लाभ तथा चार खर्च की स्थिति बनने से तनाव होगा। कला जगत के व्यक्ति स्वास्थ्य के मामलों को लेकर तनाव महसूस करेंगे, आर्थिक दृष्टि से सामान्यतः यह सप्ताह आपके लिए अनुकूल ही कहा जा सकता है। जीवनसाथी की ओर तथा पारिवारिक प्रसंगों की ओर आप पूरा ध्यान दें। वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें। इस माह में अनुकूलता के लिए नित्य **'गुरु गीता'** का पाठ करें। अनुकूल तारीखों में ६, १५, १९, २२, २७ रहेंगी।

मकर

यह समय आपके लिए विशेष उथल-पुथल से भरा रहेगा। किसी भी मामले में की गई जल्दबाजी आपके लिए संकट का कारण बनेगी। यूं तो आप बड़ी से बड़ी परेशानी में भी घबराते नहीं हैं फिर भी संयम और सूझबूझ से आप काम करें। स्वास्थ्य को लेकर भी किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। कला जगत में व्यक्ति आर्थिक मामलों को लेकर उत्साहित रहेंगे। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर भी यात्रा योग बनेंगे। कारोबारी मामलों में विशेष सावधानी बरतें। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। पूर्ण अनुकूलता के लिए नित्य **'हनुमान चालीसा'** का पाठ करें।

कुम्भ

आपके लिए यह माह सामान्यतः उथल-पुथल से भरा ही रहेगा, किसी भी प्रकार की जल्दबाजी या हड़बड़ाहट आपके लिए हानिप्रद हो सकती है। मित्रों के साथ छोड़ जाने से तथा धन आगमन के रुक जाने से मानसिक तनाव का सामना करना पड़ेगा। जीवनसाथी के सहयोग से रुके हुए व उलझे हुए कार्य पूर्ण होंगे। श्रमिक वर्ग आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे, वहीं स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतना आवश्यक होगा। कला जगत के व्यक्ति उत्साहित रहेंगे तथा महिलाओं के लिए यह आवश्यक होगा कि वे अपने पारिवारिक प्रसंगों की ओर पूरा ध्यान दें। माह की पूर्ण अनुकूलता के लिए नित्य **'महालक्ष्मी पूजन'** करें।

मीन

कारोबारी मामलों में आप किसी के बहकावे में आकर कोई भी कार्य न करें। मित्रों एवं सम्बन्धियों के सहयोग से कोई रुकी हुई बड़ी उलझन दूर होगी। अदालती मामलों को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए यह समय रोजगार प्राप्ति की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। धार्मिक तथा मांगलिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बनेंगे। प्रेम विवाह के मामलों को लेकर अनुकूलता प्राप्त होगी। किसी को कष्ट पहुंचाने वाला कोई भी कार्य न करें। इस माह में आपके लिए नित्य निम्न मंत्र का जप करना अनुकूल रहेगा –

॥ ॐ ह्रीं फट् ॥

Om Hleem Phat

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

1 अक्टूबर	– आश्विन शुक्ल पक्ष १०	विजया दशमी
2 अक्टूबर	– आश्विन शुक्ल पक्ष ११	पापंकुशा एकादशी
3 अक्टूबर	– आश्विन शुक्ल पक्ष १२	शनि प्रदोष व्रत
4 अक्टूबर	– आश्विन शुक्ल पक्ष १३	गुरु सिद्धि दिवस
5 अक्टूबर	– आश्विन शुक्ल पक्ष १५	शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान
8 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष ०३	करक/करवा चौथ, तारा जयंती
10 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष ०५	स्कंद षष्ठी
12 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष ०८	अहोई अष्टमी, राधाष्टमी
15 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष ११	रमा एकादशी
16 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष ११	गोवत्स पूजा
17 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष १२	धन त्रयोदशी
18 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष १३	रूप चतुर्दशी
19 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष १४	महालक्ष्मी पूजन, दीपावली
20 अक्टूबर	– कार्तिक कृष्ण पक्ष ३०	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
21 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ०१	कमला महाविद्या दिवस
22 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ०२	भाई दूज
25 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ०५	ज्ञान पंचमी, सौभाग्य प्राप्ति दिवस
26 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ०६	सूर्यषष्ठी, कार्तिकेय जयंती
28 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ०८	गोपाष्टमी
29 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ०९	अक्षय नवमी, वसमहाविद्या दिवस, सद्गुरु श्रद्धानन्द समाधि दिवस
31 अक्टूबर	– कार्तिक शुक्ल पक्ष ११	देव प्रबोधनी एकादशी

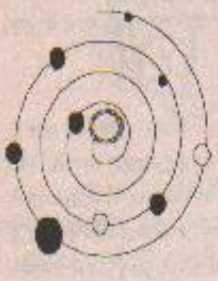

नवग्रहों के अधिदेवता

क्या आप जानते हैं, कि नवग्रह पूजन के साथ ही उनके सहयोगी ग्रहों का पूजन भी करना चाहिए?

मुख्यतः सभी प्रकार के पूजन में नवग्रहों का स्थापन व पूजन विशेष रूप से सम्पन्न किया जाता है। नवग्रहों की स्थापना का उद्देश्य यही होता है, कि यदि कोई ग्रह पीड़ा पहुंचा रहा है, तो अन्य ग्रहों के साथ उस ग्रह का पूजन कर ग्रह शांति की जाय। यदि व्यक्ति के जीवन में निरन्तर कलह बढ़ती ही चली जा रही है, तो ग्रहों का पूजन करना उसके लिए अति उत्तम उपाय होता है। 'ग्रह शांति' कवच बन कर उसका निवारण कर देती है। चित्त की उद्विग्नता हो या फिर कोई शुभ कार्य का आरम्भ हो या फिर कोई विपत्ति अचानकआ जाए, तो ग्रह शांति करना आवश्यक हो जाता है, ऐसा अनेक ग्रंथों में भी पढ़ने को मिलता है।

नवग्रह शांति तुष्टि तथा पुष्टि दोनों के लिए आवश्यक कर्म है। नवग्रह हैं – सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु। प्रत्येक ग्रह मानव जीवन पर विशेष प्रभाव डालते हैं और यदि कोई ग्रह कुप्रभाव डाल रहा है और उसकी उचित तरीके से ग्रहशांति न करवाई जाए तो जीवन में भयंकर उथल-पुथल भी मच जाती है। किसी-किसी ग्रह का कुप्रभाव तो इतना अधिक होता है, कि व्यक्ति राजा से रंक बन जाता है।

इन्हीं ग्रहों से सम्बन्धित होते हैं ग्रहों के अधिदेवता अर्थात् उनके सहयोगी देवता। मुख्य ग्रहों के पूजन के साथ-साथ इन अधिदेवों का पूजन भी विशेष महत्व रखता है। यदि मुख्य ग्रहों के पूजन के समय इन ग्रहों का भी सही ढंग से पूर्ण रूपेण पूजन नहीं होता है, तो सफलता की स्थिति कम ही देखने में आती है।

इन अधिदेवताओं के पूजन का महत्व मुख्य ग्रहों के पूजन के समान ही बताया गया है। 'छान्दोग्योपनिषद' में एक स्थान पर ग्रहों के पूजन के विषय में विवरण प्राप्त होता है, वहां पर स्पष्ट है, कि जिस देवता या देवी का पूजन करना है, उनका स्वरूप क्या है? उनके मण्डल के विभिन्न देवता कौन-कौन से हैं ? यह जानना आवश्यक है। इसके अनुसार स्पष्ट होता है, कि यदि व्यक्ति अज्ञानता वश किसी देव या देवी का पूजन करता है, तो उसकी ऐच्छिक सफलता संदिग्ध हो जाती है। सिर्फ आधे-अधूरे पूजन से या साधना से किसी भी साधक को सफलता नहीं मिल सकती है अपितु इस प्रकार साधना करने पर आपका समय भी व्यर्थ जाता है और धन भी व्यय होता है तथा आपकी समस्या जहां की तहां रह जाती है। उसका कोई निदान भी नहीं होता है, इसीलिए ग्रंथों में कहा गया है, कि सामान्य पूजन भी हो, तो उसे पूर्ण विधि विधान से ही सम्पन्न करना चाहिए अन्यथा उनका प्रभाव व्यर्थ ही जाता है या फिर साधना विधि स्वयं गुरु से प्राप्त हुई हो, तो वह पूजन या साधना सफल होती है।

नवग्रहों के पूजन के साथ ही साथ ग्रहों के अधिदेवता का पूजन भी आवश्यक है। अतः इन नवग्रहों के अधिदेवता का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है –

१. ईश्वर

प्रथम ग्रह '**सूर्य**' के अधिदेवता 'ईश्वर' को माना गया है। भगवान शिव के विशेष स्वरूप को 'ईश्वर' कहते हैं। वेदों में इन्हें विशुद्ध ज्ञानस्वरूप बताया गया है। ये अपने भक्तों को अतुलनीय ऐश्वर्य प्रदान करने वाले, अनन्त राशियों के स्वामी हैं।

ध्यान –

सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः ।
सर्व व्यापी स भगवांस्तस्मात् सर्वगतः शिवः ॥

२. उमा

भगवती उमा द्वितीय ग्रह 'चन्द्र' ग्रह की अधिदेवता मानी

गई है। उमा को पराशक्ति कहा गया है। 'उमा' पार्वती का ही स्वरूप है। ऋषि श्रेष्ठ भगवती उमा का ध्यान इस प्रकार करते हैं –

अक्षसूत्रं च कमलं दर्पणं च कमण्डलुम् ।
उमा बिभर्ति हस्तेषु पूजिताः त्रिदशैरपि ॥

३. स्कन्द देवता

'मंगल' ग्रह के अधिदेवता 'स्कन्द कुमार' हैं। ये भगवान शिव के अंश तथा माता पार्वती के ही एक स्वरूप स्वाहा देवी के पुत्र हैं। इसी से इन्हें स्कन्द कुमार कहते हैं। इनके स्वरूप का ध्यान वर्णन इस प्रकार से है –

कुमारः धन्मुखः कार्यं शिखिखण्डविभूषणः ।
रक्ताम्बरधरो देवो मयूरवरवाहनः ॥
कुक्कुटश्च तथा घण्टा तस्य दक्षिणहस्तयोः ।
पताका वैजयन्ती स्याच्छक्ति कार्या च वामयोः ॥

४. विष्णु

'विष्णु' को 'बुध' ग्रह का अधिदेवता माना गया है। पुराणों में विष्णु को सभी देवताओं से श्रेष्ठ माना जाता है। ब्रह्माण्ड के संचालक त्रिदेवों में से ये एक देवता हैं। विष्णु को पालनकर्ता माना गया है। इनका ध्यान इस प्रकार है –

यस्तं विश्वमजाद्यान्तमाद्यं स्वात्मनि संस्थितम् ।
सर्वज्ञमगतं विष्णुः सदा ध्यानाद् विमुच्यते ॥

५. ब्रह्मा

'ब्रह्मा' 'बृहस्पति' ग्रह के अधिदेवता हैं। ये विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुए हैं। इनके मुख से निरन्तर चारों वेद उच्चरित होते रहते हैं। इनका ध्यान निम्न प्रकार से है –

चतुर्मुखं चतुर्बाहुं चतुर्वेदयुतं विभुं,
चतुर्दशांश्च लोकान् च रचयन्तं प्रणमाम्यहम् ॥

६. इन्द्र

'इन्द्र' 'शुक्र' ग्रह के अधिदेवता हैं। ये सन्तुष्ट हो जाने पर समस्त प्राणियों को बल, वीर्य, धन-धान्य, समृद्धि प्रदान करते हैं। इनकी शक्ति अपरिमित मानी गई है। इनका स्वयं का लोक है जहां ये वास करते हैं। इनका ध्यान इस प्रकार से करना चाहिए।

श्वेतहस्तिसमारूढं वज्रांकुशलसत्करम् ।
सहस्र नेत्रं पीताभमिन्द्रं हृदि विभावये ॥

७. यम

'यम' 'शनि' ग्रह के अधिदेवता माने गए हैं। यम भगवान सूर्य के पुत्र हैं। इन्हें मृत्यु का देवता भी माना जाता है। इनके स्वरूप का ध्यान इस प्रकार से है –

पाशः संयुतमेघसन्निभतनुः प्रघोतनस्यात्मजो,
नृणां पुण्यकृतां शुभावहवपुः पापीयसां दुःखकृत् ।
श्रीमद्दक्षिणदिक्पतिर्महिषजो भूषांभरालङ कृतो,
ध्येयः संयमनीपतिः पितृगणस्वामी यमो दण्डभृत् ॥

८. काल

काल 'राहु' ग्रह के अधिदेवता हैं। संसार के समस्त पदार्थों पर काल का प्रभाव व्याप्त होता ही है। प्रत्येक प्राणी काल द्वारा ही संचालित है। काल की अभ्यर्थना इस प्रकार से की जानी चाहिए –

स एव कालः भुवनस्य गोप्ता विश्वाधिपः सर्वभूतेषुगूढ ।
यस्मिन् युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च तमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति ॥

९. चित्रगुप्त

चित्रगुप्त 'केतु' के अधिदेवता हैं। चित्रगुप्त प्राणियों के कर्म का जन्म से ले कर मृत्यु तक का लेखा-जोखा करते हैं। चित्रगुप्त का ध्यान इस प्रकार करें –

अपीच्यवेशं स्वाकारं द्विभुजं सौम्यदर्शनम्
दक्षिणे लेखनीं चैव इवं वामे च पत्रकम् ॥
पिंगलश्मश्रुकेशाक्षं चित्रगुप्तं विभावयेत्

साधक को चाहिए, कि जब वह नवग्रह का स्थापन करें तो उनके अधिदेवता का भी ध्यान अवश्य करें, जिससे साधक अपनी साधना को पूर्णता दे सकें।

नवग्रह प्रयोग

नवग्रह शान्ति जीवन में भाग्योदय के लिए एक श्रेष्ठ उपाय माना गया है। ग्रहों के कुप्रभाव के कारण ही कई बार व्यक्ति जीवन में उन्नति नहीं कर पाता है और अपने लक्ष्य को पाने में असफल सिद्ध होता है। इसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना उचित रहता है –

किसी भी शनिवार को बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर नौ ढेरियां बनाएं, उन नौ ढेरियों पर एक-एक सुपारी रखें, उसके सामने एक पात्र में **'नवग्रह शान्ति यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर उसके समक्ष घी का दीपक जला दें। निम्न मंत्र का जप नित्य आधे घण्टे तक **'नवग्रह माला'** से करें –

॥ ॐ सं सर्वारिष्ट निवारणाय नवग्रहेभ्यो नमः ॥

Om Sam Sarvaarishtta Nivaaranaay Navagrahebhyo Namah

इस प्रकार मंत्र जप २१ दिन तक करें। २१ दिन के बाद सामग्री किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री पैकेट – 150/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

ब्रह्मज्ञानी नचिकेता

— के. सुधाकर राव

उपनिषदों की संख्या बहुत है, उनमें १०८ उपनिषदों को श्रेष्ठ मानते हैं। उनमें से भी दस उपनिषद् अत्यन्त प्रधान माने जाते हैं। इस लेख का मूल आधार कठोपनिषद् है, जो दशोपनिषदों में एक है।

'ब्रह्म' को जो जानता है वही ब्रह्मज्ञानी कहलाता है। नचिकेता एक महर्षि का पुत्र था। उसके पिता का नाम था 'वाजश्रवस्'। वाजश्रवस् ने एक बहुत बड़े सर्वमेध यज्ञ का आयोजन किया, जो सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। शास्त्र रीति के अनुसार यज्ञकर्ता वाजश्रवस् ने गरीब ब्राह्मणों को गौदान करना प्रारम्भ किया।

नचिकेता उस दृश्य को देखता रहा, उसे पिता के गौदान में एक न्यूनता नजर आई, दान में केवल रुग्ण और कमजोर गायें दी गईं। नचिकेता ने प्रश्न पूछा —

— 'पिता जी आप रुग्ण, दुर्बल गाय को ही दान में दे रहे हैं, ऐसा क्यों ?'

— 'बेटा! तुझे कुछ भी मालूम नहीं। तुम चुप रहो।'

— 'पिताजी! बूढ़े पशुओं को दान करने से क्या लाभ होगा। आप मुझे दान कर दीजिए।'

वाजश्रवस् मौन होकर गौदान कर रहे थे।

— 'पिता जी! आप मुझे किसको देंगे?'

इस प्रकार तीन बार नचिकेता ने प्रश्न किया। वाजश्रवस् क्रोधित हुए। उन्होंने कहा — 'तुझे मृत्यु को दूंगा।'

पिता के वचन सुन कर नचिकेता चकित हो गया। फिर वह पितृवाक्य मान कर सीधे यमराज के निकट पहुंच गया। उस समय यमराज बाहर गये हुए थे, तीन दिन तक भूखा, प्यासा उनके द्वार पर नचिकेता प्रतीक्षा करता रहा। यमराज वापस आ गये। पत्नी के माध्यम से नचिकेता के आगमन के बारे में सुनकर यमराज ने स्वयं अतिथि के पास आकर क्षमा याचना की।

— 'नचिकेता! आप हमारे अतिथि हैं। आप को तीन दिन तक भूखा रहना पड़ा। इस पाप के प्रायश्चित के रूप में, मैं आपको तीन वर देने का इच्छुक हूं।'

— 'यमराज! आप मेरा प्रणाम स्वीकार करें। पहला वर यह दें, कि मेरे पिताजी मुझसे नाराज हैं, उनका क्रोध शांत होना चाहिए। दूसरा वर यह दें, कि भगवन्! जरा-मरण-शोक यह विचार पृथ्वी लोक में ही है और मैं इनसे परे होना चाहता हूं अतः आप मुझे सिद्धाश्रम पहुंचने की विधा प्रदान करें। वहां केवल आनन्द ही आनन्द है।

तब यमराज ने प्रसन्न होकर कहा — 'नचिकेता! मैं तुम्हारी श्रद्धा से अत्यन्त प्रसन्न हूं। सिद्धाश्रम प्राप्ति की विधा तो मैं तुम्हें प्रदान करूंगा साथ-साथ एक और वर तुम्हें प्रदान करता हूं। आज से अग्नि तुम्हारे ही नाम से पुकारी जायेगी। अग्नि को लोग 'नचिकेत' कहेंगे।'

यमराज से नचिकेता ने कहा — 'भगवन् मरने के बाद आत्मा अमर हो जाती है। कुछ लोग आत्मा के अस्तित्व को मानते हैं तो कुछ नकारते हैं। मुझे ब्रह्मज्ञान प्रदान करें। यही मेरा तीसरा वर है।'

यमराज उसको प्रलोभन देते हैं —

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून्
पशून् हस्ति हिरण्यमश्वान् ।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च
जीव शरदो यावदिच्छसि ॥

'नचिकेता! दीर्घायु, पुत्र, पौत्र, गाय, हाथी, सोना, घोड़े, भू-धन मांगो। जब तक चाहे तब तक सौ साल से भी ज्यादा जियो, लेकिन ब्रह्मज्ञान का वर मत मांगो।'

लेकिन नचिकेता ज्ञानी था। उसने सारे प्रलोभनों को अस्वीकार किया और ब्रह्मविद्या प्राप्ति का वर फिर दोहराया।

अंततोगत्वा यमराज को ब्रह्मज्ञान प्रदान करना ही पड़ा। यमराज ने कहा–

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतत्
तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरो ऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मंदो योग–क्षेमान् वृणीते॥

अर्थात् मोक्ष को 'श्रेय' तथा संसार को प्रेय कहते हैं। इन दोनों में से धीर व्यक्ति श्रेय को ही स्वीकार कर लेते हैं। तुमने कंकड़, पत्थरों को लात मार कर, ज्ञान को चुना, तुम धन्य हो!'

आत्मा का स्वरूप

यमराज के मुख से ज्ञान गंगा का अजस्र प्रवाह निकल रहा था। यम ने कहा –

सर्वे वेदा यत्पदमामनंति
तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्यो मित्येतत्॥

'नचिकेता! सारे वेद जिस परमपद का वर्णन करते हैं, सारी तपस्याओं में जिसका चिंतन किया जाता है, जिसके लिए ज्ञानी ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस परमतत्व के बारे में स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूं। वह है – 'ॐ', यह ॐ ही आत्मा है। जरा-मरण से परे है। शाश्वत है, सत्य है, शरीर के मरने पर भी यह जिंदा रहती है। यह परमाणु से भी सूक्ष्म है। पर्वतों से कई गुना महान है। इस आत्मा को जानने के बाद सारे शोक, मोह, द्वन्द्व, तनाव अपने आप नष्ट हो जाते हैं।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः
तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥

यह आत्मा प्रवचन से, मेधाशक्ति से, शास्त्र पांडित्य से मिलने वाली नहीं है। जो इसे चाहता है, उसी को यह आत्मा मिलती है। साधनाओं का अंतिम लक्ष्य यही है। अंतर्मुखी बनना, जितेन्द्रिय बनना, अपने मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण रखना इन सभी क्रियाओं के माध्यम से आत्मा की प्राप्ति हो सकती है। इन सब क्रियाओं के लिए योग्य गुरु की महती आवश्यकता है।

उत्तिष्ठत! जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथ स्तत्कवयो वदन्ति॥

'हे! सज्जनों, आप सभी जागें। गुरु के पास जाकर आत्मज्ञान प्राप्त करें। आध्यात्मिक पथ पर चलना छुरी की धार पर चलना है।'

इस प्रकार ज्ञानोपदेश देने के बाद यम ने नचिकेता को सिद्धाश्रम प्राप्ति की विद्या भी प्रदान की। नचिकेता अपने गुरु यमराज को प्रणाम कर अत्यन्त प्रफुल्लित मन से घर लौटा। उधर वाजश्रवस् भी पुत्र के पुनरागमन से अत्यन्त प्रसन्न हो गए।

इस कथा का सारांश यह है, कि मनुष्य को मृत्यु से परे होकर अमृततत्व के रास्ते को अपनाना चाहिए। अमृततत्व का मार्ग उतना आसान नहीं जितना हम समझते हैं।

योग्य गुरु के चरणों में अपना शीश झुका कर अमृतत्व के ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। जब तक गुरु का सहारा नहीं मिलता, तब तक मृत्युलोक में, माया-जालों में भटकना समाप्त नहीं होगा। यही यमराज का उपदेश था।

यही कठोपनिषद की व्याख्या भी है।

शिष्यता के सात सूत्र

भगवत्पाद शङ्कराचार्य ने 'शिष्य', और सही मायने में कसौटी पर खरे उतरने वाले शिष्य के सात सूत्र बताए हैं, जो निम्न हैं। आप स्वयं ही मनन कर निर्णय करें, कि आपके जीवन में ये कितने संग्रहित हैं –

अन्तेश्रियै यः – जो आत्मा से, प्राणों से, हृदय से अपने गुरुदेव से जुड़ा हो, जो गुरु से अलग होने की कल्पना करते ही भाव विह्वल हो जाता हो।

कर्तव्यं श्रियै नः – जो अपनी मर्यादा जानता हो, गुरु के सामने अभद्रता, अशिष्टता का प्रदर्शन न कर पूर्ण विनीत नम्र पूर्ण आदर्श रूप में उपस्थित होता हो।

सेव्यं सतै दिवौ च – जिसने गुरु सेवा को ही अपने जीवन का आदर्श मान लिया हो और प्राण प्रण से गुरु की तन-मन-धन से सेवा करना ही जीवन का उद्देश्य रखता हो।

ज्ञानामृते वै श्रियं – जो ज्ञान रूपी अमृत का नित्य पान करता रहता है और अपने गुरु से निरन्तर ज्ञान प्राप्त करता ही रहता है।

हितं वै हृदं – जो साधनाओं को सिद्ध कर लोगों का हित करता हो और गुरु से निरन्तर ज्ञान प्राप्त करता ही रहता है।

गुरुर्वै गतिः – गुरु ही जिसकी गति, मति हो, गुरुदेव जो आज्ञा दे, बिना विचार किए उसका पालन करना ही अपना कर्तव्य समझता हो।

इष्टो गुरुर्वै गुरुः – जिस शिष्य का इष्ट ही गुरु हो, जो अपना सर्वस्व गुरु को ही समझता हो।

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय के ये सभी रूप यहां प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति या अवनति के कारण होते है तथा जिन्हे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नीचे दी गई सारणी में समय को तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है – श्रेष्ठ, मध्यम और निकृष्ट। श्रेष्ठ समय जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निकृष्ट समय का उपयोग तो सदा से निषिद्ध है, क्योंकि यदि बनते हुए कार्य का प्रारम्भ भूल वश भी निकृष्ट समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि निकृष्ट समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (4, 11,18, 25 अक्टूबर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 12.24 से 2.48 तक सायं 4.24 से 4.30 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	प्रातः 10.00 से 12.24तक दोपहर 2.48 से 4.24 तक रात्रि 9.12 से 11.36 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक सायं 4.30 से 7.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक
सोमवार (5, 12, 19, 26 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 6.00 तक सायं 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक सायं 6.00 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	प्रातः 10.48 से 1.12 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
मंगलवार (6, 13, 20, 27 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 10.00 से 10.48 तक दोपहर 12.24 से 2.48 तक सायं 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक सायं 5.12 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	प्रातः 10.48 से 12.24 तक दोपहर 2.48 से 5.12 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
बुधवार (7, 14, 21, 28 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 11.36 तक सायं 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 11.36 से 12.00 तक दोपहर 1.30 से 2.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 10.48 से 2.00 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 12.00 से 1.30 तक दोपहर 2.00 से 5.12 तक सायं 6.00 से 6.48 तक
गुरुवार (1, 8, 15, 22, 29 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 6.48 तक प्रातः 10.48 से 12.24 तक दोपहर 3.00 से 6.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक	प्रातः 5.12 से 6.00 तक प्रातः 8.24 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 1.30 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक प्रातः 6.48 से 8.24 तक दोपहर 12.24 से 1.12 तक दोपहर 1.30 से 3.00 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 9.12 से 10.00 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक
शुक्रवार (2, 9, 16, 23, 30 अक्टूबर)	प्रातः 9.12 से 10.30 तक प्रातः 12.00 से 12.24 तक दोपहर 2.00 से 6.00 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 2.00 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 9.12 तक दोपहर 12.24 से 2.00 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 10.30 से 12.00 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
शनिवार (3, 10, 17, 24, 31 अक्टूबर)	प्रातः 10.48 से 2.00 तक प्रातः 5.12 से 6.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 9.00 तक दोपहर 2.48 से 4.24 तक सायं 6.48 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 9.00 से 10.48 तक दोपहर 2.00 से 2.48 तक सायं 4.24 से 5.12 तक सायं 6.00 से 6.48 तक

18, 19 अक्टूबर, दीपावली शिविर, जोधपुर

देव भूमि — कर्म भूमि
जोधपुर में
समस्त गुरु भाई-बहिनों को
प्यार भरा आमंत्रण

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यन्या वहोरात्रे,
पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुंम इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥

हे जगदीश्वर! जिस आप की समग्र शोभा और सब ऐश्वर्य दो स्त्रियों के तुल्य वर्तमान दिन रात आगे पीछे आपमें व्याप्त हैं, सूर्य और चन्द्र आपके मुख के समान हैं। ये समस्त नक्षत्र आपकी रूप राशि हैं, आप मेरे परोक्ष मुख को चाहते हुए मेरे लिए तथा सबके लिए दर्शन देकर हमें कृतार्थ कीजिए।

मनुष्य अपने जीवन में अनेक वरदान प्राप्त कर पृथ्वी पर आता है और जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुंचने में समर्थ हो जाता है। उसे अपने जीवन में श्रेष्ठ माता-पिता, श्रेष्ठ मित्र, सहयोगी और उससे भी अधिक ईश्वर कृपा से श्रेष्ठ सद्गुरुदेव प्राप्त होते हैं, जो उसके जीवन के मार्गदर्शक व पथप्रदर्शक होते हैं। वे उसे बार-बार ज्ञान कराते हैं, कि यह मनुष्य जीवन अत्यन्त विलक्षण है, इसके प्रत्येक क्षण में एक माया एक रहस्य छुपा है। जैसे-जैसे, क्षण-क्षण इन रहस्यों का समाधान प्राप्त करते रहोगे तो जीवन आभायुक्त, श्रीयुक्त हो जाएगा और सही अर्थों में जीवन जीने का आनन्द प्राप्त कर सकोगे। यह ज्ञान केवल श्रेष्ठ गुरु के माध्यम से सम्भव होता है, क्योंकि गुरु का जीवन अपने शिष्यों को अपने मानस पुत्रों को सदैव कुछ देने के लिए ही तत्पर रहता है। दैनिक प्रार्थना में जब व्यक्ति कातर होकर प्रार्थना करता है, कि मैं मंत्रहीन, क्रियाहीन, भाग्यहीन हूं, मुझ पर कृपा करो तो उस पर ईश्वरीय कृपा कैसे हो सकती है? कर्महीन, मंत्रहीन और भाग्यहीन व्यक्ति तो पशुवत् ही है और सद्गुरु उसे दीक्षा के माध्यम से मंत्रयुक्त, साधना के माध्यम से क्रियायुक्त और दिव्य वरदान से उसे सौभाग्ययुक्त बना देते हैं। इन तीनों का योग निश्चित समय पर अर्थात् श्रेष्ठ मुहूर्त में ही सम्भव हो पाता है।

दीपावली केवल घी-तेल के दिए जलाकर मिठाई खाकर उत्सव सम्पन्न करने का एक पर्व मात्र नहीं है। यह तो कालरात्रि है, यह कालखण्ड जो कि धनत्रयोदशी से प्रारम्भ होकर द्वितीया तक पांच दिवसीय रहता है एक अद्भुत मुहूर्त

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

है – यह मुहूर्त जीवन को कर्मशील, भाग्यशील मंत्रयुक्त करने का पर्व है, काल का कोई भी खण्ड अपनी पुनरावृत्ति नहीं करता, जहां जिस क्षण का उपयोग आपने कर लिया, वह क्षण आपके जीवन को श्रेष्ठ दिशा में ले जाने में समर्थ हो जाता है। कहते हैं, कि **'चूके तो चौरासी'** अर्थात् यदि समय निकल गया, तो पुनः चौरासी लाख योनियों का भ्रमण है और यदि समय का सही उपयोग कर लिया तो इसी जीवन में पूर्णता है, सिद्धाश्रम प्राप्ति है।

लक्ष्मी केवल धन नहीं है, यह सहस्र रूपों में विद्यमान है और सहस्र कोटि रूप से धारण की जाती है, तो जीवन योगमय, तपोमय और तेजस्वी बन जाता है। अपने जीवन में कोई भी आभा लेकर उत्पन्न नहीं होता, केवल अपने कर्म और भाग्य से ही आभा मण्डित होता है, इसलिए लक्ष्मी को आधार शक्ति कहा गया है। यह दरिद्रता का नाश करने वाली विष्णु प्रिया कोटि सूर्य प्रकाशयुक्त, रूपिणी, अनन्ता, वैष्णवी, ज्ञानज्ञेय, विकासिनी, सुशान्ता, यंत्रवाहिनी, गम्भीरा रिद्धि, अनुग्रह शक्ति, अमृत नन्दिनी, धूमा, कलावती, महाशक्ति, प्राणशक्ति, प्राणदात्री, प्रतिम्बरा, इच्छाधरा, त्रिगुणगर्विता, कलिकलमषनाशिनी, महामाया, योगमाया, कीर्तिजया, काष्ठा, निष्ठा, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठा, सर्वार्थसाधिनी, अध्यात्मविद्या प्रदायिनी, हिरण्यगर्भा, त्रैलोक्य सुन्दरी, वरदा, श्रीयंत्रविराजिता, मोहिनी, सर्व कामप्रदा, सर्वमंगला, धनेश्वरी, सर्वकाम श्रमिदा, कमलाक्षी, सर्वोत्कृष्टा, सर्वमयी, सर्वेश्वर प्रिया है। यह तो लक्ष्मी के कोटि स्वरूपों में से कुछ रूप हैं। ऐसे विविध स्वरूपों का आह्वान केवल शुभ मुहूर्त में किया जा सकता है।

पिछले वर्ष परम पूज्य सद्गुरुदेव ने दीपावली से कुछ पूर्व कहा था –

"प्रिय! दीपावली का पर्व सम्मुख है। उस महारात्रि के आगमन के क्षण समीप हैं, किन्तु अब तुम्हारे जीवन में और 'कालरात्रियां' न हों, तुम काल के चक्र से आबद्ध न रह सको, इसी से मैंने अपने निश्चय में कुछ परिवर्तन कर इस पर्व को एक नूतन भाव में सृजित करने का मानस निर्मित कर लिया है। यूं तो तुम दीपावली का पर्व अपने घर पर भी मना सकते हो अथवा जोधपुर आकर भी एक परम्परागत ढंग से मना सकते थे, किन्तु जब मैं स्वयं तुम्हारा आह्वान करूं तो मेरे शब्दों के पीछे गूढ़ अर्थवत्ता छिपी होती है। यदि तुम इन शब्दों को सामान्य भाव से न ग्रहण करो – तो अनुभव कर सकोगे कि मैं एक प्रकार से न केवल 'श्री' को वरन् इसी 'श्री' की आध्यात्मिकता को तुम्हारे जीवन में उतार देने का मानस निर्मित कर चुका हूं। मेरे निश्चय को पूर्णता देना तुम्हारा धर्म, कर्त्तव्य और शिष्यता है और यह तभी सम्भव होगा, जब तुम एक उछाह के साथ इस दीपावली के पर्व पर मेरे सम्मुख जोधपुर में उपस्थित होंगे।

यह तो मैं खुद नहीं जानता, कि मेरा तुम्हारे साथ, तुम सभी शिष्यों के साथ कैसा नाता जुड़ गया है, कि कर्म संन्यास की भाव भूमि स्पर्श कर लेने के बाद भी मैं मुड़-मुड़ कर तुम सभी की ओर देखने को बाध्य हो जाता हूं। तुम समझ सकोगे या नहीं समझ सकोगे, किन्तु मेरा तुम सभी से जो सम्बन्ध है उसके समक्ष 'प्रेम' शब्द भी कुछ गौण पड़ने लग जाता है। विगत अनेक वर्षों से साधना, दीक्षा और अपनी ही तपस्या के अंश शक्तिपात के द्वारा तुम्हें प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण करने में मैंने अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी है, किन्तु तुम्हारे चेहरे पर अपूर्णता की आ रही एक रेखा भी मेरे हृदय में कुछ काट सा देती है, क्या तुम इसको समझ सकोगे?"

जहां देवताओं का वास हो, वह गुरु आश्रम कहलाता है, जहां साधक-शिष्य दिव्य तपोभूमि पर आराधना, पूजा कर सकता है, वहां साधक मंत्रहीन, क्रियाहीन और भाग्यहीन नहीं रह सकता। जब साधक गुरु के साक्षी में मनसा वाचा कर्मणा अर्थात् मन, वचन और कर्म से साधना करता है, तो उसे जीवन में आधिदैविक, आधिभौतिक एवं परमानन्द की प्राप्ति होती है और इसका आधार सर्वप्रथम गुरु और उनके साथ लक्ष्मी ही है, यह ध्रुव सत्य है।

गुरुधाम जोधपुर में कई आयोजन हुए हैं, यह देवभूमि गौरवयुक्त है, मंत्रयुक्त है, इस पवित्र भूमि पर मैं पूज्य सद्गुरुदेव का तुच्छ शिष्य स्वामी हरिनाथ जोधपुर स्थित सभी गुरुभाईयों के साथ आप सभी गुरु भाईयों को आमंत्रित करने की इच्छा रखता हूं, कि आप दीपावली के शुभ अवसर पर तेजोमयी माताश्री और पूज्य गुरुदेव की त्रिधारा श्री नन्दकिशोर जी, श्री कैलाशचन्द्र जी व श्री अरविन्द जी के सान्निध्य में यह साधना पर्व प्रारम्भ करें, जिससे हम सिद्धाश्रम में आसीन हमारे प्रभु पूज्य सद्गुरुदेव जी की पूर्ण कृपा प्राप्तकर्ता बन सकें और प्रेरित हो सकें।

मैं तो केवल अपने हृदय के भावों द्वारा आपसे निवेदन कर सकता हूं, आप भी सद्गुरुदेव के आत्म अंश हैं, आप अवश्य आएंगे।

– स्वामी हरिनाथ एवं समस्त जोधपुर स्टाफ

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

15 अक्टूबर निम्न मंत्र का जप ग्यारह बार करके कार्य पर जाएं।

'ॐ श्रीं ह्रौं जौं सर्व साधय ॐ नमः' (Om Shreem Hroum Joum Sarvam Saudhay Om Namah)

16 अक्टूबर गुड़ तथा चने का दान देने से सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

17 अक्टूबर रसोई घर में अगरबत्ती लगाकर भगवती लक्ष्मी का ध्यान कर ही कार्य का आरंभ करें।

18 अक्टूबर प्रातः पूजनादि करके घर के बाहर तेल का दीपक लगा दें।

19 अक्टूबर लक्ष्मी पूजन करें, सफलता मिलेगी।

20 अक्टूबर **'श्रीसूक्त'** का पाठ करके ही कार्य पर जाएं।

21 अक्टूबर अन्नपूर्णा देवी का ध्यान करके कार्य पर जाएं।

22 अक्टूबर **'वरदा'** (न्यौछावर – **30**/-) को पूरे दिन अपने पास रखें सफलता की संभावना बढ़ेगी।

23 अक्टूबर निम्न श्लोक का पाठ करके ही कार्य पर जाएं –

सः तत्वज्ञ चैत्य शिवमय भयं वेद श्रुतिधिं,
श्व कर्म देवोपि त्व व च सिद्धिं परिश्रुतः ॥

24 अक्टूबर हनुमान चालीसा का पाठ करके ही कार्य पर जाएं।

25 अक्टूबर भगवान सूर्य का ध्यान करके ही कार्य पर जाएं।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेन याति भुवनानि पश्यन् ।

26 अक्टूबर निम्न मंत्र का जप करके ही कार्य पर जाएं –

'ॐ महादेवाय विद्महे ॐ नमः' (Om Mahaadevaay Vidmahe Om Namah)

27 अक्टूबर हनुमान विग्रह के समक्ष तेल का दीपक लगा दें।

28 अक्टूबर **'गुरु चित्र'** का पूजन करके ही कार्य पर जाएं।

29 अक्टूबर घर के दरवाजे पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर अक्षत चढ़ाएं, प्रणाम करें।

30 अक्टूबर **'सौभाग्य गुटिका'** (न्यौछावर **51**/-) को धारण करके ही कार्य पर जाएं।

31 अक्टूबर भगवान विष्णु का ध्यान करके कार्य पर जाएं।

1 नवम्बर **'निखिलेश्वरानंद षटकम'** का पाठ करने के बाद ही किसी कार्य पर जाएं।

2 नवम्बर भगवान विष्णु का ध्यान करके ही कार्य पर जाएं।

नाना रत्नोल्लसित विविधाकल्पमापीत-वस्त्रम् ।
विष्णुं वन्दे वर कमल कौमोदकी चक्र पाणिम् ॥

3 नवम्बर निम्न श्लोक का पाठ करके ही कार्य पर जाएं –

अजोऽहमजरोऽहं च अनादिनिधनः स्वयम्
अविकारश्चिदानन्दः अणीयान्महतो महान् ।

4 नवम्बर एक इलायची को लेकर निम्न मंत्र पढ़कर ग्रहण कर लें, कार्यों में सफलता मिलेगी –

'ॐ नमः निखिलानन्दः सर्वभावमयस्तकः' (Om Namah Nikhilanandah Sarvabhaav-mayastakah)

5 नवम्बर तुलसी के पौधे में जल अर्पित करें।

6 नवम्बर भगवती पार्वती का पूजन करके ही कार्य पर जाएं।

7 नवम्बर गणपति का ध्यान करके ही कार्य पर जाएं।

8 नवम्बर **'आदित्य स्तोत्र'** का पाठ करें।

9 नवम्बर पांच बत्ती का दीपक लगाकर पूजा स्थान में रख दें, सफलता मिलेगी।

10 नवम्बर चुटकी भर नमक घर के दरवाजे पर रखते हुए कार्य पर जाएं।

11 नवम्बर **'भैरव स्तोत्र'** का पाठ करके ही कार्य पर जाएं।

12 नवम्बर **'श्री सूक्त'** का पाठ करके ही आज कार्य का आरम्भ करें।

13 नवम्बर सरसों के दानें अपने सिर के ऊपर से घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

14 नवम्बर घर के बाहर थोड़ा जल डाल दें, उसके बाद ही कार्य पर जाएं।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

की

वार्षिक सदस्यता

के साथ

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

नवरात्रि एवं दीपावली के शुभ मुहूर्तों में सिद्ध दुर्लभ उपहार

'इच्छा विहीनं पशुः' – जिस मनुष्य की कोई इच्छा न हो, आकांक्षा न हो उसका जीवन पशुतुल्य ही है। जीवन का सौभाग्य तो तब है, जब व्यक्ति इच्छा करे और वह पूरी भी हो जाए। आपा-धापी के इस युग में, मनुष्य की इच्छाएं तो बढ़ गई हैं, परन्तु प्रयास के बाद भी जब वह उन इच्छाओं को साकार नहीं कर पाता है, तब उसका निराश व हताश हो जाना स्वाभाविक है।

आपकी अनेक आकांक्षाओं व समस्याओं को देखते हुए पत्रिका कार्यालय द्वारा समय-समय पर विशिष्ट प्रभावकारी दिव्य ऊर्जा से पूरित सामग्री उपलब्ध कराई गई है –

- **हिरण्यगर्भ गुटिका** – भगवान सूर्य के तेजस्वी मंत्रों से चैतन्य इस गुटिका को धारण करने से आपमें भी वही तेजस्विता, प्रखरता आ जाएगी जो भगवान कृष्ण के पुत्र साम्ब ने सूर्य साधना से प्राप्त की थी।
- **श्री चक्र** – शक्ति तत्व को प्राप्त कर लेने के लिए यह चक्र अद्वितीय है, जिसको धारण करने के पश्चात् जीवन की सभी विसंगतियां समाप्त होने लगती हैं।
- **कामदेव यंत्र** – जिसे प्राप्त कर आपका व्यक्तित्व आकर्षक व सम्मोहक हो जाएगा, कि आप स्वयं भी आश्चर्यचकित रह जाएंगे।
- **सर्वकार्य सिद्धि गुटिका** – जिसके प्रभाव से आपके वांछित कार्य सम्पन्न होने लगते हैं तथा मार्ग में आ रही बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।
- **बगलामुखी गुटिका** – जिसके प्रभाव से शत्रु पक्ष निस्तेज हो जाता है और जीवन पर यदि कोई संकट आ गया हो, तो वह टल जाता है।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त गुटिकाओं/यंत्र में से कोई भी एक आपको प्राप्त हो पाएगा। अपनी मनोनुकूल सामग्री का नाम पृष्ठ 52 पर दिए वार्षिक सदस्यता हेतु पोस्टकार्ड पर लिख दें (तथा 'आरोग्य माला' काट दें)। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित रूप से भेज दी जाएगी तथा वी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

किसी गुरुवार को प्रातः गुरुदेव का ध्यान करते हुए गुटिका/यंत्र को धूप, दीप दिखाकर धारण कर लें। नित्य गुरु स्मरण करते रहें तथा २ माह पश्चात् गुटिका गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

वार्षिक सदस्यता शुल्क -
195/- डाक खर्च अतिरिक्त

सम्पर्क
मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन :- 0291 - 432209, टेली फैक्स : 0291 : 432010

शिष्य धर्म

सिद्धाश्रम प्रणेता पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी हमारे प्रिय सद्गुरुदेव डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली निश्चय ही सिद्धाश्रम में निवास कर अपने दिव्य नेत्रों से हम सबको देख रहे हैं। हमारी प्रत्येक क्रिया उनको समर्पित है, हम शिष्यों का जीवन समर्पण के लिए ही तो बना है। अब हमारे कर्त्तव्य का समय है, हम शिष्य-शिष्याओं को गुरुदेव ने बड़ी जिम्मेदारी दे दी है, सब कार्य अबाध गति से चलते रहें, इसलिए निरन्तर कार्यशक्ति की आवश्यकता है। हमारे पांव कभी भी डगमगाएं नहीं, यह समय की मांग है।

हम नित्य पूजन करें और प्रत्येक शिष्य साधक के घर में प्राण प्रतिष्ठित गुरु चित्र स्थापित होना ही चाहिए। निम्न बातें विशेष आवश्यक हैं –

- आपके पूजा स्थान में पूज्य गुरुदेव का संन्यासी चित्र एवं गृहस्थ चित्र दोनों होने आवश्यक हैं।
- गृहस्थ स्वरूप गुरु चित्र पर कुंकुम का तिलक लगाएं और अक्षत अर्पण करें।
- संन्यासी गुरु चित्र पर केशर की बिन्दी लगाएं।
- यदि सम्भव हो तो नित्य ताजे पुष्पों की माला गुरु चित्र पर चढ़ाएं।
- नित्य प्रति चार माला गुरु मंत्र और गुरु आरती करनी ही चाहिए, इसमें किसी प्रकार की भूल न करें।
- प्रत्येक शिष्य को हर मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को आज, 'गुरु समर्पण एवं संकल्प दिवस' के रूप में मनाना है, इस दिन गुरु सेवा में एक नए कार्य का संकल्प अवश्य लें।

विशेष –

इस संक्रमण काल में कई स्वार्थी तत्व पूज्य सद्गुरुदेव के नाम का लाभ उठाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हैं। कई चैतन्य शिष्यों ने सूचना दी है, कि कई स्थानों पर कुछ स्वार्थी तत्वों ने गुरु शक्ति पीठ स्थापित कर दी हैं और यह भ्रामक प्रचार कर रहे हैं, कि सद्गुरुदेव सिद्धाश्रम से आकर इस पीठ पर विराजमान हो गए हैं।

ऐसे स्वार्थी तत्वों के लिए मेरा यही कहना है, कि जब गुरुदेव के पास हम लाखों लाखों शिष्यों के हृदय कमल खुले हैं, तो वे किसी की पीठ पर क्यों विराजमान होंगे। ऐसे स्वार्थी तत्वों का विरोध करना और उन्हें उखाड़ फेंकना आपका कर्त्तव्य है।

गुरुदेव का दिव्य संदेश अधिकृत रूप से अब हमें माताश्री भगवती देवी एवं गुरु त्रिमूर्ति मन्दकिशोर जी, कैलाशचन्द्र जी एवं अरविन्द जी एवं मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के माध्यम से निरन्तर प्राप्त होता रहेगा। वे ही अब गुरु सूत्र हैं, गुरु वाक्य हैं।

– डॉ. आर. सी. शास्त्री

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जब मेरी दरिद्रता दूर हुई

कुछ प्रत्यक्ष अनुभव

श्री अविनाश रंजन डे पूज्यपाद गुरुदेव के पुराने शिष्य एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा में उच्च पदस्थ अधिकारी हैं। लगभग 12 वर्ष पूर्व जब वे अध्ययनरत थे, तब उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी, कि वे अपने उस अध्ययन को जारी रख सकें तथा प्रशासनिक सेवाओं के लिये प्रयासरत हों, जबकि उनकी हार्दिक इच्छा थी, कि वे अपनी योग्यता का सही उपयोग करें। किसी छोटी-मोटी नौकरी में फंस कर अपना जीवन व्यर्थ नहीं गवाना चाहते थे। वे पूज्यपाद गुरुदेव जी से दीक्षा भी ले चुके थे। किन्तु वे गुरुदेव से केवल आध्यात्मिक विषय तक ही वार्तालाप सीमित रखते थे। एक बार कई दिन बीत गये और वे उनके समक्ष इन्हीं सब कठिनाइयों के कारण उपस्थित न हो सके। पूज्यपाद गुरुदेव से भला क्या बात छुपी रह सकती है, लेकिन उन्होंने भी कभी इस विषय पर अपने शिष्य से कुछ नहीं कहा। लगभग दो माह बाद जब श्री अविनाश जी अपने गृह नगर सिलीगुड़ी से पूज्यपाद गुरुदेव के पास आये, तब गुरुदेव ने स्वतः उनसे पूछा, कि "आजकल आप कहां कार्यरत हैं, क्या अवकाश न मिलने के कारण इतने दिन बाद आ रहे हैं?"

यह सुनना था, कि अविनाश जी के धैर्य का बांध टूट गया और वे रोने लग गये। पूज्यपाद गुरुदेव ने उन्हें सांत्वना दी और कहा, कि तुम्हारी मनः स्थिति तो मैं पिछले कई दिनों से जान रहा था, लेकिन उचित अवसर की प्रतीक्षा में था। यह कहकर उन्होंने अपने पास से उन्हें 'अष्ट लक्ष्मी यंत्र' दिया और इससे सम्बन्धित प्रयोग स्पष्ट किया। श्री अविनाश रंजन जी विज्ञान के छात्र होने के साथ-साथ अत्यन्त श्रद्धालु और विनम्र व्यक्तित्व के धनी हैं एवं उन्होंने उस अष्ट लक्ष्मी यंत्र को श्रद्धापूर्वक प्राप्त कर, पूज्यपाद गुरुदेव की बताई विधि से मंत्र जप आरम्भ कर दिया।

एक सप्ताह बीतते-बीतते उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह आया, कि उन्हें एक प्राईवेट नौकरी मिल गई और जो अर्थाभाव उनके समक्ष मुंह फैलाए खड़ा था, वह स्थिति समाप्त हो गई। अब वे अपना अध्ययन कुछ सहज होकर करने की स्थिति में थे और उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा के साथ-साथ प्रशासनिक सेवा की तैयारी भी जारी रखी, जिसका उन्हें सुखद परिणाम मिला। वे अगली परीक्षा में न केवल सफल हुये, वरन अपना वांछित पद भी प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। श्री रंजन विनम्रता पूर्वक इसका समस्त श्रेय पूज्यपाद गुरुदेव प्रदत्त अष्ट लक्ष्मी यंत्र एवं उनके द्वारा बताये गये गोपनीय मंत्र को देते हैं। आज उनके जीवन में धन-धान्य, श्री, यश, पत्नी, संतान, वाहन, भूमि सभी सुख सहज ही प्राप्त हैं और यही नहीं, वे उच्च पद पर आसीन होते हुए भी जिस प्रकार से सदैव तनाव मुक्त व किसी भी वाद-विवाद से बचे रहे, उसका श्रेय भी वे अष्ट लक्ष्मी यंत्र और साधना को देते हैं। उनका मानना है, कि अष्ट लक्ष्मी अपने त्रिगुणित रूप में उनके जीवन में समा गई है, जिसके कारण वे एक अत्यन्त लघु स्थिति से इतनी उच्चता तक पहुंच सके हैं।

सच ही तो है, कि दरिद्रता केवल धन की दरिद्रता नहीं अपितु यह भी दरिद्रता ही है, जब व्यक्ति अपनी क्षमता और अपने प्रयास भर परिश्रम करके उचित योग्यता होने पर भी पारितोष नहीं प्राप्त कर पाता - यही श्री रंजन के सारे जीवन का निचोड़ है। क्योंकि मानसिक असन्तुष्टि से जो दरिद्रता मन में उपजती है वह दरिद्रता आर्थिक अभाव की अपेक्षा अधिक भयावह और जीवन

को खोखला व रसहीन बना देने वाली होती है। उनके अनुभव के प्रकाश में तो यही कहा जा सकता है, कि अष्ट लक्ष्मी साधना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है।

श्री रमेश पाण्डे जीवन बीमा निगम के उच्चपद पर आसीन व्यक्तित्व हैं, सभी प्रकार से भरापूरा घर और जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं, साथ ही उनकी रुचि निरंतर साधनाओं के प्रति रही हैं तथा वे पूज्यपाद गुरुदेव के श्री चरणों में अनुरक्त रहने वाले शिष्य हैं। जीवन का एक बड़ा भाग परिश्रम में व्यतीत करने के बाद, जब वह उच्चपद पर आसीन होकर सभी प्रकार की बाधाओं से विमुक्त हुये, तब उनके मन में एक ललक जगी, कि अब मेरा स्वयं का मकान हो और उन्होंने इसके लिये प्रयास भी किये, लेकिन कभी कोई भूमि अत्यधिक मंहगी मिलती, तो कभी ऐसे क्षेत्र में मिलती जहां वे लेना नहीं चाहते थे। एक बार उन्होंने एक भूमि खरीद ही ली, लेकिन उसमें नींव खुदवाते समय इतने अधिक सांप निकलने आरम्भ हुये, कि उन्होंने घबरा कर उसे आधे से भी कम दामों में बेच दिया।

एक अन्य भूमि में नींव खुदवाते समय नीचे जाने पर एक मानव कंकाल मिलने से उन्हें उसका विचार ही त्यागना पड़ा। लगातार प्रॉपर्टी डीलर्स के दफ्तरों के चक्कर लगाते–लगाते उनका मन खिन्न हो गया था, कभी कोई भूमि विवाद ग्रस्त मिलती, तो कभी किसी के सही कागज नहीं मिलते या एक बार तो उनकी नींव पड़ने की स्थिति आ ही गई, कि तब तक वह भूमि एक अध्यादेश के द्वारा अधिग्रहीत कर ली गई। श्री पाण्डे खिन्न हो कर यह मान बैठे थे, कि शायद मुझे जीवन में यह सुख प्राप्त नहीं है या एक प्रकार से कहें, तो उन्हें धरा लक्ष्मी अथवा भवन लक्ष्मी जीवन में उपलब्ध नहीं थी। सभी प्रकार से सम्पन्न और सुरुचि पूर्ण ढंग से रहने के आकांक्षी श्री पाण्डे एक किराये के फ्लैट में दब कर जिस प्रकार जीवन के दिन काट रहे थे, उससे उन्हें ज्यादा अच्छा लगने लगा था, कि वह देर रात तक अपने कार्यालय में ही पड़े रहें।

श्री पाण्डे जी की पत्नी भी पूज्यपाद गुरुदेव की शिष्या हैं और धर्म कार्यों में अपने पति से भी अधिक रुचि रखती हैं। उन्होंने ही आग्रह करके अपने पति को इलाहाबाद में हो रहे साधना शिविर में भेजा और वहां पर उन्होंने पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट कर उन्हें अपनी समस्या बताई। पूज्यपाद गुरुदेव ने उन्हें अपनी कुण्डली के साथ–साथ अपनी पत्नी की जन्म कुण्डली भी लाने को कहा और गम्भीर अध्ययन करके बताया, कि वास्तव में तुम्हारे भाग्य में भू–लक्ष्मी का आगमन नहीं है। जब भू–लक्ष्मी का ही आगमन नहीं है, तो भवन लक्ष्मी कहां से प्राप्त हो? इसी से उन्हें तुम्हारे प्रत्येक प्रयास में बाधा पहुंचती है और उनके स्वयं के प्रयासों से यह समस्या सुलझने वाली भी नहीं है। श्री पाण्डे जी का चेहरा उतर गया, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव की बात मिथ्या हो ही नहीं सकती, लेकिन उनकी क्लांत मुख मुद्रा देखकर पूज्यपाद गुरुदेव का मन भीग गया।

पूज्यपाद गुरुदेव ने उन्हें कुछ दिन बाद जोधपुर में उपस्थित होने की आज्ञा दी। लगभग 15 दिन बाद जब श्री पाण्डे जी टेलीफोन द्वारा, पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जोधपुर उपस्थित हुये, तो पूज्यपाद गुरुदेव ने उन्हें

पांच **भूगर्भ श्री यंत्र** प्रदान किये और तभी यह रहस्य उद्घाटित किया, कि इस बीच के समय में, उनके आदेश से योग्य पंडितों ने इन्हें विधिवत् अनुष्ठान द्वारा मंत्र सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित किया है। वे इन्हें ले जायें और जिस भूमि पर मकान बनवाना चाहते हैं, उसके चारों कोनों पर तथा बीचों-बीच में गाड़ दें। ऐसा करने के उपरान्त वे निश्चिंतता पूर्वक भवन निर्माण का कार्य आरम्भ करें, उन्होंने ऐसा ही किया और आज उनका मकान तो बन ही गया है, साथ ही उन श्री यंत्रों की स्थापना से निरंतर उनके घर में एक ऐसी दिव्यता, आभा और प्रसन्नता मंडराती रहती है, कि उनके परिचित उनके घर में आने के बाद शीघ्र ही जाने की इच्छा नहीं करते।

मकान बनने के उपरान्त श्री पाण्डे जी को इसका एक प्रत्यक्ष फल देखने को और मिला, जब उनके घर के समीप से एक बाई पास रोड निकालने की योजना अपने अंतिम चरण में पहुंच गई तथा सम्बन्धित अधिकारी नक्शे में उनके घर का भी कुछ भाग आ जाने के कारण गिराने के लिये मजदूरों के साथ आ पहुंचे, लेकिन जब उसने श्री पाण्डे के विरोध करने पर पुनः नापजोख की, तो पाया, कि मार्ग घर से पांच फीट की दूरी पर निकलना चाहिये। उसने आश्चर्यचकित होकर अपने उच्च अधिकारियों को बुलवाया, लेकिन वे भी इसी निष्कर्ष पर पहुचे और इसका कोई कारण उनकी समझ में नहीं आया, अन्त में सड़क उनके घर से पांच फीट की दूरी पर ही निकली। श्री पाण्डे इसे साधारण घटना नहीं मानते, अपितु पूज्यपाद के आशीर्वाद का जीता जागता उदाहरण ही मानते हैं, और उनके द्वारा दिये गये **भू गर्भ श्री यंत्र** का चमत्कार मानते हैं।

श्री आलोकचन्द्र सी. जोशी इंदौर के एक सफल और प्रतिष्ठित अधिवक्ता हैं, जिनकी विद्वता की चर्चा पूरे क्षेत्र में है। लेकिन आज से बीस वर्ष पूर्व उनकी यह स्थिति नहीं थी। तब उन्हें प्रैक्टिस करते हुये आठ वर्ष हो चुके थे, योग्यता और उच्चशिक्षा के बाद भी उनके पास कोई मुव्वकिल नहीं आता था और उन्हें समझ में नहीं आता था, कि वे इसके लिये क्या करें। किसी प्रकार से खींच-तान कर वे जीवन यापन कर रहे थे। ऐसा नहीं, कि उनकी योग्यता अथवा चातुर्य की चर्चा न होती हो, लेकिन पता नहीं क्या अभिशाप उनके ऊपर आ गया था, कि उनके पास कोई भी व्यक्ति आने से कतराता था और भूले-भटके जो खुद उनके सम्पर्क में आ गये थे, वे भी कतरा कर निकलने के चक्कर में रहते थे। एक गरिमामय विद्वान पर होने के कारण तथा स्वभाव से शालीन होने के कारण वे अपना विज्ञापन तो कर नहीं सकते थे। खेद में और अपमानजनक स्थितियों की कड़वाहट में घुलते ही रहते थे, जिससे धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य भी गिरने लग गया था।

उनकी पत्नी एक गुजराती नारी होने के कारण सहज रूप से ही धर्म-कर्म में आस्था रखने वाली थी और उन्होंने तभी अपने किसी परिचित परिवार में **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका पढ़ी थी, जिससे उनको यह ज्ञात था, कि कोई ऐसा भी प्रयोग होता है, जिसके माध्यम से ऐसी दरिद्रता की स्थिति में लक्ष्मी का किसी विशेष रूप से आवाहन करके और उसी रूप में निरन्तर साधना करने से जीवन में सही स्थितियों का निर्माण हो सकता है। उसने अपने उन परिचित से पत्र व्यवहार करके पत्रिका में पढ़ी और आधी अधूरी याद रह गयी जानकारी को ज्ञात करना चाहा और उसे ज्ञात हुआ कि वह विधि है **ज्येष्ठा लक्ष्मी प्रयोग**। जब जीवन में चारों ओर से निराश हो जाय और अपने सभी प्रयोगों के बाद उन्नति का कोई मार्ग नहीं दिख रहा हो, **तब एक ही उपाय** शेष रह जाता है और वह होता है **'ज्येष्ठा लक्ष्मी प्रयोग'**। जैसे डॉ० किसी बीमारी में किसी दवा की शक्ति निर्धारित करके ही उचित निदान देता है, ठीक साधना में ऐसा ही व्यवहृति होती है। तब उन्हीं भगवती महालक्ष्मी की किसी एक विशेष साधना, किसी एक विशेष स्वरूप का स्मरण लाभदायक होता है। अपने नाम के ही अनुरूप ज्येष्ठा लक्ष्मी एक ऐसी ही प्रबल भाग्योदय कारक साधना है, जिसमें लक्ष्मी अपने विशेष वरदायक स्वरूप के साथ साधक के जीवन को आपूरित करती ही है।

श्री जोशी अपने व्यवसाय के कारण वर्षों से अपने साथ चली आ रही विपरीत स्थितियों के कारण इस प्रकार से टूट चुके थे, कि उनसे तो कहने की श्रीमती जोशी की हिम्मत नहीं थी, लेकिन इस धर्म परायण महिला ने चुपचाप जोधपुर से सम्पर्क कर **ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र** तथा **पद्म निर्मित श्री यंत्र** मंगाकर साधना प्रारम्भ कर दी तथा साधना के पूर्ण होने पर उस यंत्र को अपने पति के कार्यालय में एक स्थान पर विधि पूर्वक लेकिन छिपाकर स्थापित कर दिया।

और आज . . . आज तो श्री जोशी भी साधना और सिद्धि की बात मानने को बाध्य हैं, जो श्री यंत्र कभी उनके कार्यालय में छुपा कर रखा गया था, उसे उन्होंने अपने कार्यालय में सम्मान पूर्वक स्थापित कर रखा है और उसके ही बगल में स्थापित है पूज्यपाद गुरुदेव का चित्र। उनके दिन का प्रारम्भ और समापन यंत्र व चित्र के दर्शन से ही होता है तथा अब तो वह पूज्यपाद गुरुदेव के प्रिय शिष्यों में से एक हैं।

इस मास दिल्ली में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन **शाम 6 से 8 बजे** के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हों, तो यहां से प्राप्त कर लें)।

दिनांक 02.10.98 पूर्णत्व प्राप्ति हनुमान साधना

हनुमान साधना वर्तमान समय में पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने वाली समस्याओं से मुक्ति दिलाने वाली तथा बल बुद्धि, तेजस्विता प्रदान करने में सहायक है।

दिनांक 03.10.98 विघ्न विनायक गणपति साधना

गणपति गणों के जीवन में ऋद्धि, सिद्धि, अकाल मृत्यु, भय बाधा, धन-धान्य, यश मान, कीर्ति, प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सहायक उत्तम प्रयोग है।

दिनांक 04.10.98 चैतन्य अष्ट महालक्ष्मी साधना

महालक्ष्मी से सम्बन्धित यह प्रयोग गृहस्थ जीवन के लिए कल्पवृक्ष के समान है, जो थोड़े प्रयास से ही जीवन में वैभव भर देता है। लक्ष्मी अहर्निश चतुर्दिक दिशाओं से आती हुई दिखाई देती है और दुःख दारिद्र्य की छाया भी आप पर नहीं पड़ती है।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे -

1. आप अपने किसी एक मित्र या स्वजन से पत्रिका की वार्षिक सदस्यता हेतु 195/- वार्षिक शुल्क तथा 30/- डाक व्यय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/- इस प्रकार कुल शुल्क (225/- + 180/- = 405/-) जमा कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको निःशुल्क साधना सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क 'सिद्धेश्वरी गुटिका' प्रदान किया जायेगा, जो कि आपके जीवन में सहायक सिद्ध होगा एवं उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं के लिए एक वर्ष की सदस्यता और 12 दुर्लभ अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको उपहार स्वरूप 'सिद्धेश्वरी गुटिका' प्राप्त नहीं हो पायेगा।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 375/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अविरल यात्रा जारी है

जीवन्त व्यक्तित्व हर समय आत्म स्वरूप ही होते हैं, वे चराचर जगत में हर रूप में विद्यमान हैं — यह सिद्ध किया है इस अविरल यात्रा है।

शिष्य कभी भी अपने धर्म से विचलित नहीं होगा, यह सिद्ध कर दिया पूज्य गुरुदेव के भौतिक देह त्याग के बाद शिष्यों ने — पूना शिविर में, जहां शिष्यों को सान्त्वना देने पहुंचे थे **श्री कैलाशचन्द्र गुरुजी**। यह समर्पण प्रयास था **वसन्त पाटिल, वर्षा पाटिल, भगवत बालासाहेब पवार, सुरेन्द्र कुवले, हरीश्चन्द्र कदम** एवं अन्य शिष्यों का। शिविर का कार्यक्रम पहले पत्रिका में प्रकाशित हो गया था और सब शिष्यों ने निश्चय पूर्वक कहा, कि जो कार्यक्रम जिस भव्यता से सम्पन्न होना है, वह उसी भव्यता से सम्पन्न होगा और सभी शिष्यों ने स्वागत किया कैलाशचन्द्र जी का। सभी ने संकल्प लिया, कि सद्गुरुदेव द्वारा बताए गए मार्ग को, ज्ञान को, ज्योति को बराबर प्रकाशवान रखेंगे। ६ अगस्त को पूना के स्थानीय साधकों के अलावा अन्य दूरस्थ स्थानों — हैदराबाद, शोलापुर, सतारा, औरंगाबाद से आए शिष्यों द्वारा रमारमण मंगल भवन में शिविर का आयोजन प्रारम्भ हुआ। शिष्यों की समस्या के अनुरूप दुर्लभ दीक्षाएं प्रदान की गईं और सबसे महत्वपूर्ण **'विघ्न विनायक गणपति प्रयोग'** सम्पन्न हुआ। दीक्षा और साधनाएं गंगा और यमुना की पवित्र धाराओं के समान है, जो हमारे जीवन को सतत् पावन करती रहती हैं। शिष्यों ने अस्थि कलश एवं भस्मी दर्शन के सौभाग्य के लिए निवेदन किया और कहा, कि ६ दिसम्बर को पुनः शिविर आयोजन हो और ७ दिसम्बर को द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक त्र्यम्बकेश्वर महादेव क्षेत्र की गोदावरी नदी की पावन जल धारा में नासिक में भावनात्मक कार्यक्रम द्वारा भस्मी विसर्जन अवश्य किया जाए।

सद्गुरु तो सृजन शक्ति है, उनका तो विसर्जन हो ही नहीं सकता है। जिन्होंने जीवन भर साधना, तपस्या का सृजन किया, जिन्होंने जीवन भर शिष्यों में प्रेम की गंगा प्रवाहित की उनके लिए विसर्जन शब्द बन ही नहीं सकता है। . . . परन्तु शिष्य भी आखिर क्या करे, सद्गुरुदेव तो ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो गए और उनकी पंचभूतात्मक देह की अस्थियां एवं भस्मी को भी इस पूरे भारतवर्ष में आप्लावित करना आवश्यक है और यही पूज्यश्री की इच्छा भी थी। माताश्री की आज्ञानुसार सर्वप्रथम पुण्यतीर्थ हरिद्वार में यह कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। २ जुलाई को **श्री नन्दकिशोर जी एवं अरविन्द जी** अस्थि कलश लेकर हरिद्वार पहुंचे और मुल्तान भवन में जहां सन् ९२ में पूज्य गुरुदेव ने शिवरात्रि पूजन सम्पन्न किया था, उस स्थान पर यह दिव्य कलश रखा। दोपहर से लगाकर पूरी रात भजन कीर्तन एवं गुरु मंत्र का कार्यक्रम चलता रहा, और इसके पश्चात् ३ जुलाई को प्रातः प्रारम्भ हुई एक विशेष महायात्रा जो मुल्तान भवन से प्रारम्भ होकर पूर्ण हुई दिव्य क्षेत्र **हर की पौड़ी** पर। यह वह स्थान है जहां भगवान शिव ने तपस्या की थी, जहां गंगा का मन्दिर है, जहां की

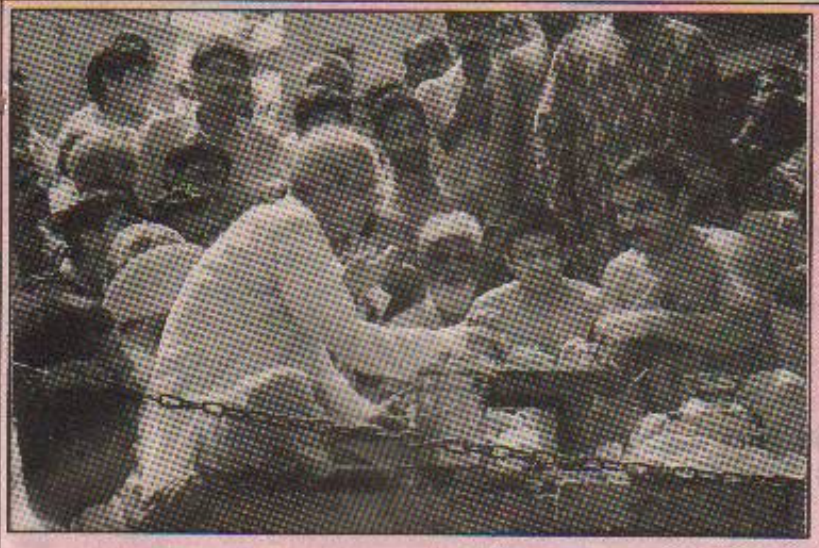

धारा दिव्यता से परिपूर्ण है। पूरी यात्रा में शिष्य अश्रुपूरित कण्ठों से जय-जयकार कर रहे थे, पूज्य गुरुदेव का। . . .और नन्दकिशोर जी तथा अरविन्द जी के हाथों में थे उस दिव्य देह के अंश।

हर की पौड़ी पर सभी शिष्यों ने माल्यार्पण किया और हरिद्वार के मेयर श्री अरोड़ा जी एवं गंगा महासभा के अध्यक्ष ने उन्हें माल्यार्पण के साथ अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की, प्रदेश शासन का प्रतिनिधित्व किया क्षेत्र के ए.डी.एम. ने। फिर प्रारम्भ हुआ **पण्डित रमाशंकर श्रोत्रिय** के निर्देशन में मंत्रोच्चार के साथ अस्थि विसर्जन का कार्यक्रम। यह समय शब्दों में बांधा नहीं जा सकता, यहां प्रत्येक शिष्य रुदन कर रहा था और जय-जयकार भी कर रहा था। सभी शिष्य गंगा नदी में धारा के मध्य आ गए थे और आखिरकार श्री नन्दकिशोर जी एवं श्री अरविन्द जी को **ब्रह्मकुण्ड** की धारा में समर्पण करना ही पड़ा, अस्थि अवशेष एवं भस्मी।

हे गुरुदेव! आपकी आज्ञानुसार ही हम यह कार्य कर रहे हैं, आपका वास्तविक स्थान तो हमारा हृदय है और आप सदैव उसी स्थान में विराजमान रहें।

इसके पश्चात् सभी शिष्यों ने हर की पौड़ी पर स्नान कर **कुशावर्त घाट** पर पहुंचे। वहां पिण्ड दान का कार्यक्रम सम्पन्न करना था, नन्दकिशोर जी एवं अरविन्द जी ने अपने सभी पूर्वजों एवं पूज्य गुरुदेव की **सपिण्डीकरण क्रिया** की और **विष्णु पूजन** सम्पन्न किया। तदनन्तर सभी पिण्ड गंगा की पवित्र धारा में समर्पित कर दिए।

जिस प्रकार से हरिद्वार में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ है, उसी रूप में अन्य स्थानों पर भी यह कार्यक्रम भव्य रूप से सम्पन्न होगा। यह शिष्यों की इच्छा है, भावना है।

दिनांक **६ सितम्बर को वलसाड, गुजरात** में एक दिवसीय कार्यक्रम शिविर जो कि **पितृ दोष निवारण शान्ति एवं तंत्र बाधा निवारण शिविर** था, गुरुदेव श्री कैलाशचन्द्र जी के निर्देशन में अमावस्या के दिन सम्पन्न हुआ। वास्तव में गुजरात की पवित्र धरती जो अनेक तीर्थों से आपूरित है, यहीं सही रूप से धर्मपरायणता का और आस्था का वास है। पूज्य सद्गुरुदेव ने यहां कई भव्य शिविरों का आयोजन किया और इस शिविर में शिष्यों का अगाध उत्साह देखने को आया। सचमुच सद्गुरुदेव हमारे मध्य ही विद्यमान हैं, वे कभी भी हमसे अलग नहीं हो सकते। जो शिष्य एक बार सद्गुरुदेव के प्राणों से जुड़ जाता है, वह कभी विलग हो ही नहीं सकता, शिष्यों का संकल्प और चेतना निश्चय ही प्रशंसा योग्य है और इसके लिए **रमेश प्रजापति, अनिल पारीख, सुमन प्रजापति, बच्चू भाई** ने विशेष प्रयास किया है और विशेष रूप से **रमेश पाटिल** तो एक ऐसा सच्चा सेवक है, जिसे सद्गुरु रूपी राम का हनुमान कह सकते हैं।

– वासुदेव पाण्डे एवं शैलेश कुमार

साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

11 अक्टूबर 98 — **सूरत, गुजरात**

पद्मावती सिद्धि शान्ति साधना शिविर

शिविर स्थल – **लेवा पाटीदार समाज की वाडी, अशक्ता हास्पिटल के सामने।**

• किरीट भाई पटेल, सूरत 0261–424766 • दशरथ प्रजापति, सूरत 483227, • नागजी भाई सूरत 432199 • रमेश पाटिल, नवसारी 02637–53188 • जतिन दलाल

18–19 अक्टूबर 98 — **जोधपुर**

दीपावली महोत्सव

शिविर स्थल – **गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर – 342 001. फोन : 0291–432209**

31 अक्टूबर – 1 नवम्बर 98 — **मनाली**

महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल – **(ग्राम धमसू) नगर एवं मनाली के मध्य**

• श्री एस. आर. ठाकुर, मनाली, 01902–52201, • श्री एम. आर. वशिष्ठ, पण्डोह, 01905–82221,

6–7 नवम्बर 98 — **भोपाल**

संन्यास दिवस समर्पण समारोह

शिविर स्थल – **दशहरा मैदान, टी.टी. नगर**

• श्री अरविन्द सिंह, • डॉ. साधना सिंह

*विशेष – शिष्यों की भावना के अनुरूप **'भोपाल संन्यास दिवस समर्पण समारोह'** में अरिष्ट एवं भस्मी कलश दर्शनार्थ स्थापित रहेगा।* फोन : 0755–583637,554925

22 नवम्बर 98 — **चण्डीगढ़**

दस महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल – **सनातन धर्म मन्दिर, धर्मशाला, सेक्टर 37–सी.**

• आश्रम कार्यालय, (डी. एस. चौधरी), चण्डीगढ़ 0172–600488, • श्री आर. डी. जोशी, चण्डीगढ़, 0172–562826,571914, • सुश्री भारती जोशी 0172–690377 • श्री अरुण वशिष्ठ, चण्डीगढ़, 0172–700756, • श्री विजय मल्होत्रा, • श्री टी. एल. गोयल, • श्री विनोद कपिला, रोपड़, 01881–22022, • श्री रवि कुमार, समराला, 06128–62583, • श्री रोजन जेम्स, लुधियाना, 0161–065599 • श्री कृष्णा, अम्बाला 0171–21667

12–13 दिसम्बर 98 — **जादुगोडा**

स्वर्णावती महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल – **टाटानगर से 25 किलोमीटर दूर जादुगोडा में**

• श्री आर. एस. राय, जादूगोडा 0657–730432, • श्री संजय वर्मा • श्री दीपक सिन्हा 0657–730734, • श्री एस. एल. ओझा, रांची, 0651–541938 • श्री देबाशीश महापात्र, • श्री गोपाल पात्रो

दीक्षा समारोह, (बिहार प्रान्त में)

15 दिसम्बर 98 – जमशेदपुर, 17 दिसम्बर 98 – रांची,
19 दिसम्बर 98 – डालटनगंज, 20 दिसम्बर 98 – धनबाद

आयोजक • श्री एस. एल. ओझा, रांची, 0651–541938

14–15 जनवरी 99 — **इलाहाबाद**

भाग्योदय सिद्धि पूर्णत्व साधना शिविर

शिविर स्थल – **संगम मेला स्थल, काली सड़क, बांध के नीचे, उत्तरी पट्टी।**

• श्री एस.के. मिश्रा, इलाहाबाद 0532–501551 • डॉ. प्रमोद कुमार यादव, इलाहाबाद 0532–632229, • श्री राजकुमार वैश्य, इलाहाबाद 0532–645145 • श्री शचीकांत अग्रवाल, इलाहाबाद 0532–651417 • श्री ओम प्रकाश श्रीमाली, इलाहाबाद • श्री हेमसिंह, इलाहाबाद 0532–632160 • श्री कुंदन सिंह, इलाहाबाद • श्री ज्ञानचन्द जायसवाल, इलाहाबाद • श्री ए.के. शर्मा, इलाहाबाद।

12 अक्टूबर 98 को चाणोद (भरुच)
जो कि सूरत से 80 किलोमीटर दूर 'ओर गंगा', 'गुप्त गंगा' व 'नर्मदा' के संगम पर भावात्मक 'भस्मि विसर्जन कार्यक्रम'

जानकारी

आपकी यह प्रिय पत्रिका **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** दो महीने अग्रिम गतिशील होती है, अर्थात् यह अंक अक्टूबर का है, तो इसमें दिसम्बर मास की साधनाएं व प्रयोग दिये जाते हैं।

ऐसा क्यों? इसलिए, कि साधनाओं के लिए यंत्र, उपकरण आदि की आवश्यकता होती है, जो मंत्र सिद्ध हों, प्राणश्चेतना युक्त हों। आपकी सुविधा के लिए पोस्टकार्ड पत्रिका में संलग्न होता है, जिस पर कोई डाक खर्च नहीं देना होता।

पर आप सोचते रहते हैं और विलम्ब होता रहता है, फिर हड़बड़ी में आप ऐन टाइम पर पोस्टकार्ड भेजते हैं, जो समय पर नहीं पहुंच पाता और आप उस साधना से वंचित रह जाते हैं।

क्योंकि आपका पोस्टकार्ड हम तक पहुंचने में 15–20 दिन का समय लग जाता है, फिर सुरक्षित पैकिंग भेजने में 7–8 दिन का समय लगता है तथा आप तक वी.पी.पी. पहुंचने में 20–25 दिन लग जाते हैं, इस सारी प्रक्रिया में 50–55 दिन, अर्थात् दो महीने लग जाते हैं, फलस्वरूप विलम्ब से पोस्टकार्ड भेजने से वह साधना मुहूर्त निकल जाता है और उस साधना से आप वंचित रह जाते हैं।

इसलिए यदि आपको केन्द्र से ही मंत्र सिद्ध सामग्री मंगानी है, तो बिना हीला-हवाला किये, तुरन्त पोस्टकार्ड भर कर भेज देना चाहिए, जिससे कि समय पर सामग्री प्राप्त हो सके।

सुविधा हेतु जोधपुर टेलीफोन नं. – 0291–432209 अथवा टेलीफैक्स नं. 0291–432010 से भी सामग्री का आदेश दे सकते हैं।

('मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नवीनतम अंक में प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत)

याद रहे – आप सामग्री का होना तो सम्बन्धित सामग्री साथ 'मंत्र शक्ति ग्रन्थ' के साथ ले ही लेंगे।

यदि आप 60 रु. से कम की सामग्री मंगाते हैं तो आप सामग्री मूल्य तथा 20 रु. वी.पी.पी. शुल्क जोड़ कर धनराशि अग्रिम भेज दें।

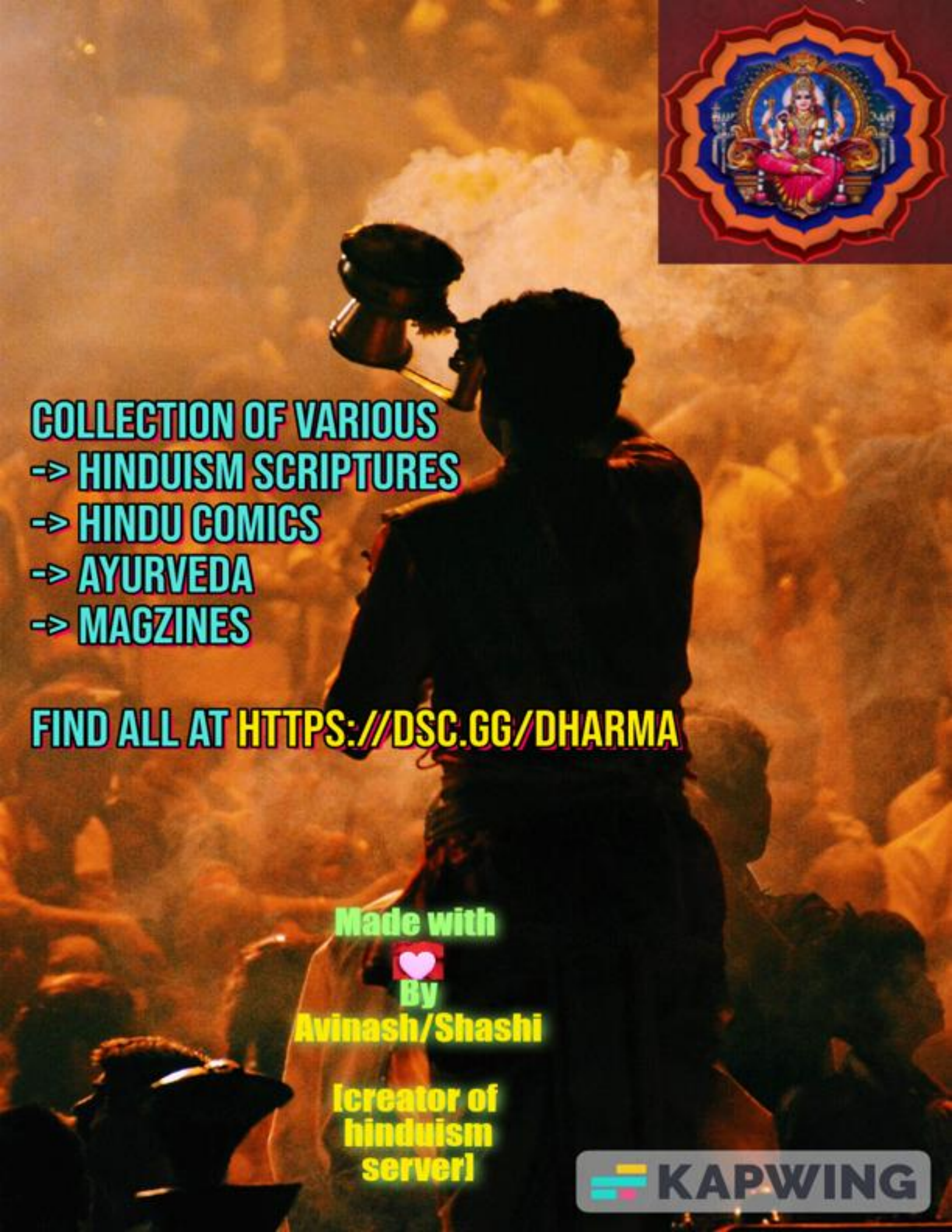
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING